اللَّهُمَّ رَبَّنَا وَبِحَمْدِكَ، اللهُ اغْفِرْ لِي)). يَتَأَوَّلُ الْقُرْآنَ. [راجع: ٧٩٤]

अल्लाहुम्मग़्फ़िरली (इस दुआ़ को पढ़कर) आप क़ुर्आन के हुक्म पर अ़मल करते थे। (राजेअ़ : 714)

तश्रीह : सूरह **'इज़ा जाअ नस्रूल्लाहि'** में है, **'फ़सब्बिह बिहम्दि रब्बिक वस्तग़्फ़िर्हु'** (अपने रब की पाकी बयान करो और उससे बख़्शिश मांगो); इस हुक्म की रोशनी में आप (ﷺ) सज्दा और रुकूअ़ में ज़िक्र की गई दुआ़ पढ़ा करते थे। जिसका तर्जुमा ये है कि या अल्लाह! मैं तेरी ह़म्द के साथ तेरी पाकी बयान करता हूँ। या अल्लाह! तू मुझको बख़्श दे। इस दुआ़ में तस्बीह़ और तह़्मीद और इस्तिग़्फ़ार तीनों मौजूद हैं, इसलिये रुकूअ़ और सज्दा में इसका पढ़ना अफ़ज़ल है इसके अ़लावा रुकूअ़ में **सुब्हान रब्बियल्अ़ज़ीम** और सज्दा में **सुब्हान रब्बियल्आला** मसनूना दुआ़एँ भी आयाते क़ुर्आनिया ही की ता'मील हैं जैसा कि मुख़्तलिफ़ आयात में हुक्म है। एक रिवायत में है कि सूरह **'इज़ा जाआ नस्रूल्लाह'** के नुज़ूल के बाद आप (ﷺ) हमेशा रुकूअ़ और सज्दों में इस दुआ़ को पढ़ते रहे। या'नी **सुब्हानक अल्लाहुम्म रब्बना व बिहम्दिक अल्लाहुम्मग़्फ़िरली** अ़ल्लामा इमाम शौकानी (रह़.) इसका मतलब यूँ बयान फ़र्माते हैं कि **बितौफ़ीक़ि ली व हिदायतिक व फ़ज़्लिक अ़लय्या सुब्हानक ला बिहौली व क़ुव्वती** या'नी या अल्लाह! मैं सिर्फ़ तेरी तौफ़ीक़ और हिदायत और फ़ज़्ल से तेरी पाकी बयान करता हूँ। अपनी तरफ़ से इस कारे अ़ज़ीम के लिये मुझमें कोई ताक़त नहीं है। कुछ रिवायात में रुकूअ़ और सज्दों में ये दुआ़ पढ़नी भी आँहज़रत (ﷺ) से षाबित है, **'सुब्बूहुन क़ुद्दूसुन रब्बुल मलाइकति वर्रूह'** (अह़मद, मुस्लिम वग़ैरह) या'नी मेरा रुकूअ़ या सज्दा उस ज़ाते वाहिद के लिये है जो तमाम नुक़्सों और शरीकों से पाक है वो मुक़द्दस है वो फ़रिश्तों का और जिब्रईल का भी रब है।

١٤٠ - بَابُ الْمُكْثِ بَيْنَ السَّجْدَتَيْنِ

बाब 140 : दोनों सज्दों के बीच ठहरना

٨١٨ - حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ قَالَ: حَدَّثَنَا حَمَّادٌ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ أَبِي قِلاَبَةَ أَنَّ مَالِكَ بْنَ الْحُوَيْرِثِ قَالَ لأَصْحَابِهِ: أَلاَ أُنَبِّئُكُمْ صَلاَةَ رَسُولِ اللهِ ﷺ - قَالَ وَذَاكَ فِي غَيْرِ حِينِ صَلاَةٍ - فَقَامَ، ثُمَّ رَكَعَ فَكَبَّرَ، ثُمَّ رَفَعَ رَأْسَهُ فَقَامَ هُنَيَّةً، ثُمَّ سَجَدَ، ثُمَّ رَفَعَ رَأْسَهُ هُنَيَّةً -ثُمَّ سَجَدَ ثُمَّ رَفَعَ رَأْسَهُ هُنَيَّةً فَصَلَّى صَلاَةَ عَمْرِو بْنِ سَلِمَةَ شَيْخِنَا هَذَا - قَالَ أَيُّوبُ: كَانَ يَفْعَلُ شَيْئًا لَمْ أَرَهُمْ يَفْعَلُونَهُ، كَانَ يَقْعُدُ فِي الثَّالِثَةِ أَوِ الرَّابِعَةِ. [راجع: ٦٧٧]

(818) हमसे अबुन नोअ़मान मुहम्मद बिन फ़ज़्ल ने बयान किया, कहा कि हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने अय्यूब सुख़्तियानी से बयान किया, उन्होंने अबू क़िलाबा अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ैद से, कि मालिक बिन हुवैरिष़ (रज़ि.) ने अपने साथियों से कहा कि मैं तुम्हें नबी करीम (ﷺ) की नमाज़ क्यों न सिखा दूँ। अबू क़तादा ने कहा ये नमाज़ का वक़्त नहीं था (मगर आप हमें सिखाने के लिये) खड़े हुए। फिर रुकूअ़ किया और तकबीर कही फिर सर उठाया और थोड़ी देर खड़े रहे। फिर सज्दा किया और थोड़ी देर के लिये सज्दे से सर उठाया और फिर सज्दा किया और सज्दे से थोड़ी देर के लिये सर उठाया। उन्होंने हमारे शैख़ ड़मर बिन सलमा नमाज़ में एक ऐसी चीज़ किया करते थे कि दूसरे लोगों को इसी तरह करते मैंने नहीं देखा। आप तीसरी या चौथी रकअ़त पर (सज्दे से फ़ारिग़ होकर खड़े होने से पहले) बैठते थे (या'नी जल्सा-ए-इस्तिराहत करते थे फिर नमाज़ सिखलाने के बाद) (राजेह : 688)

٨١٩ - فَأَتَيْنَا النَّبِيَّ ﷺ فَأَقَمْنَا عِنْدَهُ فَقَالَ

السَّجْدَتَيْنِ حَتَّى يَقُولَ الْقَائِلُ قَدْ نَسِيَ.
[راجع: ٨٠٠]

समझता कि भूल गये हैं और इसी त़रह दोनों सज्दों के दरम्यान इतनी देर तक बैठे रहते कि देखने वाला समझता कि भूल गये हैं। (राजेअ़ : 800)

M-09825696131

तश्रीह : ह़ज़रत मौलाना वह़ीदुज़्ज़माँ मरहूम फ़र्माते हैं कि हमारे इमाम अह़मद बिन हंबल (रह़.) ने इसी पर अ़मल किया है और दोनों सज्दों के बीच में बार-बार '**रब्बिग़्फ़िरली**' कहना मुस्तह़ब जाना है जैसे हुज़ैफ़ा (रज़ि.) की ह़दीष़ में वारिद है कि ह़ाफ़िज़ (रह़.) ने कहा इस हदीष़ से मा'लूम होता है कि जिन लोगों से ष़ाबित ने ये बातचीत की वो दोनों सज्दों के बीच न बैठते होंगे; लेकिन ह़दीष़ पर चलने वाला जब ह़दीष़ सह़ी हो जाए तो किसी के विरोध की परवाह नहीं करता। ह़ज़रत अ़ल्लामा शौकानी (रह़.) फ़र्माते हैं, '**व क़द तरकन्नासु हाज़िहिस्सुन्नत्तष्षाबितत बिल्अह़ादीषिस्सह़ीह़ति मुह़द्दिषुहुम व फ़क़ीहुम व मुज्तहिदुहुम व मुक़ल्लिदुहुम फ़ लैतशिअ़्री मल्लज़ी अवौव अ़लैहि ज़ालिक वल्लाहुल्मुस्तआन**' या'नी सद अफ़सोस कि लोगों ने इस सुन्नत को जो अह़ादीषे सह़ीह़ा से ष़ाबित है, छोड़ रखा है यहाँ तक कि उनके मुह़द्दिष़ और फ़क़ीह और मुज्तहिद और मुक़ल्लिद सब ही इस सुन्नत के छोड़ने वाले नज़र आते हैं मुझे नहीं मा'लूम कि इसके लिये उन लोगों ने कौनसा बहाना तलाश किया है और अल्लाह ही मददगार है।

दोनों सज्दों के बीच ये दुआ भी मसनून है, '**अल्लाहुम्मग़्फ़िरली वर्ह़म्नी वज्बुर्नी वहदिनी वर्ज़ुक्नी।**

बाब 141 : इस बारे में कि नमाज़ी सज्दे में अपने दोनों बाज़ुओं को (जानवर की त़रह) ज़मीन पर न बिछाए और हुमैद ने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने सज्दा किया और दोनों हाथ ज़मीन पर रखे बाज़ू नहीं बिछाए, न उनको पहलू से मिलाया

١٤١- بَابُ لاَ يَفْتَرِشُ ذِرَاعَيْهِ فِي السُّجُودِ

وَقَالَ أَبُو حُمَيْدٍ: سَجَدَ النَّبِيُّ ﷺ وَوَضَعَ يَدَيهِ غَيْرَ مُفْتَرِشٍ وَلاَ قَابِضُهُمَا.

٨٢٢- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: سَمِعْتُ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((اعْتَدِلُوا فِي السُّجُودِ وَلاَ يَبْسُطْ أَحَدُكُمْ ذِرَاعَيْهِ انْبِسَاطَ الْكَلْبِ)). [راجع: ٦٤١]

(822) हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे मुहम्मद बिन जा'फ़र ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने क़तादा से सुना, उन्होंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि सज्दे में ए'तिदाल को मल्हूज़ रखे और अपने बाज़ू कुत्तों की त़रह न फैलाया करो। (राजेअ़ : 691)

तश्रीह : क्योंकि इस त़रह बाज़ू बिछा देना सुस्ती और काहिली की निशानी है। कुत्ते के साथ तश्बीह (तुलना करना) और भी मुज़म्मत की बात है। उसका पूरा लिहाज़ रखना चाहिये। इमाम क़स्तलानी ने कहा कि अगर कोई ऐसा करे तो नमाज़ मकरूहे तंजीही होगी।

बाब 142 : उस शख़्स के बारे में जो शख़्स नमाज़ की ताक़ रकअ़त (पहली और तीसरी) में थोड़ी देर बैठे और उठ जाए

١٤٢- بَابُ مَنِ اسْتَوَى قَاعِدًا فِي وِتْرٍ مِنْ صَلاَتِهِ ثُمَّ نَهَضَ

٨٢٣- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الصَّبَّاحِ قَالَ: أَخْبَرَنَا هُشَيْمٌ أَخْبَرَنَا خَالِدٌ الْحَذَّاءُ عَنْ أَبِي قِلاَبَةَ قَالَ: أَخْبَرَنَا مَالِكُ بْنُ الْحُوَيْرِثِ

(823) हमसे मुह़म्मद बिन स़ब्बाह ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें हुशैम ने ख़बर दी, उन्होंने कहा ख़ालिद हज़्ज़ा ने ख़बर दी, अबू क़तादा से, उन्होंने बयान किया कि मुझे मालिक बिन हुवैरिष़

बाब 142 : उस शख़्स के बारे में जो शख़्स नमाज़ की ताक़ रकअ़त (पहली और तीसरी) में थोड़ी देर बैठे और उठ जाए

١٤٢- بَابُ مَنِ اسْتَوَى قَاعِدًا فِي وِتْرٍ مِنْ صَلَاتِهِ ثُمَّ نَهَضَ

(823) हमसे मुह़म्मद बिन स़ब्बाह ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें हुशैम ने ख़बर दी, उन्होंने कहा ख़ालिद हज़्ज़ा ने ख़बर दी, अबू क़तादा से, उन्होंने बयान किया कि मुझे मालिक बिन हुवैरिष़

लैष़ी (रज़ि.) ने ख़बर दी कि आपने नबी करीम (ﷺ) को नमाज़ पढ़ते देखा, आप (ﷺ) जब ताक़ रकअ़त में होते, उस वक़्त तक न उठते जब तक थोड़ी देर बैठ न लेते।

٨٢٣- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الصَّبَّاحِ قَالَ: أَخْبَرَنَا هُشَيْمٌ أَخْبَرَنَا خَالِدٌ الْحَذَّاءُ عَنْ أَبِي قِلَابَةَ قَالَ: أَخْبَرَنَا مَالِكُ بْنُ الْحُوَيْرِثِ اللَّيْثِيُّ (أَنَّهُ رَأَى النَّبِيَّ ﷺ يُصَلِّي، فَإِذَا كَانَ فِي وِتْرٍ مِنْ صَلَاتِهِ لَمْ يَنْهَضْ حَتَّى يَسْتَوِيَ قَاعِدًا).

M-09825696131

ताक़ रकअ़तों के बाद या'नी पहली और तीसरी रकअ़त के दूसरे सज्दे से जब उठे तो थोड़ी देर बैठकर फिर उठना; इसको जल्स-ए-इस्तिराह़त कहते हैं जो सुन्नते स़हीहा से ष़ाबित है।

लैष़ी (रज़ि.) ने ख़बर दी कि आपने नबी करीम (ﷺ) को नमाज़ पढ़ते देखा, आप (ﷺ) जब ताक़ रकअ़त में होते, उस वक़्त तक न उठते जब तक थोड़ी देर बैठ न लेते।

اللَّيْثِيُّ (أَنَّهُ رَأَى النَّبِيَّ ﷺ يُصَلِّي، فَإِذَا كَانَ فِي وِتْرٍ مِنْ صَلاَتِهِ لَمْ يَنْهَضْ حَتَّى يَسْتَوِيَ قَاعِدًا).

ताक़ रकअ़तों के बाद या'नी पहली और तीसरी रकअ़त के दूसरे सज्दे से जब उठे तो थोड़ी देर बैठकर फिर उठना; इसको जल्स-ए-इस्तिराहत कहते हैं जो सुन्नते सहीहा से ष़ाबित है।

बाब 143 : इस बारे में कि रकअ़त से उठते वक़्त ज़मीन का किस तरह से सहारा लें

١٤٣ – بَابُ كَيْفَ يَعْتَمِدُ عَلَى الأَرْضِ إِذَا قَامَ مِنَ الرَّكْعَةِ

(824) हमसे मअ़ली बिन असद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे वुहैब ने बयान किया, उन्होंने अय्यूब सुख़्तियानी से, उन्होंने अबू क़तादा से, उन्होंने बयान किया कि हज़रत मालिक बिन हुवैरिष़ (रज़ि.) हमारे यहाँ तशरीफ़ लाए और आपने हमारी इस मस्जिद में नमाज़ पढ़ाई। आपने फ़र्माया कि मैं नमाज़ पढ़ा रहा हूँ लेकिन मेरी निय्यत किसी फ़र्ज़ की अदायगी नहीं है बल्कि मैं सिर्फ़ तुम को ये दिखाना चाहता हूँ कि नबी करीम (ﷺ) किस तरह नमाज़ पढ़ा करते थे। अय्यूब सुख़्तियानी ने बयान किया कि मैंने अबू क़तादा से पूछा कि मालिक (रज़ि) किस तरह नमाज़ पढ़ते थे? तो उन्होंने फ़र्माया कि हमारे शैख़ अ़म्र बिन सलमा की तरह। अय्यूब सुख़्तियानी ने बयान किया कि शैख़ तमाम तकबीरात कहते थे और जब दूसरे सज्दे से सर उठाते तो थोड़ी देर बैठते और ज़मीन का सहारा लेकर फिर उठते। (राजेअ़ : 688)

٨٢٤– حَدَّثَنَا مُعَلَّى بْنُ أَسَدٍ قَالَ: حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ أَبِي قِلاَبَةَ قَالَ: جَاءَنَا مَالِكُ بْنُ الْحُوَيْرِثِ فَصَلَّى بِنَا فِي مَسْجِدِنَا هَذَا فَقَالَ: إِنِّي لأُصَلِّي بِكُمْ وَمَا أُرِيْدُ الصَّلاَةَ، لَكِنْ أُرِيْدُ أَنْ أُرِيَكُمْ كَيْفَ رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ يُصَلِّي. قَالَ أَيُّوبُ: فَقُلْتُ لأَبِي قِلاَبَةَ وَكَيْفَ كَانَتْ صَلاَتُهُ؟ قَالَ: مِثْلَ صَلاَةِ شَيْخِنَا هَذَا – يَعْنِي عَمْرَو بْنَ سَلِمَةَ – قَالَ أَيُّوبُ : وَكَانَ ذَلِكَ الشَّيْخُ يُتِمُّ التَّكْبِيْرَ، وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ عَنِ السَّجْدَةِ الثَّانِيَةِ جَلَسَ وَاعْتَمَدَ عَلَى الأَرْضِ، ثُمَّ قَامَ. [راجع: ٦٧٧]

तशरीह : या'नी जलस-ए-इस्तिराहत करके फिर दोनों हाथ ज़मीन पर टेककर उठते जैसे बूढ़ा शख़्स दोनों हाथों पर आटा गूंधने में टेका देता है। हन्फ़िया ने जो इसके ख़िलाफ़ तिर्मिज़ी की हदीष़ से दलील ली कि आँहज़रत (ﷺ) अपने पांव की उँगलियों पर खड़े होते थे; ये हदीष़ ज़ईफ़ है। इसके अ़लावा इससे ये निकलता है कि कभी आप (ﷺ) ने जलस-ए-इस्तिराहत किया और कभी नहीं किया। अहले हदीष़ का यही मज़हब है और जलस-ए-इस्तिराहत को मुस्तहब कहते हैं। और इसकी कोई दलील नहीं है कि आँहज़रत (ﷺ) ने कमज़ोरी या बीमारी की वजह से ऐसा किया और ये कहना कि नमाज़ का मौज़ूअ इस्तिराहत नहीं है क़यास है, बमुक़ाबले दलील और वो फ़ासिद है। (मौलाना वहीदुज़्ज़माँ)

बाब 144 : जब दो रकअ़त पढ़कर उठ तो तकबीर कहे और हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) तीसरी रकअ़त के लिये उठते वक़्त तकबीर कहा करते थे

١٤٤ – بَابُ يُكَبِّرُ وَهُوَ يَنْهَضُ مِنَ السَّجْدَتَيْنِ وَكَانَ ابْنُ الزُّبَيْرِ يُكَبِّرُ فِي نَهْضَتِهِ

أَهْلِ الْمَدِينَةِ)). [راجع: ٥٦٦]

इसलिये कि इस्लाम सिर्फ़ मदीना तक ही महदूद था, ख़ास तौर से बा-जमाअत का सिलसिला मदीना ही में था।

इमाम बुख़ारी (रह.) ने इस हदीष से बाब का मतलब यूँ निकाला कि उस वक़्त इशा की नमाज़ पढ़ने के लिये बच्चे भी आते रहते होंगे, तभी तो हज़रत उमर (रज़ि.) ने फ़र्माया कि औरतें और बच्चे सो गए। पस जमाअत में औरतों का बच्चों के साथ शरीक होना भी षाबित हुआ, **'वज़्ज़ाहिरू मिन कलामि उमर अन्नहू शाहदन्निसाअल्लाती हज़र्न फिलमस्जिदि क़द निम्न व स़िब्यानुहुन्न मअहुन्न.'** (हाशिया बुख़ारी) या'नी ज़ाहिरे कलामे उमर से यही है कि उन्होंने उन औरतों का मुशाहिदा किया जो मस्जिद में अपने बच्चों समेत नमाज़े इशा के लिये आई थीं और वो सो गईं जबकि उनके बच्चे भी उनके साथ थे।

863. हमसे उमर बिन अली फ़लास ने बयान किया, कहा कि हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने बयान किया, कहा कि हमसे सुफ़्यान ष़ौरी ने बयान किया, कहा कि मुझ से अब्दुर्रहमान बिन आबिस ने बयान किया, कहा कि मैंने इब्ने अब्बास (रज़ि.) से सुना और उनसे एक शख़्स ने ये पूछा था कि क्या तुमने (औरतों का) निकलना ईद के दिन आँहज़रत (ﷺ) के साथ देखा है? उन्होंने कहा हाँ, देखा है। अगर मैं आप का रिश्तेदार-अज़ीज़ न होता तो कभी न देखता। (या'नी मेरी कमसिनी और क़राबत की वजह से आँहज़रत मुझ को अपने साथ रखते थे) कष़ीर बिन सल्त के मकान के पास जो निशान हैं, पहले वहाँ आप (ﷺ) तशरीफ़ लाए, वहाँ आप (ﷺ) ने ख़ुत्बा सुनाया फिर आप औरतों के पास तशरीफ़ लाए और उन्हें भी वा'ज़ व नसीहत की। आप (ﷺ) ने उनसे ख़ैरात करने के लिये कहा। चुनाँचे औरतों ने अपने छल्ले और अंगूठियाँ उतार-उतार कर बिलाल (रज़ि.) के कपड़े में डालनी शुरू कर दी। आख़िर आप (ﷺ) बिलाल (रज़ि.) के साथ घर तशरीफ़ लाए। (राजेअ : 98)

٨٦٣- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَلِيٍّ قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ حَدَّثَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَابِسٍ سَمِعْتُ ابْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ لَهُ رَجُلٌ: شَهِدْتَ الْخُرُوجَ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ؟ قَالَ: نَعَمْ، وَلَوْ لاَ مَكَانِي مِنْهُ مَا شَهِدْتُهُ - يَعْنِي مِنْ صِغَرِهِ - ((الْعَلَمَ الَّذِي عِنْدَ دَارِ كَثِيرِ بْنِ الصَّلْتِ، ثُمَّ خَطَبَ، ثُمَّ أَتَى النِّسَاءَ فَوَعَظَهُنَّ وَذَكَّرَهُنَّ وَأَمَرَهُنَّ أَنْ يَتَصَدَّقْنَ، فَجَعَلَتِ الْمَرْأَةُ تَهْوِي بِيَدِهَا إِلَى حَلْقِهَا تُلْقِي فِي ثَوْبِ بِلاَلٍ، ثُمَّ أَتَى هُوَ وَبِلاَلٌ الْبَيْتَ)).

[راجع: ٩٨]

तश्रीह : हज़रत इब्ने अब्बास कमसिन थे, बावजूद उसके ईद में शरीक हुए यहीं से बाब का तर्जुमा निकलता है और उससे औरतों का ईदगाह में जाना भी षाबित हुआ। चुनाँचे अहनाफ़ के यहाँ ईदगाह में औरतों का जाना जाइज़ नहीं है, इसीलिये एक बुख़ारी शरीफ़ के देवबन्दी नुस्ख़े में तर्जुमा ही बदल दिया गया है। चुनाँचे वो तर्जुमा यूँ करते हैं कि 'उनसे एक शख़्स ने यूँ पूछा कि क्या नबी करीम (ﷺ) के साथ आप ईदगाह गए थे। हालाँकि पूछा ये जा रहा था कि क्या तुमने ईद के दिन नबी करीम (ﷺ) के साथ औरतों का निकलना देखा है, उन्होंने कहा कि हाँ ज़रूर देखा है। ये बदला हुआ तर्जुमा देवबन्दी तफ़्हीमुल बुख़ारी पारा नं. 4 पेज नं. 32 पर देखा जा सकता है। ग़ालिबन ऐसे ही हज़रात के लिये कहा गया है कि ख़ुद बदलते नहीं क़ुर्आन को बदल देते हैं। **वफ़्फ़क़नल्लाहु लिमा युहिब्बु व यर्ज़ा आमीन।**

बाब 162 : औरतों का रात में और (सुबह के वक़्त) अंधेरे में मस्जिद में जाना

١٦٢- بَابُ خُرُوجِ النِّسَاءِ إِلَى الْمَسَاجِدِ بِاللَّيْلِ وَالْغَلَسِ

864. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा कि हमें शुऐब ने ज़ुहरी से ख़बर दी, उन्होंने कहा कि मुझे उर्वा बिन यज़ीद ने आइशा (रज़ि.) से बयान किया, आप (रज़ि.) ने फ़र्माया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने एक मर्तबा इशा की नमाज़ में इतनी देरी की कि उमर (रज़ि.) को कहना पड़ा कि औरतें और बच्चे सो गये। फिर नबी करीम (ﷺ) (हुज्रे से) बाहर तशरीफ़ लाए और फ़र्माया कि देखो रूए-ज़मीन पर इस नमाज़ का (इस वक़्त) तुम्हारे सिवा और कोई इन्तिज़ार नहीं कर रहा है। उन दिनों मदीना के सिवा और कहीं नमाज़ नहीं पढ़ी जाती थी और लोग इशा की नमाज़ शफ़क़ डूबने के बाद से रात की पहली तिहाई गुज़रने तक पढ़ा करते थे।

(राजेअ़ : 566)

٨٦٤- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ: أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: (أَعْتَمَ رَسُولُ اللهِ ﷺ بِالْعَتَمَةِ حَتَّى نَادَاهُ عُمَرُ: نَامَ النِّسَاءُ وَالصِّبْيَانُ، فَخَرَجَ النَّبِيُّ ﷺ فَقَالَ: ((مَا يَنْتَظِرُهَا أَحَدٌ غَيْرُكُمْ مِنْ أَهْلِ الأَرْضِ)). وَلاَ يُصَلِّي يَوْمَئِذٍ إِلاَّ بِالْمَدِينَةِ، وَكَانُوا يُصَلُّونَ الْعَتَمَةَ فِيمَا بَيْنَ أَنْ يَغِيبَ الشَّفَقُ إِلَى ثُلُثِ اللَّيْلِ الأَوَّلِ.

[راجع: ٥٦٦]

तशरीह : मा'लूम हुआ कि औरतें भी नमाज़ के लिये ह़ाज़िर थीं, तभी तो ह़ज़रत उमर (रज़ि.) ने ये जुम्ला बाआवाज़े बुलन्द फ़र्माया ताकि आप (ﷺ) तशरीफ़ लाएँ और नमाज़ पढ़ाएँ। बाब का तर्जुमा इसी से निकलता है कि औरतें और बच्चे सो गए क्योंकि इससे मा'लूम होता है कि औरतें भी रात को नमाज़े इशा के लिये मस्जिद में आया करती थीं। उसके बाद जो ह़दीष़ इमाम बुख़ारी (रह़.) ने बयान की उससे भी यही निकलता है कि रात को औरत मस्जिद में जा सकती है। दूसरी ह़दीष़ में है कि अल्लाह की बन्दियों को मस्जिद में जाने से न रोको, ये ह़दीष़ें इसको ख़ास़ करती हैं या'नी रात को रोकना मना है। अब औरतों का जमाअ़त में आना मुस्तह़ब है या मुबाह़ इसमें इख़्तिलाफ़ है। कुछ ने कहा जवान औरत को मुबाह़ है और बूढ़ी को मुस्तह़ब है। ह़दीष़ से ये भी निकला कि औरतें ज़रूरत के लिये बाहर निकल सकती हैं। इमाम अबू ह़नीफ़ा ने कहा कि मैं औरतों का जुम्अ़े में आना मकरूह जानता हूँ और बुढ़िया इशा और फ़ज्र की जमाअ़त में आ सकती है और नमाज़ों में न आए और अबू यूसुफ़ ने कहा बुढ़िया हर एक नमाज़ के लिये मस्जिद में आ सकती है और जवान का आना मकरूह है। क़स्तलानी (मौलाना वह़ीदुज़्ज़माँ मरह़ूम) ह़ज़रत इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़.) का क़ौल ख़िलाफ़े ह़दीष़ होने की वजह से हुज्जत नहीं जैसा कि ख़ुद ह़ज़रत इमाम की वस़िय्यत है कि मेरा क़ौल ख़िलाफ़े ह़दीष़ हो तो छोड़ दो।

865. हमसे उबैदुल्लाह बिन मूसा ने हन्ज़ला बिन अबी सुफ़्यान से बयान किया, उनसे सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ने, उनसे उनके बाप इब्ने उमर (रज़ि.) ने, वो नबी करीम (ﷺ) से रिवायत करते थे कि आपने फ़र्माया कि अगर तुम्हारी बीवियाँ तुमसे रात में मस्जिद आने की इजाज़त माँगे तो तुम लोग उन्हें इसकी इजाज़त दे दिया करो।

उबैदुल्लाह के साथ इस ह़दीष़ को शुअ़बा ने भी आ'मश से रिवायत किया, उन्होंने मुजाहिद से, उन्होंने इब्ने उमर (रज़ि.) से और उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से।

(दीगर मक़ामात : 873, 899, 900, 5238)

٨٦٥- حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوسَى عَنْ حَنْظَلَةَ عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللهِ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((إِذَا اسْتَأْذَنَكُمْ نِسَاؤُكُمْ بِاللَّيْلِ إِلَى الْمَسْجِدِ فَأْذَنُوا لَهُنَّ)).

تَابَعَهُ شُعْبَةُ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ مُجَاهِدٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

[أطرافه في : ٨٧٣، ٨٩٩، ٩٠٠،

.[٥٢٣٨

बाब 163 : लोगों का नमाज़ के बाद इमाम के उठने का इन्तिज़ार करना

١٦٣- بَابُ انْتِظَارِ النَّاسِ قِيَامَ الإِمَامِ الْعَالِمِ

866. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे उ़ष्मान बिन उ़मर ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें यूनुस बिन यज़ीद ने ज़ुहरी से ख़बर दी, उन्होंने कहा कि मुझे हिन्द बिन्त हारिष़ ने ख़बर दी कि नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजः मुतह्हरा उम्मे सलमा (रज़ि.) ने उन्हें ख़बर दी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के ज़माने में औ़रतें फ़र्ज़ नमाज़ से सलाम फेरने के फौरन बाद (बाहर आने के लिये) उठ जाती थी। रसूलुल्लाह (ﷺ) और मर्द नमाज़ के बाद अपनी जगह बैठे रहते। जब तक अल्लाह को मन्ज़ूर होता। फिर जब रसूलुल्लाह (ﷺ) उठते तो दूसरे मर्द भी खड़े हो जाते।

٨٦٦- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ عُمَرَ قَالَ أَخْبَرَنَا يُونُسُ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: حَدَّثَتْنِي هِنْدُ بِنْتُ الْحَارِثِ أَنَّ أُمَّ سَلَمَةَ زَوْجَ النَّبِيِّ ﷺ أَخْبَرَتْهَا ((أَنَّ النِّسَاءَ فِي عَهْدِ رَسُولِ اللهِ ﷺ كُنَّ إِذَا سَلَّمْنَ مِنَ الْمَكْتُوبَةِ قُمْنَ وَثَبَتَ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَمَنْ صَلَّى مِنَ الرِّجَالِ مَا شَاءَ اللهُ، فَإِذَا قَامَ رَسُولُ اللهِ ﷺ قَامَ الرِّجَالُ)).

इस ह़दीष़ से भी औ़रतों का जमाअ़त में शरीक होना ष़ाबित हुआ।

867. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मस्लमा क़अ़म्बी ने बयान किया, उन्होंने इमाम मालिक (रह.) से बयान किया। (दूसरी सनद) और हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, उन्हें इमाम मालिक (रह.) ने यह्या बिन सईद अन्सारी से ख़बर दी, उन्हें उ़म्रा बिन्त अ़ब्दुर्रह़्मान ने, उनसे ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने फ़र्माया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) सुबह की नमाज़ पढ़ लेते फिर औ़रतें चादर में लिपट कर (अपने घरों को) वापस हो जाती थी। अंधेरे से उनकी पहचान न हो सकती।

(राजेअ़ : 372)

٨٦٧- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنْ مَالِكٍ ح. وَحَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ: أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيْدٍ عَنْ عُمْرَةَ بِنْتِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: ((إِنْ كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ لَيُصَلِّي الصُّبْحَ فَيَنْصَرِفُ النِّسَاءُ مُتَلَفِّعَاتٍ بِمُرُوطِهِنَّ مَا يُعْرَفْنَ مِنَ الْغَلَسِ)).

[راجع: ٣٧٢]

868. हमसे मुहम्मद बिन मिस्कीन ने बयान किया, कहा कि हमसे बिश्र बिन बुकैर ने बयान किया, कहा कि हमें इमाम औज़ाई ने ख़बर दी, कहा कि मुझसे यह्या बिन अबी कष़ीर ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन अबी क़तादा अन्सारी ने, उनसे उनके वालिद अबू क़तादा अन्सारी (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं नमाज़ के लिये खड़ा होता हूँ, मेरा इरादा ये होता है कि नमाज़ लम्बी करूँ लेकिन किसी बच्चे के

٨٦٨- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مِسْكِيْنٍ قَالَ: حَدَّثَنَا بِشْرٌ قَالَ أَخْبَرَنَا الأَوْزَاعِيُّ قَالَ حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ أَبِي كَثِيْرٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي قَتَادَةَ الأَنْصَارِيِّ عَنْ أَبِيْهِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِنِّي لأَقُومُ إِلَى الصَّلاَةِ

मंज़ूर करते हो तुम जानो अपने पैग़म्बर को जो जवाब क़यामत के दिन देना हो वो दे लेना। **वमा अलैना इल्लल बलाग़** (मौलाना वहीदुज़्ज़माँ)

बाब 164 : औरतों का मर्दों के पीछे नमाज़ पढ़ना

١٦٤ – بَابُ صَلاَةِ النِّسَاءِ خَلْفَ الرِّجَالِ

870. हमसे यह्या बिन क़ज़आ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे इब्राहीम बिन सअद ने बयान किया, उन्होंने ज़ुहरी से बयान किया, उनसे हिन्द बिन्त हारिष़ ने बयान किया, उनसे उम्मे सुलैम (रज़ि.) ने, उन्होंने फ़र्माया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब सलाम फेरते तो आपके सलाम फेरते ही औरतें जाने के लिये उठ जाती थीं और आँहज़रत (ﷺ) थोड़ी देर ठहरे रहते, खड़े न होते। ज़ुहरी ने कहा कि हम ये समझते हैं, आगे अल्लाह जाने, ये इसलिये था ताकि औरतें मर्दों से पहले निकल जाएँ।

٨٧٠– حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ قَزَعَةَ قَالَ: حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيْمُ بْنِ سَعْدٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ هِنْدَ بِنْتِ الْحَارِثِ عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: (كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ إِذَا سَلَّمَ قَامَ النِّسَاءُ حِيْنَ يَقْضِي تَسْلِيْمَهُ، وَيَمْكُثُ هُوَ فِي مَقَامِهِ يَسِيْرًا قَبْلَ أَنْ يَقُومَ. قَالَ : نَرَى – وَاللهُ أَعْلَمُ – أَنَّ ذَلِكَ كَانَ لِكَيْ يَنْصَرِفَ النِّسَاءُ قَبْلَ أَنْ يُدْرِكَهُنَّ الرِّجَالِ.

871. हमसे अबू नुऐम फ़ज़ल बिन दुकैन ने बयान किया, कहा कि हमसे सुफ़्यान इब्ने उययना ने बयान किया, उनसे इस्हाक़ बिन अब्दुल्लाह बिन अबी तलहा ने, उनसे हज़रत अनस (रज़ि.) ने फ़र्माया कि नबी करीम (ﷺ) ने (मेरी माँ) उम्मे सुलैम के घर में नमाज़ पढ़ाई। मैं और यतीम मिलकर आप (ﷺ) के पीछे खड़े हुए और उम्मे सुलैम (रज़ि.) हमारी पीछे थीं। (राजेअ : 380)

٨٧١– حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ قَالَ : حَدَّثَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ عَنْ إِسْحَاقَ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: (صَلَّى النَّبِيُّ ﷺ فِي بَيْتِ أُمِّ سُلَيْمٍ فَقُمْتُ وَيَتِيْمٌ خَلْفَهُ. وَأُمُّ سُلَيْمٍ خَلْفَنَا). [راجع: ٣٨٠]

बाब 165 : सुबह की नमाज़ पढ़कर औरतों का जल्दी से चला जाना और मस्जिद में कम ठहरना

١٦٥ – بَابُ سُرْعَةِ انْصِرَافِ النِّسَاءِ مِنَ الصُّبْحِ وَقِلَّةِ مُقَامِهِنَّ فِي الْمَسْجِدِ

872. हमसे यह्या बिन मूसा ने बयान किया, कहा कि हमसे सईद बिन मन्सूर ने बयान किया, कहा कि हमसे फ़ुलैज बिन सुलैमान ने अब्दुर्रहमान बिन क़ासिम से बयान किया, उनसे उन के बाप (क़ासिम बिन मुहम्मद बिन अबी बकर) ने उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) सुबह की नमाज़ मुँह अंधेरे पढ़ते थे। मुसलमानों की औरतें जब (नमाज़ पढ़कर) वापस होतीं तो अंधेरे की वजह से उनकी पहचान न होती या वो एक दूसरे को न

٨٧٢– حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ مُوسَى قَالَ حَدَّثَنَا سَعِيْدُ بْنُ مَنْصُورٍ قَالَ حَدَّثَنَا فُلَيْحٌ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الْقَاسِمِ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا : ((أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ كَانَ يُصَلِّي الصُّبْحَ بِغَلَسٍ فَيَنْصَرِفْنَ نِسَاءُ الْمُؤْمِنِيْنَ لاَ يُعْرَفْنَ مِنَ الْغَلَسِ، أَوْ

पहचान सकतीं। (राजेअ : 382) لاَ يَعْرِفُ بَعْضُهُنَّ بَعْضًا)). [راجع: ٣٧٢]

तश्रीह : नमाज़ ख़त्म होते ही औरतें वापस हो जाती थीं इसलिये उनकी वापसी के वक़्त भी इतना अँधेरा रहता था कि एक–दूसरी को पहचान नहीं सकती थी। लेकिन मर्द फ़ज्र के बाद आम तौर से नमाज़ के बाद मस्जिद में कुछ देर के लिये ठहरते थे। हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) को अल्लाह पाक ने इज्तिहाद का दर्जे-ए-कामिल अ़ता फ़र्माया था। इसी आधार पर आपने अपनी जामिउ़स्सह़ीह़ में एक–एक ह़दीष़ से बहुत से मसाइल का इस्तिख़राज फ़र्माया है। ह़दीष़े मज़कूर पीछे भी कई बार ज़िक्र हो चुकी है। ह़ज़रत इमाम ने इससे फ़ज्र की नमाज़ अव्वले वक़्त ग़लस (अंधेरे) में पढ़ने का इष़्बात फ़र्माया है और यहाँ औरतों का शरीके जमाअ़त होना और सलाम के बाद उनका फ़ौरन मस्जिद से चले जाना वग़ैरह मसाइल बयान फ़र्माएँ हैं। ता'ज्जुब है उन अ़क़्ल के दुश्मनों पर जो ह़ज़रत इमाम जैसे मुज्तहिदे मुत्लक़ की दिरायत का इंकार करते हैं और आपको सिर्फ़ रिवायात का इमाम तस्लीम करते हैं। हालाँकि रिवायत और दिरायत दोनों में आपकी महारते ताम्मा षाबित है और मज़ीद ख़ूबी ये है कि आपकी दिरायत व तफ़क़्क़ुह की बुनियाद सिर्फ़ क़ुर्आन और ह़दीष़ पर है, राय और क़यास पर नहीं। जैसा कि दूसरे अइम्म-ए-मुज्तहिदीन में से कुछ ह़ज़रात का ह़ाल है जिनके तफ़क़्क़ुह की बुनियाद सिर्फ़ राय और क़यास पर है। ह़ज़रत इमामे बुख़ारी (रह.) को अल्लाह ने जो मुक़ाम अ़ता फ़र्माया था वो उम्मत में बहुत कम लोगों के ह़िस्से में आया है। अल्लाह ने आपको पैदा ही इसलिये फ़र्माया था कि शरीअ़ते मुह़म्मदिया को क़ुर्आनो–सुन्नत की बुनियाद पर इस दर्ज़ा मुंज़बित फ़र्माएं कि क़यामत के लिये उम्मत इससे बेनियाज़ होकर बेधड़क शरीअ़त पर अ़मल करती रहे। आयते शरीफ़ा, **'व आख़रीन मिन्हुम लम्मा यलह़क़ू बिहिम'** (अल जुम्आ 3) की मिस्दाक़ बेशक व शुब्हा इन्हीं मुह़द्दिष़ीने किराम (रह.) अज्मईन की जमाअ़त है।

बाब 166 : औरत मस्जिद में जाने के लिये अपने ख़ाविन्द से इजाज़त ले

١٦٦ – بَابُ اسْتِئْذَانِ الْمَرْأَةِ زَوْجَهَا بِالْخُرُوجِ إِلَى الْمَسْجِدِ

873. हमसे मुसद्दद बिन मुस्रहद ने बयान किया, कहा कि हमसे यज़ीद बिन ज़ुरैअ़ ने बयान किया, उनसे मअ़मर ने, उनसे ज़ुहरी ने, उनसे सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर ने, उनसे उनके बाप ने, उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से रिवायत की है कि आपने फ़र्माया कि जब तुम में से किसी की बीवी (नमाज़ पढ़ने के लिये मस्जिद में आने की) उससे इजाज़त माँगे तो शौहर को चाहिये कि उसको न रोके। (राजेअ़ : 865)

٨٧٣ – حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا يَزِيْدُ بْنُ زُرَيْعٍ عَنْ مَعْمَرٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللهِ عَنْ أَبِيْهِ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِذَا اسْتَأْذَنَتِ امْرَأَةُ أَحَدِكُمْ فَلاَ يَمْنَعْهَا)). [راجع: ٨٦٥]

तश्रीह : इजाज़त दे इसलिये कि बीवी कोई हमारी लौण्डी नहीं है हमारी तरह वो भी आज़ाद है सिर्फ़ निकाह के मुआहिदे की वजह से वो हमारे मातह़त है। शरीअ़ते मुह़म्मदी में औरत और मर्द के (इन्सानी) हुक़ूक़ बराबर तस्लीम किये गए हैं। अब अगर इस ज़माने के मुसलमान अपनी शरीअ़त के बरख़िलाफ़ औरतों को क़ैदी और लौण्डी बनाकर रखें तो उसका इल्ज़ाम उन पर है न कि शरीअ़ते मुह़म्मदी पर। जिन पादरियों ने शरीअ़ते मुह़म्मदी को बदनाम किया कि इस शरीअ़त में औरतों को मुत्लक आज़ादी नहीं, उनकी नादानी है। (मौलाना वह़ीदुज़्ज़माँ मरहूम)

ह़न्फ़िया के यहाँ मसाजिद में नमाज़ के लिये औरतों का आना दुरुस्त नहीं है इस सिलसिले में उनकी बड़ी दलील ह़ज़रते आइशा (रज़ि.) की ह़दीष़ है जिनके अल्फ़ाज़ ये हैं **क़ालत लौ अदरकन्नबिय्यु (ﷺ) मा अह़दष़न्निसाउ लमनअ़हुन्नल्मस्जिद कमा मुनिअ़त निसाउ बनी इस्राईल अख़रजहुश्शैख़ानि** या'नी ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने फ़र्माया कि नबी करीम (ﷺ) उन चीज़ों को पा लेते जो आज औरतों ने नई ईजाद कर ली है तो आप उनको मसाजिद आने से मना फ़र्मा देते जैसा कि बनी इस्राईल की औरतों को रोक दिया गया था। इसके जवाब में अल मुह़द्दिष़ुल कबीर अल्लामा अ़ब्दुर्रह़मान मुबारकपुरी (रह़.) अपनी मशहूर किताब

उमूर में हिस्से लेने का कोई मौक़ा न मिला कि हज़रत फ़ारूक़े आ'ज़म अपने ख़ानदान व क़बीला के अफ़राद को अलग रखते रहे। अहदे उ़ष्मानी में आपकी क़ाबिलियत के मद्देनज़र आपको अहदे क़ज़ा पेश किया गया (क़ाज़ी बनाने की पेशकश की गई) लेकिन आपने ये फ़र्माकर इंकार कर दिया कि क़ाज़ी तीन क़िस्म के होते हैं जाहिल, आलिमे मसाइल अलद्दुनिया (दुनियवी मसाइल के आलिम) कि ये दोनों जहन्नमी है। तीसरे वो हैं जो सहीह इज्तिहाद करते हैं उन्हें न अज़ाब है न ष़वाब और साफ़ कह दिया कि मुझे कहीं का आमिल न बनाइए। उसके बाद अमीरुल मोमिनीन ने भी इस़रार न किया अलबत्ता उस अहद के जिहाद के मोर्चों में ज़रूर शरीक रहे। ट्यूनिश, अल जज़ाइर (अल्जीरिया), मराकश, ख़ुरासान और त़ब्रिस्मान के युद्धों में लड़े। जिस क़दर मनास़िब (पदों) और ओहदों की क़ुबूलयित से घबराते थे, जिहादों में उसी क़दर ज़ोश-ख़रोश और शौक़ व दिल बस्तगी के साथ हिस़्सा लेते थे।

आख़िर ज़मान-ए-उ़ष्मानी में जो फ़ित्ने रूनुमा (प्रकट) हुए आप उनसे बिल्कुल किनाराकश रहे। उनकी शहादत के बाद आपकी ख़िदमत में ख़िलाफ़त का ए'जाज़ पेश किया और अदमे क़ुबूलियत के सिलसिले में क़त्ल की धमकी दी गई लेकिन आपने फ़ित्नों (उपद्रवों) को देखते हुए इस अज़ीमुश्शान ए'ज़ाज़ से भी इंकार कर दिया और कोई इअतिनाअ न की। उसके बाद आपने इस शर्त पर हज़रत अ़ली (रज़ि.) के हाथ पर बेअ़त कर ली कि वो ख़ाना-जंगियों (गृहयुद्धों) में कोई हिस़्सा न लेंगे। चुनाँचे जंगे जमल व स़िफ़्फ़ीन में शिर्कत न की। ताहम अफ़सोस करने वाले थे और कहा करते थे कि :-

'गो मैंने हज़रत अ़ली क़र्रमल्लाहु वज्हहू की त़रफ़ से अपना हाथ आगे नहीं बढ़ाता लेकिन हक़ पर मुक़ाबला भी अफ़ज़ल है।' (मुस्तदरक)

फ़ैसला ष़ालिष़ी सुनने के लिये दूमतुल जन्दाल में तशरीफ़ ले गए। हज़रत अ़ली करमुल्लाह वज्हू के बाद अमीर मुआविया (रज़ि.) के हाथ पर बेअ़त कर ली और शौक़े जिहाद में उस अहद के तमाम मअ़रकों में नीज़ मुहिमे क़ुस्तुन्तुनिया में शामिल हुए। यज़ीद के हाथ पर फ़ित्न-ए-इख़्तिलाफ़े उम्मत से दामन बचाए रखने के लिये बिला तामील बेअ़त कर ली और फ़र्माया कि ये ख़ैर है तो हम इस पर राज़ी हैं और अगर ये शर है तो हमने स़ब्र किया। आजकल लोग फ़ित्नों से बचना तो दरकिनार अपने ज़ाती मक़ास़िद के लिये फ़ित्ने पैदा करते हैं और अल्लाह के ख़ौफ़ से उनके जिस्म पर लरज़ा त़ारी नहीं होता। फिर ये बेअ़त हक़ीक़तन न किसी डर के आधार पर थी और न आप किसी लालच में आए थे। त़नत़ना और हक़परस्ती का ये आलम था कि अम्रे हक़ के मुक़ाबले में किसी बड़ी से बड़ी शख़्स़ियत को भी ख़ात़िर में नहीं लाते थे।

बाब 167 : औरतों का मर्दों के पीछे नमाज़ पढ़ना

١٦٧- بَابُ صَلاَةِ النِّسَاءِ خَلْفَ الرِّجَالِ

874. हमसे अबू नुऐ़म फ़ुज़ैल बिन दुकैन ने बयान किया, कहा कि हमसे सुफ़्यान इब्ने उ़ययना ने बयान किया, उनसे इस्हाक़ बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अबी त़ल्हा ने, उनसे हज़रत अनस (रज़ि.) ने फ़र्माया कि नबी करीम (ﷺ) ने (मेरी माँ) उम्मे सुलैम के घर में नमाज़ पढ़ाई। मैं और यतीम मिलकर आप (ﷺ) के पीछे खड़े हुए और उम्मे सुलैम (रज़ि.) हमारे पीछे थीं।

٨٧٤- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ عَنْ إِسْحَاقَ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ (صَلَّى النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي بَيْتِ أُمِّ سُلَيْمٍ، فَقُمْتُ وَيَتِيمٌ خَلْفَهُ. وَأُمُّ سُلَيْمٍ خَلْفَنَا).

875. हमसे यह्या बिन क़ज़अ़ा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, उन्होंने ज़ुहरी से बयान किया, उनसे हिन्द बिन्त हारिष़ ने बयान किया, उनसे उम्मे सुलैम (रज़ि.) ने, उन्होंने फ़र्माया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब सलाम फेरते तो आपके सलाम फेरते ही औरतें जाने के लिये उठ जाती थीं

٨٧٥- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ قَزَعَةَ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ هِنْدِ بِنْتِ الْحَارِثِ عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ قَالَتْ: (كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ إِذَا سَلَّمَ قَامَ النِّسَاءُ حِينَ

يَقْضِي تَسْلِيمَهُ، وَهُوَ يَمْكُثُ فِي مَقَامِهِ يَسِيرًا قَبْلَ أَنْ يَقُومَ. قَالَتْ نُرَى - وَاللَّهُ أَعْلَمُ - أَنَّ ذَلِكَ كَانَ لِكَيْ يَنْصَرِفَ النِّسَاءُ قَبْلَ أَنْ يُدْرِكَهُنَّ الرِّجَالُ.

[راجع: ٣٨٠]

और आँहज़रत (ﷺ) थोड़ी देर ठहरे रहते, खड़े न होते। ज़ुहरी ने कहा कि हम ये समझते हैं, आगे अल्लाह जाने, ये इसलिये था कि औरतें मर्दों से पहले निकल जाएँ।

(राजेअ : 380)

11. किताबुल जुमुआ

किताब जुम्आ के बयान में

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

तश्रीह : लफ़्ज़े जुम्आ मीम के साकिन के साथ और जुम्आ मीम की फ़तह के साथ दोनों त़रह से बोला गया। अ़ल्लामा शौकानी फ़र्माते हैं, **'क़ाल फिल्फतहि कदिख़्तुलिफ फी तस्मिय्यतिल्यौमि बिलजुम्अति मअल्इत्तिफ़ाक़ि अ़लाअन्नहू कान लयुसम्मा फिल्जाहिलिय्यति वल्अ़रूबति बिफत्हिल्ऐनि व ज़म्मिर्राइ व बिल्वहदति अल्ख़'** या'नी जुम्अ़े की वजहे तस्मिया में इख़्तिलाफ़ है इस पर सबका इत्तिफ़ाक़ है कि अ़हदे जाहिलियत में उसको यौमे अ़रूबा कहा करते थे। ह़ज़रत इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़.) ने ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) से रिवायत किया है कि उस दिन मख़्लूक़ की ख़िल्क़त तक्मील को पहुँची इसलिये उसे जुम्आ कहा गया। कुछ लोग कहते हैं कि तख़्लीक़े आदम की तक्मील इसी दिन हुई इसलिये इसे जुम्आ कहा गया। इब्ने हुमैद में सनदे सह़ीह़ से मरवी है कि ह़ज़रत असद बिन ज़रारह के साथ अंसार ने जमा होकर नमाज़ अदा की और ह़ज़रत असद बिन ज़रारह ने उनको वा'ज़ फ़र्माया। पस उसका नाम उन्होंने जुम्आ रख दिया क्योंकि वो सब इसमें जमा हुए। ये भी है कि कअ़ब बिन लवी उस दिन अपनी क़ौम को ह़रमे शरीफ़ में जमा करके उनको वा'ज़ किया करता था और कहा करता था कि इस ह़रम से एक नबी का ज़ुहूर होने वाला है। यौमे अ़रूबा का नाम सबसे पहले यौमे जुम्आ कअ़ब बिन लवी ही ने रखा। ये दिन बड़ी फ़ज़ीलत रखता है। इसमें एक घड़ी ऐसी है जिसमें जो नेक दुआ की जाए क़ुबूल होती है। ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) ने अपने रविश के मुत़ाबिक़ नमाज़े जुम्आ की फ़र्ज़ियत के लिये आयते क़ुर्आनी से इस्तिदलाल फ़र्माया जैसा कि नीचे के बाब से ज़ाहिर है कि ह़ज़रत मौलाना उ़बैदुल्लाह स़ाह़ब शैख़ुल ह़दीष़ मुबारक पुरी फ़र्माते हैं, **'व ज़कर इब्नुल क़य्यिम फिल्हुदा सफ़ा 102, 118 जिल्द-01 लियौमिल्जुम्अति षलाषव्व षलाषीन ख़ुस़ूस़िय्यतन ज़कर बअ़्ज़हल्हाफ़िज़ु फिल्फतहि मुलख़्ख़िसम्मिन अह़ब्बिल्वुक़ूफ़ि अ़लैहा फल्यर्जिअ़ इलैहिमा'** (मिर्अ़ात जिल्द नं. 2, पेज नं. 272) या'नी जुम्अ़े के दिन 33 ख़ुस़ूस़ियात हैं जैसा कि अ़ल्लामा इब्ने क़य्यिम ने ज़िक्र किया है कुछ उनमें से ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़जर ने फ़त्हुल बारी में भी नक़ल की हैं। तफ़्सीलात का शौक़ रखनेवाले उन किताबों की त़रफ़ रुजूअ़ फ़र्माएँ।

तबरानी की रिवायत है कि आप हमेशा ऐसा किया करते थे। उन सूरतों में इंसान की पैदाइश और क़यामत वग़ैरह का ज़िक्र है और ये जुम्आ के दिन ही वाक़ेअ होगी। इस ह़दीष़ से मालिकिया का रद्द हुआ जो नमाज़ में सज्दे वाली सूरत पढ़ना मकरूह जानते हैं। अबू दाऊद की रिवायत है कि नमाज़ में भी सज्दे की सूरत पढ़ी और सज्दा किया। (वह़ीदी) अल्लामा शौकानी इस बारे में कई अह़ादीष़ नक़ल करने के बाद फ़र्माते हैं, **'व हाज़िहिल्अह़ादीषु फीहा मश्रूइय्यतु किराति तन्ज़ीलिस्सज्दति व हल अता अलल्इन्सानि क़ालल्इराक़ी व मिम्मन कान यफ़अलुहू मिनस्सहाबति अ़ब्दुल्लाहिब्नि अ़ब्बास व मिनत्ताबिईन इब्राहीम बिन अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ व हुव मज़्हबश्शाफ़िई व अह़मद व अस्ह़ाबुल्अह़ादीष़'** (नैलुल औतार) या'नी इन अह़ादीष़ से ष़ाबित हुआ कि जुम्अे के दिन फ़ज्र की नमाज़ की पहली रकअत में अलिफ़ लाम तंज़ील सज्दा दूसरी में हल अता अ़लल इंसान पढ़ना अफ़ज़ल है। स़ह़ाबा में से ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) और ताबेईन में से इब्राहीम बिन अ़ब्दुर्रह़मान का यही अ़मल था और इमाम शाफ़िई और इमाम अह़मद और अहले ह़दीष़ का यही मज़हब है।

अ़ल्लामा क़स्तलानी फ़र्माते हैं कि **'वत्तअ्बीरू बिकान यश्उरू बिमवाज़बतिही अ़लैहिस्सलाम अलल्किराति बिहिमा फीहा'** या'नी ह़दीषे मज़्कूर में लफ़्ज़े काना बतला रहा है कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने जुम्अे के दिन फ़ज्र की नमाज़ में इन सूरतों पर मवाज़बत या'नी हमेशगी फ़र्माई है। अगरचे कुछ उ़लमा मवाज़बत को नहीं मानते मगर तबरानी में ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) से **'युदीमु बिज़ालिक'** लफ़्ज़ मौजूद है। या'नी आप (ﷺ) ने इस अ़मल पर मुदावमत फ़र्माई (क़स्तलानी) कुछ लोगों ने दा'वा किया था कि अहले मदीना ने ये अ़मल छोड़ दिया था, इसका जवाब अ़ल्लामा इब्ने ह़जर (रह़.) इन लफ़्ज़ों में दिया है, **'व अम्मा दअ्वाहू अन्ननास तरकुल्अमल बिही फ़ बातिलतुन लिअम्मन अक्षर अहलिल्इल्मि मिनस्सहाबति वत्ताबिईन क़द क़ालू बिही कमा नक़लहुब्नुल्मुन्ज़िर व गैरहू हत्ता अन्नहू षाबितुन अन इब्राहीम इब्नि औफ़ वल्अस्अद व हुव मिन किबारित्ताबिईन मिन अहलिल्मदीनति अन्नहू अम्मन्नास बिल्मदीनति बिहिमा फिल्फज्रि यौमल्जुम्अति अख़्रजहू इब्नु अबी शैबत बिइस्नादिन सहीहिन'** अल्ख़ (फ़त्हुल बारी) या'नी ये दा'वा कि लोगों ने इस पर अ़मल करना छोड़ दिया था झूठ है। इसलिये कि अकष़र अहले इल्म स़ह़ाबा व ताबेईन इसके क़ाइल हैं जैसा कि इब्ने मुंज़ि र वग़ैरह ने नक़ल किया है यहाँ तक कि इब्राहीम इब्ने औ़फ़ से भी ष़ाबित है जो मदीना के बड़े ताबेईन में से हैं कि उन्होंने जुम्अे के दिन लोगों को फ़ज्र की नमाज़ पढ़ाई और इन्हीं दो सूरतों को पढ़ा। इब्ने अबी शैबा ने इसे सह़ीह़ सनद से रिवायत किया है।

बाब 11 : गांव और शहर दोनों जगह जुम्आ दुरुस्त है

١١ - بَابُ الْجُمُعَةِ فِي الْقُرَى وَالْمُدُنِ

(892) हमसे मुहम्मद बिन मुष़न्ना ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अबू आ़मिर अ़क़्दी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे इब्राहीम बिन त़ह्मान ने बयान किया, उनसे अबू जम्रह नज़्र बिन अ़ब्दुर्रह़मान ज़ब्ई़ ने, उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने; आपने फ़र्माया कि नबी करीम (ﷺ) की मस्जिद के बाद सबसे पहला जुम्आ बनू क़ैस की मस्जिद में हुआ जो बेहरीन के मुल्क जुवाष़ी में थी।

(दीगर मक़ाम : 4371)

٨٩٢ - حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو عَامِرٍ الْعَقَدِيُّ قَالَ: حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيْمُ بْنُ طَهْمَانَ عَنْ أَبِي جَمْرَةَ الضُّبَعِيِّ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: (إِنَّ أَوَّلَ جُمُعَةٍ جُمِّعَتْ - بَعْدَ جُمُعَةٍ فِي مَسْجِدِ رَسُولِ اللهِ ﷺ - فِي مَسْجِدِ عَبْدِ الْقَيْسِ بِجُوَاثَى مِنَ الْبَحْرَيْنِ).

[طرفه في : ٤٣٧١].

(893) हमसे बिश्र बिन मुह़म्मद मर्वज़ी ने बयान किया, कहा कि हमें अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, कहा कि हमें यूनुस बिन

٨٩٣ - حَدَّثَنِي بِشْرُ بْنُ مُحَمَّدٍ الْمَرْوَزِيُّ قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ قَالَ : أَخْبَرَنَا يُونُسُ

यज़ीद ने ज़ुह्री से ख़बर दी, उन्हें सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह ने इब्ने आमिर से ख़बर दी, उन्होंने कहा कि मैंने नबी करीम (ﷺ) को ये कहते हुए सुना कि तुममें से हर शख़्स निगहबान है और लैष़ ने इसमें ये ज़्यादती की कि यूनुस ने बयान किया कि रुज़ैक़ बिन हकीम ने इब्ने शिहाब को लिखा। उन दिनों मैं भी वादिउल क़ुरा में इब्ने शिहाब के पास ही था कि क्या मैं जुम्आ पढ़ सकता हूँ। रुज़ैक़ (ऐला के आसपास) एक ज़मीन काश्त करवा रहे थे। वहाँ ह़ब्शा वग़ैरह के कुछ लोग मौजूद थे। उस ज़माने में रुज़ैक़ ऐला में (ह़ज़रत उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ की त़रफ़ से) ह़ाकिम थे। इब्ने शिहाब (रह़.) ने उन्हें लिखवाया, मैं वहीं सुन रहा था कि रुज़ैक़ जुम्आ पढ़ाएँ। इब्ने शिहाब रुज़ैक़ को ये ख़बर दे रहे थे कि सालिम ने उनसे ह़दीष़ बयान की कि अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना। आपने फ़र्माया कि तुममें से हर एक निगराँ हैं और उसके मातह़तों के बारे में उससे सवाल होगा। इमाम निगराँ हैं और उससे सवाल उसकी रिआ़या के बारे में होगा। इंसान अपने घर का निगराँ हैं और उससे उसकी रइयत (प्रजा) के बारे में सवाल होगा। औ़रत अपने शौहर के घर की निगराँ हैं और उससे उसकी रइयत के बारे में सवाल होगा। ख़ादिम अपने आक़ा के माल का निगराँ है और उससे उसकी रइयत के बारे में सवाल होगा। इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने फ़र्माया कि मेरा ख़याल है कि आप (ﷺ) ने ये भी फ़र्माया कि इंसान अपने बाप के माल का निगराँ है और उससे उसकी रइयत के बारे में सवाल होगा और तुममें से हर शख़्स निगराँ हैं और सबसे उसकी रइयत के बारे में सवाल होगा।

(दीगर मक़ाम : 2409, 2554, 2751)

عَنِ الزُّهْرِيِّ أَخْبَرَنَا سَالِمُ بْنُ عَبْدِ اللهِ عَنِ ابنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((كُلُّكُمْ رَاعٍ)). وَزَادَ اللَّيْثُ قَالَ يُونُسُ كَتَبَ رُزَيْقُ بْنُ حُكَيْمٍ إِلَى ابْنِ شِهَابٍ- وَأَنَا مَعَهُ يَومَئِذٍ بِوَادِي الْقُرَى - : هَلْ تَرَى أَنْ أُجَمِّعَ؟ وَرُزَيْقٌ عَامِلٌ عَلَى أَرْضٍ يَعْمَلُهَا وَفِيْهَا جَمَاعَةٌ مِنَ السُّوْدَانِ وَغَيْرِهِمْ، وَرُزَيْقٌ يَومَئِذٍ عَلَى أَيْلَةَ، فَكَتَبَ ابْنُ شِهَابٍ - وَأَنَا أَسْمَعُ - يَأْمُرُهُ أَنْ يُجَمِّعَ، يُخْبِرُهُ أَنَّ سَالِمًا حَدَّثَهُ أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ عُمَرَ يَقُولُ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((كُلُّكُمْ رَاعٍ، وَكُلُّكُمْ مَسْؤُولٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ: الإِمَامُ رَاعٍ وَمَسْؤُولٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ، وَالرَّجُلُ رَاعٍ فِي أَهْلِهِ وَهُوَ مَسْؤُولٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ، وَالْمَرْأَةُ رَاعِيَةٌ فِي بَيْتِ زَوْجِهَا وَمَسْؤُولَةٌ عَنْ رَعِيَّتِهَا، وَالْخَادِمُ رَاعٍ فِي مَالِ سَيِّدِهِ وَمَسْؤُولٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ)) - قَالَ: وَحَسِبْتُ أَنْ قَدْ قَالَ: ((وَالرجُلُ رَاعٍ فِي مَالِ أَبِيْهِ وَمَسْؤُولٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ، وَكُلُّكُمْ رَاعٍ وَمَسْؤُولٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ)).

[أطرافه في : ٢٤٠٩، ٢٥٥٤، ٢٧٥١،

तश्रीह: मुज्तहिदे मुत्लक़ ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) ने उन लोगों का रद्द फ़र्माया है जो जुम्अ़े की स़िह़त के लिये शहर और ह़ाकिम वग़ैरह की क़ुयूद लगाते हैं और गांव में जुम्अ़े के लिये इंकार करते हैं। ह़ज़रत मौलाना वह़ीदुज़्ज़माँ स़ाह़ब शारेह़े बुख़ारी फ़र्माते हैं कि इससे इमाम बुख़ारी (रह़.) ने उन लोगों का रद्द किया जो जुम्अ़े के लिये शहर की क़ैद करते हैं। अहले ह़दीष़ का मज़हब ये है कि जुम्अ़े की शर्तें जो ह़न्फ़ियों ने लगाई हैं वो सब बेदलील हैं और जुम्आ दूसरी नमाज़ों की तरह़ है सिर्फ़ जमाअ़त इसमें शर्त है। इमाम के सिवा एक आदमी और होना और नमाज़ से पहले दो ख़ुत्बे पढ़ना सुन्नत है बाक़ी

इब्ने सीरीन से मरवी है कि मदीने के लोग आँहज़रत (ﷺ) के आने से पहले जबकि अभी सूरह जुम्आ भी नाज़िल नहीं हुई थी एक दिन जमा हुए और कहने लगे कि यहूद और नसारा ने एक दिन जमा होकर इबादत के लिये मुक़र्रर किये हुए हैं क्यूँ न हम भी एक दिन मुक़र्रर करके अल्लाह की इबादत किया करें। सो उन्होंने अ़रूबा का दिन मुक़र्रर किया और असअद बिन ज़रारह को इमाम बनाया और जुम्आ अदा किया। उस दिन ये आयत नाज़िल हुई, **'इज़ा नूदिय लिस्सलाति मिंय्यौमिल जुम्अ़ति फ़स्औ इला ज़िक्रिल्लाहि'** (अल जुम्आ, आयत नं. 9) इसको अ़ल्लामा इब्ने हजर ने सहीह सनद के साथ अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ से नक़ल फ़र्माया और कहा है कि इसका शाहिद इस्नाद हसन के साथ अहमद, अबू दाऊद, इब्ने माज़ा ने निकाला।

उस्ताज़ुना व मौलाना हज़रत मुहद्दिष़ अ़ब्दुर्रहमान मुबारकपुरी (रह.) फ़र्माते हैं कि **'सुम्मियतिल्जुम्अतु लिइज्तिमाइन्नासि फीहा व कान यौमल्जुम्अ़ति युसम्मल्अरूबा'** या'नी जुम्आ इसलिये नाम पड़ा कि लोग इसमें जमा होते हैं और ज़मान-ए-जाहिलियत में इसका नाम यौमे अ़रूबा था। इसकी फ़ज़ीलत के बारे में इमामे तिर्मिज़ी (रह.) हदीष़ लाए हैं, **'अन अबी हुरैरत अनिन्नबिय्यि (ﷺ) क़ाल खैरु यौमिन तलअत फीहिश्शम्सु यौमल्जुम्अति फीहि खुलिक आदमु व फीहि उदखिलल्जन्नत व फीहि उख्रेज मिन्हा व ला तक़ूमुस्साअतु इल्ला फी यौमिल्जुम्अति'** 'या'नी तमाम दिनों में बेहतरीन दिन जिसमें सूरज तुलूअ होता है वो जुम्अ़े का दिन है, इसमें आदम अ़लैहिस्सलाम पैदा हुए और इसी दिन में जन्नत में दाख़िल किये गए और इस दिन उनका जन्नत से निकलना हुआ और क़यामत भी इस दिन क़ायम होगी।'

फ़ज़ाइले जुम्आ पर मुस्तक़िल किताबें लिखी गई हैं। ये उम्मत की हफ़्तावारी ईद है मगर सद अफ़सोस कि जिन हज़रात ने देहात में जुम्आ बन्द कराने की तहरीक चलाई इससे कितने ही देहात के मुसलमान जुम्आ से इस दर्जा ग़ाफ़िल हो गए कि उनको ये भी ख़बर नहीं कि आज जुम्अ़े का दिन है। इसकी ज़िम्मेदारी उन उ़लमा पर आइद होती है। काश! ये लोग हालाते मौजूदा का जाइज़ा लेकर मफ़ादे उम्मत पर ग़ौर कर सकते।

बाब 13 :

١٣ - بَابٌ

(899) हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा कि हमसे शबाबा ने बयान किया, कहा कि हमसे वरक़ा बिन अ़म्र ने बयान किया, उनसे अ़म्र बिन दीनार ने, उनसे मुजाहिद ने, उनसे इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि औरतों को रात के वक़्त मस्जिदों में आने की इजाज़त दे दिया करो। (राजेअ़ : 865)

٨٩٩ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ حَدَّثَنَا شَبَابَةُ قَالَ حَدَّثَنَا وَرْقَاءُ عَنْ عَمْرِو بْنِ دِينَارٍ عَنْ مُجَاهِدٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((ائْذَنُوا لِلنِّسَاءِ بِاللَّيْلِ إِلَى الْمَسَاجِدِ)). [راجع: ٨٦٥]

(900) हमसे यूसुफ़ बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया कि कहा हमसे उ़बैदुल्लाह इब्ने उ़मर ने बयान किया। उनसे नाफ़ेअ़ ने, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने, उन्होंने कहा कि हज़रत उ़मर (रज़ि.) की एक बीवी थीं जो सुबह और इशा की नमाज़ जमाअ़त से पढ़ने के लिये मस्जिद में आया करती थीं। उनसे कहा गया कि बावजूद यह जानते हुए कि हज़रत उ़मर (रज़ि.) इस बात को मकरूह जानते हैं और वो ग़ैरत महसूस करते हैं फिर आप मस्जिद में क्यूँ जाती हैं। इस पर उन्होंने कहा कि

٩٠٠ - حَدَّثَنَا يُوسُفُ بْنُ مُوسَى قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ قَالَ حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عُمَرَ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: كَانَتِ امْرَأَةٌ لِعُمَرَ تَشْهَدُ صَلاَةَ الصُّبْحِ وَالْعِشَاءِ فِي الْجَمَاعَةِ فِي الْمَسْجِدِ. فَقِيلَ لَهَا: لِمَ تَخْرُجِيْنَ وَقَدْ تَعْلَمِيْنَ أَنَّ عُمَرَ يَكْرَهُ ذَلِكَ وَيَغَارُ؟ قَالَتْ: وَمَا يَمْنَعُهُ أَنْ يَنْهَانِي؟ قَالَ:

يَمنَعُهُ قَوْلُ رَسُولِ اللهِ ﷺ: ((لَا تَمنَعُوا إِمَاءَ اللهِ مَسَاجِدَ اللهِ)). [راجع: ٨٦٥]

फिर वो मुझे मना क्यूँ नहीं कर देते। लोगों ने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की उस ह़दीष़ की वजह से कि अल्लाह की बन्दियों को अल्लाह की मस्जिदों में आने से न रोको। (राजेअ़ : 865)

١٤- بَابُ الرُّخْصَةِ إِنْ لَمْ يَحْضُرِ الْجُمُعَةَ فِي الْمَطَرِ

बाब 14 : अगर बारिश हो रही हो तो जुम्अे में ह़ाज़िर होना वाजिब नहीं

٩٠١- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ: حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ الْحَمِيدِ صَاحِبُ الزِّيَادِيِّ قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ الْحَارِثِ ابْنُ عَمِّ مُحَمَّدِ بْنِ سِيرِينَ: قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ لِمُؤَذِّنِهِ فِي يَوْمٍ مَطِيرٍ: إِذَا قُلْتَ أَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللهِ فَلَا تَقُلْ: حَيَّ عَلَى الصَّلَاةِ، قُلْ: صَلُّوا فِي بُيُوتِكُمْ. فَكَأَنَّ النَّاسَ اسْتَنْكَرُوا، فَقَالَ: فَعَلَهُ مَنْ هُوَ خَيْرٌ مِنِّي، إِنَّ الْجُمُعَةَ عَزْمَةٌ، وَإِنِّي كَرِهْتُ أَنْ أُخْرِجَكُمْ فَتَمْشُونَ فِي الطِّينِ وَالدَّحْضِ. [راجع: ٦١٦]

(901) हमसे मुसद्दद बिन मुसरहद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे इस्माईल बिन अ़लिया ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें स़ाहिबुज़्ज़ियादी अ़ब्दुल ह़मीद ने ख़बर दी, कहा कि हमसे मुह़म्मद बिन सीरीन के चचाज़ाद भाई अ़ब्दुल्लाह बिन ह़ारिष़ ने बयान किया, कि अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने अपने मुअज़्ज़िन को एक बार बारिश के दिन कहा कि 'अशहदुअन्ना मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह' के बाद ह़य्या अ़लस़्स़लाह (नमाज़ की तरफ़ आओ) न कहना बल्कि ये कहना 'स़ल्लू फ़ी बुयुतिकुम' (अपने घरों में नमाज़ पढ़ लो) लोगों ने इस बात पर ता'ज्जुब किया तो आपने फ़र्माया कि इसी त़रह़ मुझसे बेहतर इंसान (रसूलुल्लाह (ﷺ) ने किया था। बेशक जुम्आ फ़र्ज़ है और मैं मकरूह जानता हूँ कि तुम्हें घरों से बाहर निकालकर मिट्टी और कीचड़ फिसलान में चलाऊँ। (राजेअ़ : 616)

तश्रीह : ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) का ये मत़लब था कि बेशक जुम्आ फ़र्ज़ है मगर ह़ालते बारिश में ये अ़ज़ीमत रुख़्स़त से बदल जाती है। लिहाज़ा क्यूँ न इस रुख़्स़त से तुमको फ़ायदा पहुँचाऊँ कि तुम कीचड़ में फिसलने और बारिश में भीगने से बच जाओ।

١٥- بَابُ مِنْ أَيْنَ تُؤْتَى الْجُمُعَةُ، وَعَلَى مَنْ تَجِبُ؟

बाब 15 : जुम्अे के लिये कितनी दूर वालों को आना चाहिये और किन लोगों पर जुम्आ वाजिब है?

لِقَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿إِذَا نُودِيَ لِلصَّلَاةِ مِنْ يَوْمِ الْجُمُعَةِ﴾ [سُورَةُ الْجُمُعَةِ: ٩].

وَقَالَ عَطَاءٌ: إِذَا كُنْتَ فِي قَرْيَةٍ جَامِعَةٍ فَنُودِيَ بِالصَّلَاةِ مِنْ يَوْمِ الْجُمُعَةِ فَحَقٌّ عَلَيْكَ أَنْ تَشْهَدَهَا، سَمِعْتَ النِّدَاءَ أَوْ لَمْ

क्योंकि अल्लाह तआ़ला का (सूरह जुम्आ में) इर्शाद है 'जब जुम्अे के दिन नमाज़ के लिये अज़ान हो (तो अल्लाह का ज़िक्र की तरफ़ दौड़ो) अ़त़ा बिन रिबाह़ ने कहा कि जब तुम ऐसी बस्ती में हो जहाँ जुम्आ हो रहा हो और जुम्अे के दिन नमाज़ के लिये अज़ान दी जाए तो तुम्हारे लिये जुम्अे की नमाज़ पढ़ने आना वाजिब है। अज़ान सुनी हो या न सुनी हो। और ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.)

طِيبٍ، ثُمَّ رَاحَ وَلَمْ يُفَرِّقْ بَيْنَ اثْنَيْنِ فَصَلَّى مَا كُتِبَ لَهُ، ثُمَّ إِذَا خَرَجَ الإِمَامُ أَنْصَتَ، غُفِرَ لَهُ مَا بَيْنَهُ وَبَيْنَ الْجُمُعَةِ الأُخْرَى)). [راجع: ٨٨٣]

और जितनी उसकी क़िस्मत में थी, नमाज़ पढ़ी, फिर जब इमाम बाहर आया और ख़ुत्बा शुरू किया तो ख़ामोश हो गया, उसके उस जुम्अ़े में से दूसरे जुम्अ़े तक के तमाम गुनाह बख़्श दिए जाएँगे। (राजेअ़ : 883)

तश्रीह : आदाबे जुम्आ में से ज़रूरी अदब है कि आने वाला निहायत ही अदब व मतानत के साथ जहाँ जगह पाए बैठ जाए। किसी की गर्दन फलाँगकर आगे न बढ़ें क्योंकि ये शरअ़न मम्नूअ और मअ़यूब है। इससे ये भी वाज़ेह हो गया कि शरीअ़ते इस्लामी में किसी को तकलीफ़ देना ख़्वाह वो तकलीफ़ बनाम इबादते नमाज़ ही में क्यूँ न हों। वो अल्लाह के नज़दीक गुनाह है। इसी मज़्मून की अगली ह़दीष़ में मज़ीद तफ़्सील आ रही है।

٢٠- بَابُ لاَ يُقِيمُ الرَّجُلُ أَخَاهُ يَوْمَ الْجُمُعَةِ وَيَقْعُدُ فِي مَكَانِهِ

बाब 20 : जुम्अ़े के दिन किसी मुसलमान भाई को उसकी जगह से उठाकर खुद वहाँ न बैठे

٩١١- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ قَالَ: أَخْبَرَنَا مَخْلَدُ بْنُ يَزِيدَ قَالَ: أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ قَالَ: سَمِعْتُ نَافِعًا قَالَ: سَمِعْتُ ابْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا يَقُولُ: ((نَهَى النَّبِيُّ ﷺ أَنْ يُقِيمَ الرَّجُلُ أَخَاهُ مِنْ مَقْعَدِهِ وَيَجْلِسَ فِيهِ)). قُلْتُ لِنَافِعٍ: الْجُمُعَةَ؟ قَالَ: الْجُمُعَةَ وَغَيْرَهَا.

[طرفاه في : ٦٢٦٩، ٦٢٧٠].

(911) हमसे मुहम्मद बिन सलाम बैकुन्दी (रह़.) ने बयान किया, कहा कि हमें मुख़्लद बिन यज़ीद ने ख़बर दी, कहा कि हमें इब्ने जुरैज ने ख़बर दी, कहा कि मैंने नाफ़ेअ़ से सुना, उन्होंने कहा मैंने ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) से सुना, उन्होंने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने इससे मना किया है कि कोई शख़्स अपने मुसलमान भाई को उठाकर उसकी जगह ख़ुद बैठ जाए। मैंने नाफ़ेअ़ से पूछा कि क्या ये जुम्अ़े के लिये है तो उन्हों ने जवाब दिया कि जुम्अ़े और ग़ैर जुम्आ सबके लिये यही हुक्म है। (दीगर मक़ाम : 6269, 6270)

ता'ज्जुब है उन लोगों पर जो अल्लाह की मसाजिद यहाँ तक कि का'बा मुअ़ज्ज़मा और मदीनतुल मुनव्वरा में ष़वाब के लिये दौड़ते हैं और दूसरों को तकलीफ़ पहुँचाकर उनकी जगह पर क़ब्ज़ा करते हैं। बल्कि कुछ मर्तबा झगड़ा–फ़साद तक नौबत पहुँचाकर फिर वहाँ नमाज़ पढ़ते और अपने नफ़्स को ख़ुश करते हैं कि वो इबादते इलाही कर रहे हैं। उनको मा'लूम होना चाहिये कि उन्होंने इबादत का सह़ी मफ़हूम नहीं समझा बल्कि कुछ नमाज़ी तो ऐसे हैं कि उनको ह़क़ीक़ते इबादत का पता नहीं है। **'अल्लाहुम्मर्हम अ़ला उम्मति ह़बीबिक (ﷺ)'**

यहाँ मौलाना वह़ीदुज़्ज़माँ मरहूम फ़र्माते हैं कि मस्जिद अल्लाह की है। किसी के बाबा–दादा की मिल्कियत नहीं जो नमाज़ी पहले आया और किसी जगह बैठ गया वही उसी जगह का ह़क़दार है। अब बादशाह या वज़ीर भी आए तो उसको उठाने का ह़क़ नहीं रखता। (वह़ीदी)

٢١- بَابُ الأَذَانِ يَوْمَ الْجُمُعَةِ

बाब 21 : जुम्अ़े के दिन अज़ान का बयान

٩١٢- حَدَّثَنَا آدَمُ قَالَ : حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي ذِئْبٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنِ السَّائِبِ بْنِ يَزِيدَ قَالَ: ((كَانَ النِّدَاءُ يَوْمَ الْجُمُعَةِ أَوَّلُهُ إِذَا

(912) हमसे आदम ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे इब्ने अबी ज़िब ने ज़ुह्री के वास्ते से बयान किया, उनसे साइब बिन यज़ीद ने कि नबी करीम (ﷺ) और ह़ज़रत अबूबक्र और ह़ज़रत

جَلَسَ الإِمَامُ عَلَى الْمِنبَرِ عَلَى عَهْدِ النَّبِيِّ ﷺ وَأَبِي بَكْرٍ وَعُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا. فَلَمَّا كَانَ عُثْمَانُ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ. وَكَثُرَ النَّاسُ - زَادَ النِّدَاءَ الثَّالِثَ عَلَى الزَّوْرَاءِ قَالَ أَبُو عَبْدِ اللهِ الزَّوْرَاءُ مَوْضِعٌ بِالسُّوقِ بِالْمَدِينَةِ. [أطرافه في: ٩١٣، ٩١٥، ٩١٦].

उ़मर (रज़ि.) के ज़माने में जुम्अे की पहली अज़ान उस वक़्त दी जाती थी जब इमाम मिम्बर पर ख़ुत्बा के लिये बैठते लेकिन हज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) के ज़माने में जब मुसलमानों की कष़रत हो गई तो वो मुक़ामे ज़ौरा से एक और अज़ान दिलवाने लगे। अबू अ़ब्दुल्लाह इमाम बुख़ारी (रह.) फ़र्माते हैं कि ज़ौरा मदीना के बाज़ार में एक जगह है। (दीगर मक़ाम : 913, 915, 916)

तश्रीह : मा'लूम हुआ कि असल अज़ाने जुम्आ वही थी जो आँहज़रत (ﷺ) और शैख़ेन के मुबारक ज़मानों में इमाम के मिम्बर पर आने के वक़्त दी जाती थी। बाद में हज़रत उ़ष्मान ग़नी (रज़ि.) ने लोगों को आगाह करने के लिये बाज़ार में एक अज़ान का और इज़ाफ़ा कर दिया ताकि वक़्त से लोग जुम्आ के लिये तैयार हो सकें। हज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) की त़रह़ बवक़्ते ज़रूरत मस्जिद से बाहर किसी मुनासिब जगह पर ये अज़ान अगर अब भी दी जाए तो जाइज़ है मगर जहाँ ज़रूरत न हो वहाँ सुन्नत के मुताबिक़ सिर्फ़ ख़ुत्बा ही के वक़्त ख़ूब आवाज़ से एक ही अज़ान देनी चाहिये।

٢٢- بَابُ الْمُؤَذِّنِ الْوَاحِدِ يَوْمَ الْجُمُعَةِ

बाब 22 : जुम्अे के लिये एक मुअज़्ज़िन मुक़र्रर करना

٩١٣- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ قَالَ : حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ أَبِي سَلَمَةَ الْمَاجِشُونُ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنِ السَّائِبِ بْنِ يَزِيدَ : (أَنَّ الَّذِي زَادَ التَّأْذِينَ الثَّالِثَ يَوْمَ الْجُمُعَةِ عُثْمَانُ بْنُ عَفَّانَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ- حِينَ كَثُرَ أَهْلُ الْمَدِينَةِ - وَلَمْ يَكُنْ لِلنَّبِيِّ ﷺ مُؤَذِّنٌ غَيْرَ وَاحِدٍ، وَكَانَ التَّأْذِينُ يَوْمَ الْجُمُعَةِ حِينَ يَجْلِسُ الإِمَامُ) يَعْنِي عَلَى الْمِنبَرِ.
[راجع: ٩١٢]

(913) हमसे अबू नुऐ़म फ़ज़्ल बिन दुकैन ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अबू सलमा माजिशून ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे ज़ुहरी ने बयान किया, उनसे साइब बिन यज़ीद ने कि जुम्अे में तीसरी अज़ान हज़रत उ़ष्मान बिन अ़फ़्फ़ान (रज़ि.) ने बढ़ाई जबकि मदीना में लोग ज़्यादा हो गए थे जबकि नबी करीम (ﷺ) के एक ही मुअज़्ज़िन थे। (आप (ﷺ) के दौर में) जुम्अे की अज़ान उस वक़्त दी जाती थी जब इमाम मिम्बर पर बैठता।

(राजेअ : 912)

इससे उन लोगों का रद्द हुआ जो कहते हैं कि आँहज़रत (ﷺ) जब मिम्बर पर जाते तो तीन मुअज़्ज़िन एक के बाद एक अज़ान देते। एक मुअज़्ज़िन का मत़लब ये है कि जुम्अे की अज़ान ख़ास़, एक मुअज़्ज़िन हज़रत बिलाल (रज़ि.) ही दिया करते थे वरना वैसे तो ज़मान-ए-नबवी में कई मुअज़्ज़िन मुक़र्रर थे जो बारी-बारी अपने वक़्तों पर अज़ान दिया करते थे।

٢٣- بَابُ يُجِيبُ الإِمَامُ عَلَى الْمِنبَرِ إِذَا سَمِعَ النِّدَاءَ

बाब 23 : इमाम मिम्बर पर बैठे बैठे अज़ान सुनकर उसका जवाब दे

٩١٤- حَدَّثَنَا ابْنُ مُقَاتِلٍ قَالَ: أَخْبَرَنَا

(914) हमसे मुहम्मद बिन मुक़ातिल ने बयान किया, उन्होंने

लिसुन्नतिर्रातिबति व अदबिल्ख़ुत्बति जमीअन बिक़दरिल्इम्कानि व ला तग़तर फी हाज़िहिल्मस्अलति बिमा यल्हजु बिही अहलु बलदिक फइन्नल्हदीष़ स़हीहुन वाजिबुन इत्तिबाउहू' (हुज्जतुल्लाहिल बालिग़ा : जिल्द नं. 2, पेज नं. 101) या'नी जब कोई नमाज़ी ऐसे ह़ाल में मस्जिद में आए कि इमाम ख़ुत्बा दे रहा हो तो दो हल्की रकअ़त पढ़ ले ताकि सुन्नते रातिबा और अदबे ख़ुत्बा दोनों की रिआ़यत हो सके और इस मसले के बारे में तुम्हारे शहर के लोग जो शोर करते हैं (और इन रकअ़तों के पढ़ने से रोकते हैं, उनके धोखे में न आना क्योंकि इस मसले के ह़क़ में ह़दीष़े स़हीह़ वारिद है जिसकी इत्तेबा (पैरवी) वाजिब है, वबिल्लाहित्तौफ़ीक़।

बाब 34 : ख़ुत्बा में दोनों हाथ उठाकर दुआ माँगना

٣٤– بَابُ رَفْعِ الْيَدَيْنِ فِي الْخُطْبَةِ

(932) हमसे मुसद्दद बिन मुस्रहद ने बयान किया, कहा कि हमसे ह़म्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अनस ने बयान किया, उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने, (दूसरी सनद) और ह़म्माद ने यूनुस से भी रिवायत की अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ और यूनुस दोनों ने ष़ाबित से, उन्होंने अनस (रज़ि.) से कि नबी करीम (ﷺ) जुम्अ़े का ख़ुत्बा दे रहे थे कि एक शख़्स खड़ा हो गया और कहने लगा या रसूलल्लाह (ﷺ)! मवेशी और बकरियाँ हलाक हो गईं (बारिश न होने की वजह से) आप (ﷺ) दुआ फ़र्माएँ कि अल्लाह तआ़ला बारिश बरसाए। चुनाँचे आप (ﷺ) ने दोनों हाथ फैलाए और दुआ की।

(दीगर मक़ाम : 933, 1013, 1014, 1015, 1016, 1017, 1018, 1019, 1021, 1029, 1033, 3582, 6093, 6342)

٩٣٢– حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ: حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ عَبْدِ الْعَزِيْزِ عَنْ أَنَسٍ، وَعَنْ يُونُسَ عَنْ ثَابِتٍ بْنِ أَنَسٍ قَالَ: ((بَيْنَمَا النَّبِيُّ ﷺ يَخْطُبُ يَوْمَ الْجُمُعَةِ إِذْ قَامَ رَجُلٌ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ هَلَكَ الْكُرَاعُ هَلَكَ الشَّاءُ، فَادْعُ اللهَ أَنْ يَسْقِيَنَا. فَمَدَّ يَدَيْهِ وَدَعَا)).

[أطرافه في : ٩٣٣، ١٠١٣، ١٠١٤، ١٠١٥، ١٠١٦، ١٠١٧، ١٠١٨، ١٠١٩، ١٠٢١، ١٠٢٩، ١٠٣٣، ٣٥٨٢، ٦٠٩٣، ٦٣٤٢].

बाब 35 : जुम्अ़े के ख़ुत्बे में बारिश के लिये दुआ करना

٣٥– بَابُ الاِسْتِسْقَاءِ فِي الْخُطْبَةِ يَوْمَ الْجُمُعَةِ

933. हमसे इब्राहीम बिन मुन्ज़िर ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे वलीद बिन मुस्लिम ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे इमाम अबू अ़म्र औज़ाई ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे इस्हाक़ बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अबी त़लहा (रज़ि.) ने बयान किया, उनसे ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि एक मर्तबा नबी करीम (ﷺ) के ज़माने में क़हत (अकाल) पड़ा, आप (ﷺ) ख़ुत्बा दे रहे थे कि एक देहाती ने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! जानवर मर गये और अहलो–अ़याल दानों को तरस गये। आप हमारे लिये अल्लाह तआ़ला से दुआ फ़र्माएँ। आप (ﷺ) ने दोनों

٩٣٣– حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيْمُ بْنُ الْمُنْذِرِ قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيْدِ قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو عَمْرٍو قَالَ حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ قَالَ: أَصَابَتِ النَّاسَ سَنَةٌ عَلَى عَهْدِ النَّبِيِّ ﷺ فَبَيْنَمَا النَّبِيُّ ﷺ يَخْطُبُ فِي يَوْمِ الْجُمُعَةِ قَامَ أَعْرَابِيٌّ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ، هَلَكَ الْمَالُ، وَجَاعَ الْعِيَالُ، فَادْعُ اللهَ لَنَا. ((فَرَفَعَ

يَدَيْهِ)) – وَمَا نَرَى فِي السَّمَاءِ قَزَعَةً – فَوَ الَّذِيْ نَفْسِيْ بِيَدِهِ مَا وَضَعَهَا حَتَّى ثَارَ السَّحَابُ أَمْثَالَ الْجِبَالِ، ثُمَّ لَمْ يَنْزِلْ عَنْ مِنْبَرِهِ حَتَّى رَأَيْتُ الْمَطَرَ يَتَحَادَرُ عَلَى لِحْيَتِهِ ﷺ. فَمُطِرْنَا يَوْمَنَا ذَلِكَ، وَمِنَ الْغَدِ، وَبَعْدَ الْغَدِ، وَالَّذِي يَلِيْهِ حَتَّى الْجُمُعَةِ الأُخْرَى.

हाथ उठाए, बादल का एक टुकड़ा भी आसमान पर नज़र नहीं आ रहा था। उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है, अभी आप (ﷺ) ने हाथों को नीचे भी नहीं किया था कि पहाड़ों की तरह घटा उमड़ आई और आप (ﷺ) अभी मिम्बर से उतरे भी नहीं थे कि मैंने देखा कि बारिश का पानी आप (ﷺ) की रीशे मुबारक से टपक रहा था। उस दिन उसके बाद और लगातार अगले जुम्अे तक बारिश होती रही।

فَقَامَ ذَلِكَ الأَعْرَابِيُّ – أَوْ قَالَ غَيْرُهُ – فَقَالَ: يَا رَسُوْلَ اللهِ تَهَدَّمَ الْبِنَاءُ، وَغَرِقَ الْمَالُ، فَادْعُ اللهَ لَنَا. فَرَفَعَ يَدَيْهِ فَقَالَ: ((اللَّهُمَّ حَوَالَيْنَا وَلاَ عَلَيْنَا)). فَمَا يُشِيْرُ بِيَدِهِ إِلَى نَاحِيَةٍ مِنَ السَّحَابِ إِلاَّ انْفَرَجَتْ، وَصَارَتِ الْمَدِيْنَةُ مِثْلَ الْجَوْبَةِ. وَسَالَ الْوَادِي قَنَاةُ شَهْرًا، وَلَمْ يَجِيْءْ أَحَدٌ مِنْ نَاحِيَةٍ إِلاَّ حَدَّثَ بِالْجَوْدِ)).

[راجع: ٩٣٢]

(दूसरे जुम्अे को) यही देहाती फिर खड़ा हुआ या कहा कि कोई दूसरा शख़्स खड़ा हुआ और कहने लगा कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! इमारतें मुनहदिम हो गईं और जानवर डूब गए। आप (ﷺ) हमारे लिये अल्लाह से दुआ कीजिए। आप (ﷺ) ने दोनों हाथ उठाए और दुआ की कि ऐ अल्लाह! अब दूसरी तरफ़ बारिश बरसा और हमसे रोक दे। आप (ﷺ) हाथ से बादल के लिये जिस तरफ़ इशारा करते, उधर मतलअ साफ़ हो जाता। सारा मदीना तालाब की तरह बन गया था और क़नात का नाला महीना भर बहता रहा और आसपास से आने वाले भी अपने यहाँ भरपूर बारिश की ख़बर देते रहे। (राजेअ : 932)

तश्रीह : बाब और नक़लकर्दा हदीष से ज़ाहिर है कि इमाम बवक़्ते ज़रूरत जुम्अे के ख़ुत्बा में भी बारिश के लिये दुआ कर सकता है और ये भी षाबित हुआ कि किसी ऐसी अवामी ज़रूरत के लिये दुआ करने की दरख़्वास्त बहालते ख़ुत्बा इमाम से की जा सकती है और ये भी कि इमाम ऐसी दरख़्वास्त पर ख़ुत्बा ही में तवज्जह कर सकता है। जिन हज़रात ने ख़ुत्बा को नमाज़ का दर्जा देकर उसमें बवक़्ते ज़रूरत तकल्लुम को भी मना बतलाया है। इस हदीष से ज़ाहिर है कि उनका ये ख़्याल सहीह नहीं है।

अल्लामा शौकानी (रह.) इस वाक़िअे पर लिखते हैं, **'व फिल्हदीषि फवाइदुम्मिन्हा जवाज़ुल्मुकालमति मिनल्ख़तीबि हालल्ख़ुत्बति व तक्रारहुआइ व इदख़ालल्इस्तिस्काइ फी ख़ुत्बतिन वद्दुआउ बिही अलल्मिम्बरि व तर्कु तहवीलिर्रिदाई वल्इस्तिक़बालि वल्इज्तिजाइ बिसलातिल्जुम्अति अन सलातिल्इस्तिस्काइ कमा तक़द्दम व फीहि इल्मुम्मिन अलामिन्नुबुव्वति फ़ीहि इजाबतुल्लाहि तआला दुआअ नबिय्यिही व इम्तिषालस्सहाबि अम्मरहू कमा वक़अ कषीरुम्मिनर्रिवायाति व गैर ज़ालिक मिनल्फवाइदि'** (नैलुल औतार) या'नी इस हदीष से बहुत से मसाइल निकलते हैं मषलन हालते ख़ुत्बा में ख़तीब से बात करने का जवाज़ नीज़ दुआ करना (और उसके लिये हाथों को उठाकर दुआ करना) और ख़ुत्ब-ए-जुम्आ में इस्तिस्क़ाअ की दुआ और इस्तिस्क़ाअ के लिये ऐसे मौक़े पर चादर उलटने-पलटने को छोड़ देना और का'बा की ओर रुख़ भी न होना और नमाज़े जुम्आ को नमाज़े इस्तिस्क़ाअ के बदले में काफ़ी समझना। और उसमें आपकी नुबुव्वत की एक अहम दलील भी है कि अल्लाह ने आपकी दुआ क़ुबूल फ़र्माई और बादलों को आपका फ़र्मान तस्लीम करने पर मामूर फ़र्मा दिया और भी बहुत से फ़वाइद हैं। आपने किन लफ़्ज़ों में दुआ-ए-इस्तिस्क़ाअ की। इस बारे में भी कई रिवायात हैं जिनमें जामेअ दुआएँ ये है, **'अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिलआलमीनर्रहमानिर्रहीम मालिकि यौमिद्दीन ला इलाहा इल्लल्लाहु यफ़्अलुल्लाहु मा युरीदु अल्लाहुम्मा अन्त अल्लाह ला इलाहा इल्लाअन्त अन्तल्गनी व नहनुल्फ़ुक़राउ अन्ज़िल अलैनल्गैष मा अन्ज़ल्त लना क़ुव्वतन व बलागन इला हीन**

अल्लाहुम्मस्किना गैष़न मुग़ीष़न मरीअन मरीअन तबक़न गदकन आज़िलन ग़ैर राइष़िन अल्लाहुम्म अस्क़ी इबादक व बहाइमक वन्शुर रहमतक वहइ बलदकल्मय्यत' ये भी मशरूअ अम्र है कि ऐसे मौक़ों पर अपने में से किसी नेक बुज़ुर्ग को दुआ के लिये आगे किया जाए और वो अल्लाह से रो–रोकर दुआ करे और लोग पीछे से आमीन–आमीन कहकर गिरया व ज़ारी के साथ अल्लाह से पानी का सवाल करें।

बाब 36 : जुम्अे के दिन ख़ुत्बा के वक़्त चुप रहना

٣٦- بَابُ الإِنْصَاتِ يَومَ الْجُمُعَةِ وَالإِمَامُ يَخْطُبُ

और ये भी लग़्व हरकत है कि अपने पास बैठे हुए शख़्स से कोई कहे कि 'चुप रह' सलमान फ़ारसी (रज़ि.) ने भी नबी करीम (ﷺ) से नक़ल किया कि इमाम जब ख़ुत्बा शुरू करे तो ख़ामोश हो जाना चाहिये।

وَإِذَا قَالَ لِصَاحِبِهِ أَنْصِتْ فَقَدَ لَغَا. وَقَالَ سَلْمَانُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((يَنْصِتُ إِذَا تَكَلَّمَ الإِمَامُ)).

(934) हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा कि हमसे लैष़ बिन सअद ने अ़क़ील से बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उन्होंने कहा कि मुझे सईद बिन मुसय्यिब ने ख़बर दी और उन्हें अबू हुरैरह (रज़ि.) ने ख़बर दी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि जब इमाम ख़ुत्बा दे रहा हो और तू अपने पास बैठे हुए आदमी से कहे कि 'चुप रह' तो तूने ख़ुद एक लग़्व ह़रकत की।

٩٣٤- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي سَعِيْدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ أَخْبَرَهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((إِذَا قُلْتَ لِصَاحِبِكَ يَومَ الْجُمُعَةِ: أَنْصِتْ - وَالإِمَامُ يَخْطُبُ - فَقَدْ لَغَوْتَ)).

बाब 37 : जुम्अे के दिन वो घड़ी जिसमें दुआ क़ुबूल होती है

٣٧- بَابُ السَّاعَةِ الَّتِي فِي يَومِ الْجُمُعَةِ

(935) हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मस्लमा क़अ़म्बी ने इमाम मालिक (रह़.) से बयान किया, उनसे अबुज़्ज़िनाद ने, उनसे अ़ब्दुर्रहमान अअ़रज ने, उनसे अबू हुरैरह (रज़ि .) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने जुम्अे के ज़िक्र में एक बार फ़र्माया कि इस दिन एक ऐसी घड़ी आती है जिसमें अगर कोई मुसलमान बन्दा खड़ा नमाज़ पढ़ रहा हो और कोई चीज़ अल्लाह पाक से मांग रहा हो तो अल्लाह पाक उसे वो चीज़ ज़रूर देता है। हाथ के इशारे से आपने बतलाया कि वो साअ़त बहुत थोड़ी सी है। (दीगर मक़ाम : 5294, 6400)

٩٣٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنْ مَالِكٍ عَنْ أَبِي الزِّنَادِ عَنْ الأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ ذَكَرَ يَومَ الْجُمُعَةِ فَقَالَ: ((فِيْهِ سَاعَةٌ لاَ يُوَافِقُهَا عَبْدٌ مُسْلِمٌ وَهُوَ قَائِمٌ يُصَلِّي يَسْأَلُ اللهَ شَيْئًا إِلاَّ أَعْطَاهُ إِيَّاهُ)) وَأَشَارَ بِيَدِهِ يُقَلِّلُهَا.

[طرفاه في : ٥٢٩٤، ٦٤٠٠].

तश्रीह : इस घड़ी की तअ़य्युन (निर्धारण) में इख़्तिलाफ़ है कि ये घड़ी किस वक़्त आती है कुछ रिवायत में इसके लिये वो वक़्त बतलाया गया है जब इमाम नमाज़े जुम्आ शुरू करता है। गोया नमाज़ ख़त्म होने तक बीच में ये घड़ी आती है कुछ रिवायात में तुलूअे फ़ज्र से उसका वक़्त बतलाया गया है। कुछ रिवायात में अ़स्र से मग़्रिब तक का वक़्त बतलाया गया है। ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़जर (रह़.) फ़त्हुल बारी में बहुत तफ़्सील के साथ इन सारी रिवायात पर रोशनी डाली है और इस बारे

बाब 4 : ईदुल फ़ितर में नमाज़ के लिये जाने से पहले कुछ खा लेना

٤- بَابُ الأَكْلِ يَوْمَ الْفِطْرِ قَبْلَ الْخُرُوجِ

953. हमसे मुहम्मद बिन अ़ब्दुर्रहीम ने बयान किया कि हम को सईद बिन सुलैमान ने ख़बर दी कि हमें हुशैम बिन बशीर ने ख़बर दी, कहा कि हमें अ़ब्दुल्लाह बिन अबीबक्र बिन अनस ने ख़बर दी और उन्हें अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने, आपने बतलाया कि रसूले-करीम (ﷺ) ईदुल-फ़ितर के दिन न निकलते जब तक कि आप (ﷺ) चन्द खजूर न खा लेते और मुरजी बिन रजाअ ने कहा कि मुझ से उ़बैदुल्लाह बिन अबीबक्र ने बयान किया, कहा कि मुझ से अनस (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से, फिर यही हदीष़ बयान की कि आप ताक़ अदद खजूरें खाते थे।

٩٥٣- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحِيْمِ أَخْبَرَنَا سَعِيْدُ بْنُ سُلَيْمَانَ قَالَ: حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ قَالَ : أَخْبَرَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ أَبِي بَكْرِ بْنِ أَنَسٍ عَنْ أَنَسٍ قَالَ: ((كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ لاَ يَغْدُو يَوْمَ الْفِطْرِ حَتَّى يَأْكُلَ تَمَرَاتٍ)). وَقَالَ مُرَجَّا بْنُ رَجَاءٍ حَدَّثَنِي عُبَيْدُ اللهِ بْنِ أَبِيْ بَكْرٍ قَالَ: حَدَّثَنِي أَنَسٌ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((يَأْكُلُهُنَّ وِتْرًا)).

मा'लूम हुआ कि ईदुल फ़ित्र में नमाज़ के लिये निकलने से पहले चंद खजूरें अगर मयस्सर हों तो खा लेना सुन्नत है।

बाब 5 : बक़र ईद के दिन खाना

٥ - بَابُ الأَكْلِ يَوْمَ النَّحْرِ

इस बाब में हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने वो साफ़ हदीष़ न ला सके जो इमाम अहमद व तिर्मिज़ी (रह.) ने रिवायत की है कि बक़र ईद के दिन आप(ﷺ) लौटकर अपनी क़ुर्बानी में से खाते। वो हदीष़ भी थी मगर उन शराइत के मुताबिक़ न थी जो हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) के शराइत हैं, इसलिये आप (रह.) उसको न ला सके।

945. हमसे मुसद्दद बिन मुस्रहद ने बयान किया, कहा कि हमसे इस्माईल बिन अ़ला ने अय्यूब सुख़ितयानी से, उन्होंने मुहम्मद बिन सीरीन से बयान किया, उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि जो शख़्स नमाज़ से पहले क़ुर्बानी कर दे उसे दोबारा क़ुर्बानी करनी चाहिये। इस पर एक शख़्स (अबू बुर्दा) ने खड़े होकर कहा कि ये ऐसा दिन है जिस दिन गोश्त की ख़्वाहिश ज़्यादा होती है और उसने अपने पड़ौसियों की तंगी का बयान किया। नबी करीम (ﷺ) ने उसको सच्चा समझा, उस शख़्स ने कहा कि मेरे पास एक साल की पठिया है जो गोश्त की दो बकरियों से भी मुझे ज़्यादा प्यारी है। नबी करीम (ﷺ) ने इस पर उसे इजाज़त दे दी कि वही क़ुर्बानी करे। अब मुझे मा'लूम नहीं कि ये इजाज़त दूसरों के लिये भी है या नहीं।

(दीगर मक़ामात : 984, 5546, 5549, 5561)

٩٥٤- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ: حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيْلُ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ سِيْرِيْنَ عَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَنْ ذَبَحَ قَبْلَ الصَّلاَةِ فَلْيُعِدْ)). فَقَامَ رَجُلٌ فَقَالَ: هَذَا يَوْمٌ يُشْتَهَى فِيْهِ اللَّحْمُ، وَذَكَرَ مِنْ جِيْرَانِهِ، فَكَأَنَّ النَّبِيَّ ﷺ صَدَّقَهُ، قَالَ: وَعِنْدِي جَذَعَةٌ أَحَبُّ إِلَيَّ مِنْ شَاتَيْ لَحْمٍ. فَرَخَّصَ لَهُ النَّبِيُّ ﷺ، فَلاَ أَدْرِي أَبَلَغَتِ الرُّخْصَةُ مَنْ سِوَاهُ أَمْ لاَ.

[أطرافه في: ٩٨٤، ٥٥٤٦، ٥٥٤٩، ٥٥٦١].

ये इजाज़त ख़ास़ अबू बुर्दा (रज़ि.) के लिये थी जैसा कि आगे आ रहा है। हज़रत अनस (रज़ि.) को उनकी ख़बर नहीं हुई इसलिये उन्होंने ऐसा कहा।

955. हमसे ज़ष्मान बिन अबी शैबा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे मन्सूर ने, उनसे शुअबी ने, उनसे बराअ बिन आज़िब (रज़ि.) ने, आपने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने ईदुल अज़्हा की नमाज़ के बाद ख़ुत्बा देते हुए फ़र्माया कि जिस शख़्स ने हमारी नमाज़ की सी नमाज़ पढ़ी और हमारी क़ुर्बानी की तरह क़ुर्बानी की उसकी क़ुर्बानी सहीह हुई। लेकिन जो शख़्स नमाज़ से पहले क़ुर्बानी करे, वो नमाज़ से पहले ही गोश्त खाता है मगर वो क़ुर्बानी नहीं। बराअ के मामूं अबू बुर्दा बिन नियार ये सुनकर बोले कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैंने अपनी बकरी की क़ुर्बानी नमाज़ से पहले कर दी, मैंने सोचा कि ये खाने-पीने का दिन है। मेरी बकरी अगर घर पर पहला ज़बीहा बने तो बहुत अच्छा हो। इस ख़याल से मैंने बकरी ज़िब्ह कर दी और नमाज़ से पहले ही उसका गोश्त भी खा लिया। इस पर आपने फ़र्माया कि फिर तुम्हारी बकरी गोश्त की बकरी हुई। अबू बुर्दा बिन नियार ने अ़र्ज़ किया कि मेरे पास एक साल की पठिया है और वो मुझे गोश्त की दो बकरियों से भी अ़ज़ीज़ है। क्या उससे मेरी क़ुर्बानी हो जाएगी? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि हाँ, लेकिन तुम्हारे बाद किसी की क़ुर्बानी इस उम्र के नीचे से नाकाफ़ी होगी।

(राजेअ : 951)

٩٥٥ - حَدَّثَنَا عُثْمَانُ قَالَ: حَدَّثَنَا جَرِيْرٌ عَنْ مَنْصُورٍ عَنِ الشَّعْبِيِّ عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: خَطَبَنَا النَّبِيُّ ﷺ يَومَ الأَضْحَى بَعْدَ الصَّلاَةِ فَقَالَ: ((مَنْ صَلَّى صَلاَتَنَا وَنَسَكَ نُسُكَنَا فَقَدْ أَصَابَ النُّسُكَ، وَمَنْ نَسَكَ قَبْلَ الصَّلاَةِ فَإِنَّهُ قَبْلَ الصَّلاَةِ وَلاَ نُسُكَ لَهُ)). فَقَالَ أَبُو بُرْدَةَ بْنُ نِيَارٍ خَالُ الْبَرَاءِ: يَا رَسُولَ اللهِ فَإِنِّي نَسَكْتُ شَاتِي قَبْلَ الصَّلاَةِ وَعَرِفْتُ أَنَّ الْيَومَ يَومُ أَكْلٍ وَشُرْبٍ، وَأَحْبَبْتُ أَنْ تَكُونَ شَاتِي أَوَّلَ شَاةٍ تُذْبَحُ فِي بَيْتِي، فَذَبَحْتُ شَاتِي وَتَغَدَّيْتُ قَبْلَ أَنْ آتِيَ الصَّلاَةَ. قَالَ: ((شَاتُكَ شَاةُ لَحْمٍ)). قَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ فَإِنَّ عِنْدَنَا عَنَاقًا لَنَا جَذَعَةً أَحَبُّ إِلَيَّ مِنْ شَاتَيْنِ أَفَتَجْزِي عَنِّي؟ قَالَ: ((نَعَمْ. وَلَنْ تَجْزِيَ عَنْ أَحَدٍ بَعْدَكَ)).

[راجع: ٩٥١]

तश्रीह: क्योंकि क़ुर्बानी में मुसन्ना बकरी ज़रूरी है जो दूसरे साल में हो और दाँत निकाल चुकी हो। बग़ैर दाँत निकाले बकरी क़ुर्बानी के लायक़ नहीं होती। अ़ल्लामा शौकानी (रह़.) नैलुल औतार में इस ह़दीष़ की शरह़ में फ़र्माते हैं, **'क़ौलुहू अल्मुसन्नतु कालल्उलमाउ अल्मुसुन्नतु हियष़्ष़निय्यतु मिन कुल्लि शैइन मिनल्इबिलि वल्बक़रि वल्गनमि फमा फौक़हा'** मस्जिद में है, **'अष़्ष़नियतु जम्उहू षनाया वहिय इस्नानि मुक़द्दमुल्फमि षनतानि मिन फौक़िन व षनतानि मिन अस्फल'** या'नी ष़नाया के सामने के ऊपर–नीचे के दाँत को कहते हैं। इस लिहाज़ से ह़दीष़ के ये मा'नी होते हैं दाँत वाले जानवरों को क़ुर्बानी करो। इससे लाज़िम यही नतीजा निकला कि खीरे की क़ुर्बानी न करो इसलिये एक रिवायत में है, **'युन्फा मिनज़्ज़हाया अल्लती लम तुसन्निन'** क़ुर्बानी के जानवरों में से वो जानवर निकाल डाला जाएगा जिसके दाँत न उगे होंगे, अगर मजबूरी की ह़ालत में मुसन्ना न मिले मुश्किल व दुश्वार हो तो **जिज़्अतुम मिनज़्ज़ान्न** भी कर सकते हैं। जैसा कि इसी ह़दीष़ के आख़िर में आप (ﷺ) ने फ़र्माया, **'इल्ला अय्यअ़स्रि अ़लैकुम फतज़्बहू जिज़्अतम्मिनज़्ज़ानि लुगातुल्हदीष़'** में लिखा है कि पांचवें बरस में जो ऊँट लगा हो और दूसरे बरस में जो गाय–बकरी लगी हो और चौथे बरस में जो घोड़ा लगा हो। कुछ ने कहा जो गाय तीसरे बरस में लगी हो, जो भेड़ एक बरस की हो गई। जैसा कि ह़दीष़ में है,

'ज़हैना मिन रसूलिल्लाहि (ﷺ) बिल्जिज़्इ मिनज़्ज़ानि वष़्ष़निय्यि मिनल्मअ़ज़ि' हमने आँह़ज़रत (ﷺ) के साथ एक बरस की भेड़ और दो बरस की (जो तीसरे में लगी हैं) बकरी क़ुर्बानी की और तफ़्सीर इब्ने कष़ीर में है कि बकरी ष़न्ना वो है कि जो दो साल गुज़ार चुकी हो और जिज़्आ उसको कहते हैं जो साल भर का हो गया हो।

कि हमसे अबू उसामा हम्माद बिन अबू उसामा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अ़ब्दुल्लाह ने नाफ़ेअ से बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ईदैन की नमाज़ ख़ुत्बे से पहले पढ़ा करते थे।

(राजेअ : 957)

حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ قَالَ: حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: ((كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَأَبُوبَكْرٍ وَعُمَرُ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا يُصَلُّونَ الْعِيْدَيْنِ قَبْلَ الْخُطْبَةِ)).

[راجع: ٩٥٧]

964. हमसे सुलैमान बिन ह़र्ब ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने, उन्होंने अ़दी बिन ष़ाबित से, उन्होंने सईद बिन जुबैर से, उन्होंने इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से कि आँहज़रत (ﷺ) ने ईदुल फ़ित्र के दिन दो रकअ़तें पढ़ीं न उनसे पहले कोई नफ़्ल पढ़ा न उनके बाद, फिर (ख़ुत्बा पढ़कर) आप औ़रतों के पास आए और बिलाल आप के साथ थे। आपने औ़रतों से फ़र्माया, ख़ैरात करो। वो ख़ैरात देने लगीं, कोई अपनी बाली पेश करने लगी कोई अपना हार देने लगी।

(राजेअ : 98)

٩٦٤- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَدِيٍّ بْنِ ثَابِتٍ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ: ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ صَلَّى يَوْمَ الْفِطْرِ رَكْعَتَيْنِ لَمْ يُصَلِّ قَبْلَهَا وَلاَ بَعْدَهَا. ثُمَّ أَتَى النِّسَاءَ وَمَعَهُ بِلاَلٌ، فَأَمَرَهُنَّ بِالصَّدَقَةِ، فَجَعَلْنَ يُلْقِيْنَ، تُلْقِي الْمَرْأَةُ خُرْصَهَا وَسِخَابَهَا)).

[راجع: ٩٨]

965. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया कि हमसे शुअ़बा ने बयान किया, कहा कि हमसे ज़ैद ने बयान किया, कहा कि मैंने शुअ़बी से सुना, उनसे बराअ बिन आ़ज़िब (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि हम इस दिन पहले नमाज़ पढ़ेंगे फिर ख़ुत्बा देने के बाद वापस होकर क़ुर्बानी करेंगे। जिसने इस त़रह किया उसने हमारी सुन्नत के मुताबिक़ अ़मल किया और जिसने नमाज़ से पहले क़ुर्बानी की तो उसका ज़बीहा गोश्त का जानवर है, जिसे वो घरवालों के लिये लाया है। क़ुर्बानी से उसका कोई भी ता'ल्लुक़ नहीं। एक अन्सारी (रज़ि.) जिनका नाम अबू बुर्दा बिन नियार था, बोले कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैंने तो (नमाज़ से पहले ही) क़ुर्बानी करदी लेकिन मेरे पास एक साल की पठिया है जो दूँदी हुई बकरी से भी अच्छी है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया अच्छा इसी को बकरी के बदले में क़ुर्बानी कर लो और तुम्हारे बाद ये किसी और के लिये काफ़ी न होगी।

(राजेअ : 901)

٩٦٥- حَدَّثَنَا آدَمُ قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: حَدَّثَنَا زُبَيْدٌ قَالَ: سَمِعْتُ الشَّعْبِيَّ عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنَّ أَوَّلَ مَا نَبْدَأُ فِي يَوْمِنَا هَذَا أَنْ نُصَلِّيَ ثُمَّ نَرْجِعَ فَنَنْحَرَ. فَمَنْ فَعَلَ ذَلِكَ أَصَابَ سُنَّتَنَا، وَمَنْ نَحَرَ قَبْلَ الصَّلاَةِ فَإِنَّمَا هُوَ لَحْمٌ قَدَّمَهُ لأَهْلِهِ، لَيْسَ مِنَ النُّسُكِ فِي شَيْءٍ)). فَقَالَ رَجُلٌ مِنَ الأَنْصَارِ يُقَالُ لَهُ أَبُو بُرْدَةَ بْنُ نِيَارٍ: يَا رَسُولَ اللهِ ذَبَحْتُ وَعِنْدِي جَذَعَةٌ خَيْرٌ مِنْ مُسِنَّةٍ. قَالَ: ((اجْعَلْهُ مَكَانَهُ وَلَـمْ تُوفِيَ - أَوْ تَجْزِيَ - عَنْ أَحَدٍ بَعْدَكَ)). [راجع: ٩٥١]

तश्रीह : रिवायत में लफ़्ज़े अव्वल **मा नब्दउ फ़ी यौमिना हाज़ा** से बाब का तर्जुमा निकलता है क्योंकि जब पहला काम नमाज़ हुआ तो मा'लूम हुआ कि नमाज़ ख़ुत्बे से पहले पढ़नी चाहिये।

ने जो ख़लीफ़-ए-वक़्त था, ने हज्जाज को ये कहला भेजा था कि अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) की इताअ़त करता रहे। ये अम्र उस मरदूद पर शाक गुज़रा और उसने चुपके से एक शख़्स को इशारा कर दिया। उसने ज़हर आलूद बर्छा अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) के पांव में घुसेड़ दिया। ख़ुद ही तो ये शरारत की और ख़ुद ही क्या मिस्कीन बनकर अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) की इयादत को आया? वाह रे मक्कार! अल्लाह को क्या जवाब देगा। आख़िर अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने जो अल्लाह के बड़े मक़्बूल बन्दे और बड़े आ़लिम और आ़बिद और ज़ाहिद और सहाबी-ए-रसूल (ﷺ) थे, उनका फ़रेब पहचान लिया और फ़र्माया कि तुमने ही तो मारा है और तू ही कहता है हम मुजरिम को पा लें तो उसको सख़्त सज़ा दें,

जफ़ा कर दी वो ख़ुदकश्ती ब तेग़े ज़ुल्म मारा
बहाना में बराए पुरशिसे बीमारी आई (मौलाना वह़ीदुज़्ज़माँ मरहूम)

इससे अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि दुनियादार मुसलमानों ने किस–किस तरह से उ़लम-ए-इस्लाम को तकलीफ़ दी है फिर भी वो मर्दाने ह़क़–परस्त अम्रे ह़क़ की दा'वत देते रहे, आज भी उ़लमा को इन बुज़ुर्गों की इक़्तिदा लाज़िमी है।

बाब 10 : ईद की नमाज़ के लिये सवेरे जाना

١٠- بَابُ التَّبْكِيْرِ إِلَى الْعِيْدِ

और अ़ब्दुल्लाह बिन बुस्र सहाबी ने (मुल्के शाम में इमाम के देर से निकलने पर ए'तिराज़ किया) फ़र्माया कि हम तो नमाज़ से इस वक़्त फ़ारिग़ हो जाया करते थे। या'नी जिस वक़्त नफ़्ल नमाज़ पढ़ना दुरुस्त होता है।

وَقَالَ عَبْدُ اللهِ بْنِ بُسْرٍ : إِنْ كُنَّا فَرَغْنَا فِي هَذِهِ السَّاعَةِ. وَذَلِكَ حِيْنَ التَّسْبِيْحِ.

तश्रीह : या'नी इश्राक़ की नमाज़ मतलब ये है कि सूरज एक नेज़ा या दो नेज़ा हो जाए। बस यही ईद की नमाज़ का अफ़ज़ल वक़्त है और जो लोग ईद की नमाज़ में देर करते हैं वो बिदअ़ती हैं ख़ुसूसन ईदुल अज़्हा की नमाज़ और जल्द पढ़नी चाहिये ताकि लोग क़ुर्बानी वग़ैरह से जल्दी फ़ारिग़ हो जाएँ और सुन्नत के मुवाफ़िक़ क़ुर्बानी में से खाएँ। ह़दीष़ में है कि आँह़ज़रत (ﷺ) ईदुल फ़ित्र की नमाज़ उस वक़्त पढ़ते जब सूरज दो नेज़े बलन्द होता और ईदुल अज़्हा की नमाज़ जब एक नेज़ा बलन्द होता। (मौलाना वह़ीदुज़्ज़माँ)

968. हमसे सुलैमान बिन ह़र्ब ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअ़बा ने ज़ैद से बयान किया, उनसे शुअ़बी ने, उनसे बराअ बिन आ़ज़िब (रज़ि.) ने, उन्होंने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने क़ुर्बानी के दिन ख़ुत्बा दिया और आपने फ़र्माया कि इस दिन सबसे पहले हमें नमाज़ पढ़नी चाहिये, फिर (ख़ुत्बे के बाद) वापस आकर क़ुर्बानी करनी चाहिये, जिसने इस तरह किया उसने हमारी सुन्नत के मुताबिक़ किया और जिसने नमाज़ से पहले ज़िब्ह कर दिया तो ये एक ऐसा गोश्त होगा जिसे उसने अपने घरवालों के लिये जल्दी से तैयार कर लिया है। ये क़ुर्बानी क़त्अ़न नहीं। इस पर मेरे मामू अबू बुर्दा बिन नियार ने खड़े होकर कहा कि या रसूलल्लाह (ﷺ) ! मैंने तो नमाज़ के पढ़ने से पहले ही ज़िब्ह कर दिया। अल्बत्ता मेरे पास एक साल की एक पठिया है, जो दाँत निकली हुई बकरी से भी ज़्यादा बेहतर है। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उसके बदले मैं इसे समझ लो या ये फ़र्माया कि इसे ज़िब्ह कर लो और तुम्हारे बाद ये

٩٦٨- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ زُبَيْدٍ عَنِ الشَّعْبِيِّ عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ قَالَ: خَطَبَنَا النَّبِيُّ ﷺ يَوْمَ النَّحْرِ فَقَالَ: ((إِنَّ أَوَّلَ مَا نَبْدَأُ بِهِ فِي يَوْمِنَا هَذَا أَنْ نُصَلِّيَ، ثُمَّ نَرْجِعَ فَنَنْحَرَ، فَمَنْ فَعَلَ ذَلِكَ فَقَدْ أَصَابَ سُنَّتَنَا، وَمَنْ ذَبَحَ قَبْلَ أَنْ يُصَلِّيَ فَإِنَّمَا هُوَ لَحْمٌ عَجَّلَهُ لأَهْلِهِ لَيْسَ مِنَ النُّسُكِ فِي شَيْءٍ)). فَقَامَ خَالِي أَبُوبُرْدَةَ بْنُ نِيَارٍ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ، أَنَا ذَبَحْتُ قَبْلَ أَنْ أُصَلِّيَ، وَعِنْدِي جَذَعَةٌ خَيْرٌ مِنْ مُسِنَّةٍ. قَالَ: ((اجْعَلْهَا مَكَانَهَا))

-أَوْ قَالَ: ((اذْبَحْهَا - وَلَنْ تَجْزِيَ جَذَعَةٌ عَنْ أَحَدٍ بَعْدَكَ)). [راجع: ٩٥١]

एक साल की पठिया किसी के लिये काफ़ी नहीं होगी।

(राजेअ : 951)

तश्रीह : इस हदीष की मुताबक़त बाब के तर्जुमा से यूँ है कि आपने फ़र्माया कि उस दिन पहले जो काम हम करते हैं वो नमाज़ है। इससे ये निकला कि ईद की नमाज़ सुबह सवेरे पढ़ना चाहिये क्योंकि जो कोई देर करके पढ़ेगा और वो नमाज़ से पहले दूसरे काम करेगा तो पहला काम उसका उस दिन नमाज़ न होगा। ये इस्तिम्बात हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) की गहरी बसीरत की दलील है। (रहिमहुल्लाह)

इस सूरत में आपने ख़ास उन्हीं अबू बुर्दा बिन नियार नामी सहाबी के लिये जिज़्आ की कुर्बानी की इजाज़त बख़्शी। साथ ही ये भी फ़र्मा दिया कि तेरे बाद ये किसी और के लिये काफ़ी न होगी। यहाँ जिज़्आ से एक साल की बकरी मुराद है। लफ़्ज़े जिज़्आ एक साल की भेड़–बकरी पर बोला जाता है। हज़रत अल्लामा शौकानी (रह.) फ़र्माते हैं , **'अल जिज़्अतु मिनज़्ज़ानि मा लहू सनतुन ताम्मतुन हाज़ा हुवल अश्हरू अन अहलिल लुग़ति व जुम्हूरि अहलिल इल्मि मिन ग़ैरिहिम'** या'नी जिज़्आ वो है जिसकी उम्र पर पूरा एक साल गुज़र चुका हो। अहले सुन्नत और जुम्हूर अहले इल्म से यही मन्क़ूल है। कुछ छः और आठ और दस माह की बकरी पर भी जिज़्आ बोलते हैं।

देवबन्दी तराजिमे बुख़ारी में इस मुक़ाम पर जगह–जगह जिज़्आ का तर्जुमा चार महीने की बकरी का किया गया है तफ़्हीमुल बुख़ारी में एक जगह नहीं बल्कि बहुत से मुक़ामात पर चार महीने की बकरी लिखा हुआ मौजूद है। अल्लामा शौकानी (रह.) की ऊपर लिखी तशरीह के मुताबिक़ ये ग़लत है। इसलिये अहले हदीष तराजिमे बुख़ारी में हर जगह एक साल की बकरी के साथ तर्जुमा किया गया है।

लफ़्ज़े ज़िज़्आ का इत्लाक़ मसलके हन्फ़ी में भी छः माह की बकरी पर किया गया है। देखो तस्हीलुल क़ारी, पारा नं. 4, पेज नं. 400) मगर चार माह की बकरी पर लफ़्ज़े जिज़्आ ये ख़ुद मसलके हन्फ़ी के भी ख़िलाफ़ है। क़स्तलानी (रह.) ने शरह बुख़ारी, पेज नं. 117 मत्बूआ नवल किश्वर में है, **'जिज़्अतुम्मिनल्मअज़ि ज़ात सनतिन'** या'नी जिज़्आ एक साल की बकरी को कहा जाता है।

बाब 11 : अय्यामे-तशरीक़ में अमल करने की फ़ज़ीलत का बयान

١١- بَابُ فَضْلِ الْعَمَلِ فِي أَيَّامِ التَّشْرِيقِ

और इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा कि (इस आयत) और अल्लाह तआला का ज़िक्र मा'लूम दिनों में करो। में अय्यामे-मा'लूमात से मुराद ज़िल्हिज्जा के दस दिन हैं और अय्यामे-मअदूदात से मुराद अय्यामे-तशरीक़ हैं। इब्ने उमर और अबू हुरैरह (रज़ि.) इन दस दिनों में बाज़ार की तरफ़ निकल जाते और लोग इन बुज़ुर्गों की तकबीरात सुनकर तकबीर कहते और मुहम्मद बिन बाक़िर (रज़ि.) नफ़्ल नमाज़ों के बाद भी तकबीर कहते थे।

وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ وَذَكَرُوا اللهَ فِيْ أَيَّامٍ مَعْلُوْمَاتٍ ﴿وَيَذْكُرُوا اسْمَ اللهِ فِي أَيَّامٍ مَعْلُومَاتٍ﴾. أَيَّامُ الْعَشْرِ. وَالأَيَّامُ الْمَعْدُودَاتِ : أَيَّامُ التَّشْرِيقِ. وَكَانَ ابْنُ عُمَرَ وَأَبُوهُرَيْرَةَ يَخْرُجَانِ إِلَى السُّوقِ فِي أَيَّامِ الْعَشْرِ يُكَبِّرَانِ وَيُكَبِّرُ النَّاسُ بِتَكْبِيرِهِمَا وَكَبَّرَ مُحَمَّدُ بْنُ عَلِيٍّ خَلْفَ النَّافِلَةِ.

969. हमसे मुहम्मद बिन अरअरा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे शुअबा ने सुलैमान के वास्ते से बयान किया, उनसे

٩٦٩- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَرْعَرَةَ. قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ سُلَيْمَانَ عَنْ مُسْلِمٍ

972. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा कि हमसे अ़ब्दुल वह्हाब ष़क़फ़ी ने बयान किया, कहा कि हमसे उ़बैदुल्लाह उ़मरी ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ़ ने और उनसे इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) के सामने ईदुल फ़ित्र और ईदुल अज़्हा की नमाज़ के लिये बरछी आगे-आगे उठाई जाती और वो ईदगाह में आपके सामने गाड़ दी जाती। आप उसी की आड़ में नमाज़ पढ़ते। (राजेअ़ : 494)

٩٧٢- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ قَالَ: حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ تُرْكَزُ لَهُ الْحَرْبَةُ قُدَّامَهُ يَوْمَ الْفِطْرِ وَالنَّحْرِ، ثُمَّ يُصَلِّي. [راجع: ٤٩٤]

तश्रीह : क्योंकि ईद मैदान में पढ़ी जाती थी और मैदान में नमाज़ पढ़ने के लिये सुत्रा ज़रूरी है इसलिये छोटा सा नेज़ा ले लेते थे जो सुत्रा के लिये काफ़ी हो सके और उसे आँहुज़ूर (ﷺ) के सामने गाड़ देते थे। नेज़ा इसलिये लेते थे कि उसे गाड़ने में आसानी होती थी। इमाम बुख़ारी (रह़.) इससे पहले लिख आएँ हैं कि ईदगाह में हथियार न ले जाना चाहिये। यहाँ ये बताना चाहते हैं कि ज़रूरत हो तो ले जाने में कोई मुज़ायक़ा नहीं कि ख़ुद आँह़ज़रत (ﷺ) के सुत्रे के लिये नेज़ा ले जाया जाता था। (तफ़्हीमुल बुख़ारी)

बाब 14 : इमाम के आगे-आगे ईद के दिन अ़न्ज़ा या ह़रबा लेकर चलना

١٤- بَابُ حَمْلِ الْعَنَزَةِ - أَوِ الْحَرْبَةِ بَيْنَ يَدَيِ الإِمَامِ يَوْمَ الْعِيدِ

973. हमसे इब्राहीम बिन मुन्ज़िद ह़ज़ामी ने बयान किया, कहा कि हमसे वलीद बिन मुस्लिम ने बयान किया, कहा कि हमसे अबू उ़मर औज़ाई ने बयान किया, कहा कि हमसे नाफ़ेअ़ ने इब्ने उ़मर (रज़ि.) से बयान किया, उन्होंने फ़र्माया नबी करीम (ﷺ) ईदगाह जाते तो बरछा (डण्डा जिसके नीचे लोहे का फल लगा हुआ हो) आप (ﷺ) के आगे-आगे ले जाया जाता था, फिर ये ईदगाह में आप (ﷺ) के सामने गाड़ दिया जाता और आप (ﷺ) उसकी आड़ में नमाज़ पढ़ते। (राजेअ़ :494)

٩٧٣- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ الْمُنْذِرِ قَالَ: حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ قَالَ : حَدَّثَنَا أَبُو عَمْرٍو قَالَ: أَخْبَرَنِي نَافِعٌ عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَغْدُو إِلَى الْمُصَلَّى وَالْعَنَزَةُ بَيْنَ يَدَيْهِ تُحْمَلُ وَتُنْصَبُ بِالْمُصَلَّى بَيْنَ يَدَيْهِ، فَيُصَلِّي إِلَيْهَا. [راجع: ٤٩٤]

तश्रीह : ऊपर गुज़र चुकी है। इससे ये भी षाबित हुआ कि आँह़ज़रत (ﷺ) ईदैन की नमाज़ जंगल (मैदान) में पढ़ा करते थे। पस मसनून यही है जो लोग बिला उ़ज़्र बारिश वग़ैरह के मस्जिद में ईदैन की नमाज़ पढ़ते हैं वो सुन्नत के षवाब से महरूम रहते हैं।

बाब 15 : औरतों और ह़ैज़ वालियों का ईदगाह में जाना

١٥- بَابُ خُرُوجِ النِّسَاءِ وَالْحُيَّضِ إِلَى الْمُصَلَّى

974. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल वह्हाब ने बयान किया, कहा कि हमसे ह़म्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अय्यूब सुख़ितयानी ने, उनसे मुह़म्मद ने, उनसे उम्मे अ़तिया (रज़ि.) ने, आपने फ़र्माया कि हमें हुक्म था कि पर्दा वाली दो शैज़ाओं को ईदगाह के लिये निकालें और अय्यूब सुख़ितयानी ने ह़फ़्सा (रज़ि.) से भी इसी त़रह रिवायत की है। ह़फ़्सा (रज़ि.) की

٩٧٤- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الْوَهَّابِ قَالَ: حَدَّثَنَا حَمَّادٌ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ مُحَمَّدٍ عَنْ أُمِّ عَطِيَّةَ قَالَتْ: أُمِرْنَا أَنْ نُخْرِجَ الْعَوَاتِقَ وَذَوَاتِ الْخُدُورِ. وَعَنْ أَيُّوبَ عَنْ حَفْصَةَ بِنَحْوِهِ. وَزَادَ فِي حَدِيثِ

हदीष में ये ज़्यादती है कि दोशीज़ाएँ (लड़कियाँ) और पर्देवालियाँ ज़रूर (ईदगाह जाएँ) और हाइज़ा नमाज़ की जगह से अलग रहें।

(राजेअ : 324)

حَفْصَةَ قَالَ: أَوْ قَالَتْ: الْعَوَاتِقَ وَذَوَاتِ الْخُدُورِ، وَيَعْتَزِلْنَ الْحُيَّضُ الْمُصَلَّى.

[راجع: ٣٢٤]

तश्रीह : हज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) ने औरतों के ईदैन में शिर्कत करने के बारे में तफ़्सील से सहीह़ अहादीष को नक़ल किया है जिनमें कुछ क़ीलो–क़ाल की गुंजाइश नहीं। अनेक रिवायतों में मौजूद है कि आँहज़रत (ﷺ) अपनी तमाम बीवियों और साहिबज़ादियों को ईदैन के लिये निकालते थे यहाँ तक कि फ़र्मा दिया कि हैज़ वाली भी निकलें और वो नमाज़ से दूर रहकर मुसलमानों की दुआओं में शिर्कत करें और वो भी निकलें जिनके पास चादर न हों। चाहिये कि उनकी हमजोलियाँ उनको अपनी चादर या दुपट्टा दे दें। बहरहाल औरतों का ईदगाह में शिर्कत करना एक अहमतरीन सुन्नत और इस्लामी शिआर है जिससे शौकते इस्लाम का मुज़ाहिरा (प्रदर्शन) होता है और मर्द–औरत और बच्चे मैदाने ईदगाह में अल्लाह के सामने सज्दा-रेज़ होकर दुआएँ करते हैं जिनमें से किसी एक की भी दुआ अगर कुबूलियत का दर्ज़ा हासिल कर ले तो आम हाज़िरीन के लिये बाइषे सद बरकत हो सकती है।

इस बारे में कुछ लोगों ने फ़र्ज़ी शुकूक व शुब्हात और मफ़रूज़ा ख़तरात की बिना पर औरतों का ईदगाह में जाना मकरूह क़रार दिया है मगर ये सारी मफ़रूज़ा (फ़र्ज़ी) बातें हैं जिनकी शरअन कोई असल नहीं है। ईदगाह के मुंतज़िमीन का फ़र्ज़ है कि वो पर्दे का इंतिज़ाम करें और हर फ़साद व ख़तरात के इंसेदाद (रोकने) के लिये पहले ही से बन्दोबस्त कर ले।

हज़रत अल्लामा शौकानी (रह़.)ने इस बारे में मुफ़स्सल व मुदल्लल बहष के बाद फ़र्माया है, **'अम्मा फ़ी मअनाहू मिनल्अहादीषि काज़ियतुन बिमश्रूइय्यति ख़ुरुजिन्निसाइ फ़िल्ईदैनि इलल्मुसल्ला मिन ग़ैरि फ़र्क़िन बैनल्बिक्रि वष़्षय्यिबि वश्शाब्बति वल्अज़ूज़ि वल्हाइज़ि व ग़ैरहा मालम तकुन मुअतद्दतुन औ कान फ़ी ख़ुरुजिहा फ़ितनतुन औ कान लहा उज़्रुन'** या'नी अहादीष इसमें फ़ैसला दे रही हैं कि औरतों को ईदैन में मर्दों के साथ ईदगाह में शिर्कत करना मश्रूअ है। और इस बारे में शादीशुदा और कुँवारी और बूढ़ी और जवान और हाइज़ा वग़ैरह का कोई इम्तियाज़ नहीं है जब तक उनमें से कोई इद्दत में न हो या उनके निकलने में कोई फ़ित्ने का डर न हो या कोई और उज़्र न हो तो बिला शक तमाम मुसलमान औरतों को ईदगाह में जाना मश्रूअ हैं। फिर फ़र्माते हैं, **'वल्क़ौलु बिकराहिय्यतिल्ख़ुरूजि अलल्इत्तलाक़ि रद्दुन लिल्अहादीषिस्सहीहति बिल्अराइल्फ़ासिदति'** या'नी मुत्लक़न औरतों के लिये ईदगाह में जाने को मकरूह क़रार देना या अपनी फ़ासिद रायों की बिना पर अहादीष सहीहा को रद्द करना है।

आजकल के जो उलमा ईदैन में औरतों की शिर्कत को नाजाइज़ क़रार देते हैं उनको इतना ग़ौर करने की तौफ़ीक़ नहीं होती कि यही मुसलमान औरतें बेतहाशा बाज़ारों में आती–जाती हैं; मेलों–उर्सों में शरीक होतीं हैं और बहुत सी ग़रीब औरतें जो मेहनत मज़दूरी करती हैं। जब उन सारे हालात में ये मफ़ासिदे मफ़रूज़ा से बालातर हैं तो ईदगाह की शिर्कत में जबकि वहाँ जाने के लिये बापर्दा और बाअदब होना ज़रूरी है कौनसे फ़र्ज़ी ख़तरात का तसव्वुर करके उनके लिये अदमे-जवाज़ का फ़त्वा लगाया जा सकता है।

शैख़ुल हदीष हज़रत मौलाना उबैदुल्लाह साहब मुबारकपुरी दामत फ़ैज़ुहू फ़र्माते हैं, औरतों का ईदगाह में ईद की नमाज़ के लिये जाना सुन्नत है। शादीशुदा हों या कुँवारी, जवान हो या अधेड़ हो या बूढ़ी। **'अन उम्मि अतिय्यत अन्न रसूलल्लाहि (ﷺ) कान युख़्रिजुल अब्कार वल्अवातिक़ व ज़वातिल्ख़ुदूरि वल्हुय्यज़ु फ़िल्ईदैनि फ़अम्मल्हुय्यज़ु लयअतज़िल्नल मुसल्ला व यशहदन दअवतल मुस्लिमीन क़ालत इहदाहुन्न या रसूलल्लाहि इल्लम यकुल्लहा जल्बाबुन क़ाल फ़लितुसिर्हा उख़्तहा मिन जल्बाबिहा'** (सहीहैन वग़ैरह) आँहज़रत (ﷺ) ईदैन में दोशीज़ा, जवान कुँवारी, हैज़वाली औरतों को ईदगाह जाने का हुक्म देते थे। हैज़वाली औरतें नमाज़ से अलग रहतीं और मुसलमानों की दुआओं में शरीक रहती। एक औरत ने कहा कि अगर किसी औरत के पास चादर न हो तो आपने फ़र्माया कि उसकी मुसलमान बहन

अपनी चादर में ले जाए। जो लोग कराहृत के क़ायल हैं या जवान या बूढ़ी के बीच फ़र्क़ करते हैं दरअस़ल वो स़हीह़ ह़दीष़ को अपनी फ़ासिद और बात़िल रायों से रद्द करते हैं। ह़ाफ़िज इब्ने ह़जर (रह़.) फ़त्हुल बारी में और इब्ने ह़ज़म ने अपनी मुह़ल्ला में बित्तफ़्स़ील मुख़ालिफ़ीन के जवाबात ज़िक्र किये हैं। औरतों को ईदगाह में सख़्त पर्दा के साथ बग़ैर किसी क़िस्म की ख़ुश्बू लगाए और बग़ैर बजने वाले ज़ेवर और ज़ीनत के लिबास के जाना चाहिये ताकि फ़ित्ने का सबब न बनें। **'क़ाल शैख़ुना फ़ी शर्हित्तिर्मिज़ी अ़ला मनइल्ख़ुरूजि इलल्इदि लिश्शवाब्बि मअ़ल्अम्नि मिनल्मफ़ासिदि मिम्मा ह़द्दष़न फ़ी हाज़ज़्ज़मानि बल हुव मश्रूउन लहुन्न व हुवल्क़ौलुर्राजिह इन्तिहा'** या'नी अम्न की ह़ालत में जवान औरतों को शिर्क़ते ईदैन से रोकना उसके बारे में मानेईन (मना करने वालों) के पास कोई दलील नहीं है बल्कि वो मश्रूअ़ है और क़ौले राज़ेह यही है।

बाब 16 : बच्चों का ईदगाह जाना

١٦- بَابُ خُرُوجِ الصِّبْيَانِ إِلَى الْمُصَلَّى

975. हमसे अ़मर बिन अयास ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अ़ब्दुर्रह़्मान बिन महदी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे सुफ़्यान ष़ौरी ने अ़ब्दुर्रह़्मान बिन आ़बिस से बयान किया, उन्होंने इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से सुना, उन्होंने फ़र्माया कि मैंने ईदुल फ़ित़र या ईदुल अज़्हा के दिन नबी करीम (ﷺ) के साथ नमाज़ पढ़ी। आप (ﷺ) ने नमाज़ पढ़ने के बाद ख़ुत्बा दिया फिर औरतों की त़रफ़ आए और उन्हें नस़ीह़त फ़र्माई और स़दक़े के लिये हुक्म फ़र्माया। (राजेअ़ : 98)

٩٧٥ - حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَبَّاسٍ قَالَ : حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ قَالَ : حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَابِسٍ قَالَ: سَمِعْتُ ابْنَ عَبَّاسٍ قَالَ: خَرَجْتُ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ يَوْمَ فِطْرٍ أَوْ أَضْحَى، فَصَلَّى الْعِيْدَ، ثُمَّ خَطَبَ، ثُمَّ أَتَى النِّسَاءَ فَوَعَظَهُنَّ وَذَكَّرَهُنَّ، وَأَمَرَهُنَّ بِالصَّدَقَةِ. [راجع: ٩٨]

बाब 17 : इमाम ईद के ख़ुत्बे में लोगों की त़रफ़ मुँह करके खड़ा हो

١٧- بَابُ اسْتِقْبَالِ الإِمَامِ النَّاسَ فِي خُطْبَةِ الْعِيْدِ

976. हमसे अबू नुऐ़म फ़ुज़ैल बिन दुकैन ने बयान किया, कहा कि हमसे मुह़म्मद बिन त़ल्हा ने बयान किया, उनसे ज़ैद ने, उनसे शुअ़बी ने, उनसे बराअ बिन आ़ज़िब (रज़ि.) ने, उन्होंने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ईदुल अज़्हा के दिन बक़ीअ़ की त़रफ़ तशरीफ़ ले गये और दो रकअ़त ईद की नमाज़ पढ़ाई। फिर हमारी त़रफ़ चेहर-ए-मुबारक करके फ़र्माया कि सबसे मुक़द्दम इबादत हमारे इस दिन की ये है कि पहले हम नमाज़ पढ़ें, फिर (नमाज़ और ख़ुत्बे से लौट) कर क़ुर्बानी करें। इसलिये जिसने इस त़रह किया उसने हमारी सुन्नत के मुत़ाबिक़ किया और जिसने नमाज़ से पहले ज़िब्ह कर दिया तो वो ऐसी चीज़ है जिसे उसने अपने घरवालों के खिलाने के लिये जल्दी से मुहैया कर दिया है और उसका क़ुर्बानी से कोई ता'ल्लुक़ नहीं। इस पर एक शख़्स ने खड़े होकर अ़र्ज किया कि

٩٧٦ - حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ طَلْحَةَ عَنْ زُبَيْدٍ عَنِ الشَّعْبِيِّ عَنِ الْبَرَاءِ قَالَ: خَرَجَ النَّبِيُّ ﷺ يَوْمَ أَضْحَى إِلَى الْبَقِيعِ فَصَلَّى الْعِيْدَ رَكْعَتَيْنِ، ثُمَّ أَقْبَلَ عَلَيْنَا بِوَجْهِهِ وَقَالَ: ((إِنَّ أَوَّلَ نُسُكِنَا فِي يَوْمِنَا هَذَا أَنْ نَبْدَأَ بِالصَّلاَةِ ثُمَّ نَرْجِعَ فَنَنْحَرَ. فَمَنْ فَعَلَ ذَلِكَ فَقَدْ وَافَقَ سُنَّتَنَا، وَمَنْ ذَبَحَ قَبْلَ ذَلِكَ فَإِنَّمَا هُوَ شَيْءٌ عَجَّلَهُ لأَهْلِهِ لَيْسَ مِنَ النُّسُكِ فِي شَيْءٍ)). فَقَامَ رَجُلٌ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ، إِنِّي ذَبَحْتُ

या रसूलुल्लाह (ﷺ)! मैंने तो पहले ही ज़िब्ह कर दिया लेकिन मेरे पास एक साल की पठिया है और वो दो-दंदी बकरी से ज़्यादा बेहतर है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि ख़ैर तुम उसी को ज़िब्ह करलो लेकिन तुम्हारे बाद किसी की तरफ़ से ऐसी पठिया जाइज़ न होगी। (राजेअ : 951)

وَعِنْدِي جَذَعَةٌ خَيْرٌ مِنْ مُسِنَّةٍ. قَالَ: ((اذْبَحْهَا، وَلاَ تَفِي عَنْ أَحَدٍ بَعْدَكَ)). [راجع: ٩٥١]

सवाल करने वाले अबू बुर्दा बिन नियार अंसारी थे। ह़दीष़ और बाब में मुताबक़त ज़ाहिर है।

बाब 18 : ईदगाह में निशान लगाना

١٨- بَابُ الْعَلَمِ الَّذِي بِالْمُصَلَّى

या'नी कोई ऊँची चीज़ जैसे लकड़ी वग़ैरह उससे ये ग़र्ज़ थी कि ईदगाह का मक़ाम मा'लूम रहे।

977. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा कि हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने सुफ़्यान ष़ौरी से बयान किया, कहा कि मुझसे अ़ब्दुर्रह़्मान बिन आ़बिस ने बयान किया, कहा कि मैंने इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से सुना। उनसे दरयाफ़्त किया गया था कि आप नबी करीम (ﷺ) के साथ ईदगाह गये थे? उन्होंने फ़र्माया कि हाँ! और अगर बावजूद कमउ़म्री के मेरी क़द्रो-मन्ज़िलत आपके यहाँ न होती तो मैं जा नहीं सकता था। आप उस निशान पर आए जो कष़ीर बिन सुल्त के घर के क़रीब है। आपने वहाँ नमाज़ पढ़ाई फिर ख़ुत्बा सुनाया। उसके बाद औरतों की तरफ़ आए, आप के साथ बिलाल (रज़ि.) भी थे। आप (ﷺ) ने उन्हें वा'ज़ और नस़ीह़त की और स़दक़ा के लिये कहा। चुनाँचे मैंने देखा कि औरतें अपने हाथों से बिलाल (रज़ि.) के कपड़े में डाले जा रही थीं। फिर आँह़ज़रत (ﷺ) और बिलाल (रज़ि.) घर वापस हुए। (राजेअ : 98)

٩٧٧ - حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ : حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ سُفْيَانَ قَالَ: حَدَّثَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَابِسٍ قَالَ : سَمِعْتُ ابْنَ عَبَّاسٍ قِيْلَ لَهُ: أَشَهِدْتَ الْعِيْدَ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ؟ قَالَ: نَعَمْ، وَلَوْ لاَ مَكَانِيْ مِنَ الصِّغَرِ مَا شَهِدْتُهُ، حَتَّى أَتَى الْعَلَمَ الَّذِي عِنْدَ دَارِ كَثِيْرِ بْنِ الصَّلْتِ فَصَلَّى ثُمَّ خَطَبَ، ثُمَّ أَتَى النِّسَاءَ وَمَعَهُ بِلاَلٌ فَوَعَظَهُنَّ وَذَكَّرَهُنَّ وَأَمَرَهُنَّ بِالصَّدَقَةِ فَرَأَيْتُهُنَّ يَهْوِيْنَ بِأَيْدِيْهِنَّ يَقْذِفْنَهُ فِي ثَوبِ بِلاَلٍ، ثُمَّ انْطَلَقَ هُوَ وَبِلاَلٌ إِلَى بَيْتِهِ. [راجع: ٩٨]

कष़ीर बिन सुल्त का मकान आँह़ज़रत (ﷺ) के ब'ाद बनाया गया। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने लोगों को ईदगाह का मकान बताने के लिये उसका पता दिया।

बाब 19 : इमाम का ईद के दिन औरतों को नस़ीह़त करना

١٩- بَابُ مَوْعِظَةِ الإِمَامِ النِّسَاءَ يَومَ الْعِيْدِ

978. हमसे इस्ह़ाक़ बिन इब्राहीम बिन नस़्र ने बयान किया, कहा कि हमसे अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने बयान किया, कहा कि हमें इब्ने जुरैज ने ख़बर दी, कहा कि मुझे अ़ता ने ख़बर दी कि जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) को मैंने ये कहते सुना कि नबी करीम (ﷺ) ने ईदुल फ़ित़्र की नमाज़ पढ़ी। पहले आपने नमाज़ पढ़ी उसके

٩٧٨ - حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيْمَ بْنِ نَصْرٍ قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ قَالَ : أَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَطَاءٌ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ قَالَ: سَمِعْتُهُ يَقُولُ: [قَامَ

था। (राजेअ : 57)

كَانَتْ فِي الْجَاهِلِيَّةِ. [راجع: ٥٧]

तश्रीह : अगरचे ज़मान-ए-नबवी में ईदगाह के लिये कोई इमारत नहीं थी और जहाँ ईदैन की नमाज़ पढ़ी जाती थीं वहाँ कोई मिम्बर भी नहीं था लेकिन इस लफ़्ज़ **फ़लम्मा फ़रज़ नज़लह** से मा'लूम होता है कि कोई बुलन्द जगह थी जिस पर आप (ﷺ) ख़ुत्बा देते थे।

आँहुज़ूर (ﷺ) मर्दों के सामने ख़ुत्बा दे चुके तो लोगों ने समझा कि अब ख़ुत्बा ख़त्म हो गया है और उसे वापस जाना चाहिये। चुनाँचे लोग वापसी के लिये उठे लेकिन नबी करीम (ﷺ) ने उन्हें हाथ के इशारे से रोका कि अभी बैठे रहें क्योंकि आप (ﷺ) औरतों को ख़ुत्बा देने जा रहे थे। दूसरी रिवायतों से मा'लूम होता है कि जवाब देने वाली ख़ातून अस्मा बिन्ते यज़ीद थीं जो अपनी फ़साहत व बलाग़त की वजह से ख़तीबतुन्निसा के नाम से मशहूर थीं। उन्हीं की एक रिवायत में है कि जब नबी करीम (ﷺ) औरतों की तरफ़ आए तो मैं भी उनमें मौजूद थी। आपने फ़र्माया कि औरतों तुम जहन्नम का ईंधन ज़्यादा बनोगी। मैंने आप (ﷺ) को पुकारकर कहा, क्योंकि मैं आपके बहुत क़रीब थी, क्यों या रसूलल्लाह! ऐसा क्यूँ होगा? आपने फ़र्माया इसलिये कि तुम लोग लान–तान बहुत ज़्यादा करती हो और अपने शौहर की नाशुक्री करती हो।

बाब 20 : अगर किसी औरत के पास ईद के दिन दुपट्टा (चादर) न हो

٢٠- بَابُ إِذَا لَمْ يَكُنْ لَهَا جِلْبَابٌ فِي الْعِيْدِ

980. हमसे अबू मअ़मर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अ़ब्दुल वारिष़ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अय्यूब सुख़ितयानी ने ह़फ़्सा बिन्त सीरीन के वास्ते से बयान किया, उन्होंने कहा कि हम अपनी लड़कियों को ईदगाह जाने से मना करते थे। फिर एक ख़ातून बाहर से आई और क़स्रे बनू ख़लफ़ में उन्होंने क़याम किया कि उनकी बहन के शौहर नबी करीम (ﷺ) के साथ बारह लड़ाइयों में शरीक रहे और ख़ुद उनकी बहन अपने शौहर के साथ छह लड़ाइयों में शरीक हुई थीं। उनका बयान था कि हम मरीज़ों की ख़िदमत किया करते थे और जख़्मियों की मरहम-पट्टी करते थे। उन्होंने पूछा कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! क्या हम में से अगर किसी के पास चादर न हो और उसकी वजह से ईद के दिन (ईदगाह) न जा सकें तो कोई हर्ज है? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि उसकी सहेली अपनी चादर का एक हिस्सा उसे ओढ़ा दे और फिर वो ख़ैर और मुसलमानों की दुआ में शरीक हों। ह़फ़्सा ने बयान किया कि फिर जब उम्मे अ़तिया यहाँ तशरीफ़ लाई तो मैं उनकी ख़िदमत में भी हाज़िर हुई और दरयाफ़्त किया कि आपने फलाँ-

٩٨٠- حَدَّثَنَا أَبُو مَعْمَرٍ قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ قَالَ: حَدَّثَنَا أَيُّوبُ عَنْ حَفْصَةَ بِنْتِ سِيْرِيْنَ قَالَتْ: ((كُنَّا نَمْنَعُ جَوَارِيَنَا أَنْ يَخْرُجْنَ يَوْمَ الْعِيْدِ، فَجَاءَتِ امْرَأَةٌ فَنَزَلَتْ قَصْرَ بَنِي خَلَفٍ، فَأَتَيْتُهَا، فَحَدَّثَتْ أَنَّ زَوْجَ أُخْتِهَا غَزَا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ ثِنْتَيْ عَشْرَةَ غَزْوَةً، فَكَانَتْ أُخْتُهَا مَعَهُ فِي سِتِّ غَزَوَاتٍ، قَالَتْ: فَكُنَّا نَقُومُ عَلَى الْمَرْضَى، وَنُدَاوِي الْكَلْمَى. فَقَالَتْ: يَا رَسُولَ اللهِ، عَلَى إِحْدَانَا بَأْسٌ - إِذَا لَمْ يَكُنْ لَهَا جِلْبَابٌ - أَنْ لاَ تَخْرُجَ؟ فَقَالَ: ((لِتُلْبِسْهَا صَاحِبَتُهَا مِنْ جِلْبَابِهَا، فَلْيَشْهَدْنَ الْخَيْرَ وَدَعْوَةَ الْمُؤْمِنِيْنَ)). قَالَتْ حَفْصَةُ : فَلَمَّا قَدِمَتْ أُمُّ عَطِيَّةَ أَتَيْتُهَا فَسَأَلْتُهَا: أَسَمِعْتِ فِي كَذَا وَكَذَا؟

فَقَالَتْ: نَعَمْ، بَأَبِي - وَقُلَّمَا ذَكَرَتِ النَّبِيَّ ﷺ إِلاَّ قَالَتْ: بِأَبِي - قَالَ: ((لِيَخْرُجِ الْعَوَاتِقُ ذَوَاتُ الْخُدُورِ - أَوْ قَالَ: الْعَوَاتِقُ وَذَوَاتُ الْخُدُورِ، شَكَّ أَيُّوبُ - وَالْحُيَّضُ، تَعْتَزِلُ الْحُيَّضُ الْمُصَلَّى، وَلْيَشْهَدْنَ الْخَيْرَ وَدَعْوَةَ الْمُؤْمِنِينَ)). قَالَتْ: فَقُلْتُ لَهَا: آلْحُيَّضُ؟ قَالَتْ: نَعَمْ، أَلَيْسَ الْحَائِضُ تَشْهَدُ عَرَفَاتٍ وَتَشْهَدُ كَذَا وَتَشْهَدُ كَذَا؟.

[راجع: ٣٢٤]

फलाँ बात सुनी है। उन्होंने फ़र्माया कि हाँ! मेरे माँ-बाप आप (ﷺ) पर फ़िदा हो। उम्मे अ़तिया (रज़ि.) जब भी नबी करीम (ﷺ) का ज़िक्र करती तो ये ज़रूर कहती कि मेरे माँ-बाप आप पर फिदा हो, हाँ! तो उन्होंने बतलाया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि जवान पर्देवाली या जवान और पर्दे वाली बाहर निकलें। शुब्हा अय्यूब को था। अलबत्ता हाइज़ा औरतें ईदगाह से अलग होकर बैठें, उन्हें ख़ैर और मुसलमानों की दुआ़ में ज़रूर शरीक होना चाहिये। ह़फ़्सा (रज़ि.) ने कहा कि मैंने उम्मे अ़तिया (रज़ि.) से दरयाफ़्त किया कि हाइज़ा औरतें भी? उन्होंने फ़र्माया क्या हाइज़ा औरतें अ़रफ़ात नहीं जातीं और क्या वो फलाँ-फलाँ जगहों में शरीक नहीं होतीं। (फिर इज्तेमाअ़े-ईद ही की शिर्कत में कौनसी क़बाहत है) (राजेअ़: 324)

तश्रीह: ह़फ़्सा (रज़ि.) के सवाल की वजह ये थी कि जब हाइज़ा पर नमाज़ ही फ़र्ज़ नहीं और न वो नमाज़ पढ़ सकती है तो ईदगाह में उसकी शिर्कत से क्या फ़ायदा होगा? इस पर ह़ज़रत उम्मे अ़तिया (रज़ि.) ने कहा कि जब हैज़ वाली अ़रफ़ात और दीगर मुक़ामाते मुक़द्दसा में जा सकती है और जाती हैं तो ईदगाह में क्यूँ न जाएँ? इस जवाब पर आजकल के उन ह़ज़रात को ग़ौर करना चाहिये जो औरतों का ईदगाह में जाना नाजाइज़ क़रार देते हैं और उसके लिये सौ हीले और बहाने तलाशते हैं, ह़ालाँकि मुसलमानों की औरतें मेलों में और फ़िस्को-फ़ुजूर में धड़ल्ले से शरीक होती हैं।

ख़ुलासा ये है कि हैज़वाली औरतों को भी ईदगाह जाना चाहिये और वो नमाज़ से अलग रहें मगर दुआ़ओं में शरीक हों। इससे मुसलमानों की इज्तिमाई दुआ़ओं की अहमियत भी षाबित होती हैं। बिला शक दुआ़ मोमिन का हथियार है और जब मुसलमान मर्द-औरत मिलकर दुआ़ करें तो न मा'लूम किस की दुआ़ क़ुबूल होकर तमाम अहले इस्लाम के लिये बाइ़षे बरकत हो सकती है। बह़ालाते मौजूदा जबकि मुसलमान हर त़रफ़ से मसाइब (परेशानियों) का शिकार हैं, बिज़्ज़रूर दुआ़ओं का सहारा ज़रूरी है। इमामे ईद का फ़र्ज़ है कि ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ के साथ इस्लाम की सरबुलन्दी के लिये दुआ़एँ करे। ख़ास़ त़ौर पर क़ुर्आनी दुआ़एँ ज़्यादा मुअष्षिर (प्रभावशाली) हैं; फिर अह़ादीष में भी बड़ी पाकीज़ा दुआ़एँ वारिद हुई हैं। उनके बाद सामेईन की मादरी ज़ुबान (मातृभाषा) में भी दुआ़एँ की जा सकती है। (वबिल्लाहित्तौफ़ीक़)

٢١- بَابُ اعْتِزَالِ الْحُيَّضِ بِالْمُصَلَّى

बाब 21 : हाइज़ा औरतें ईदगाह से अलग रहें

٩٨١ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ عَنِ ابْنِ عَوْنٍ عَنْ مُحَمَّدٍ قَالَ : قَالَتْ أُمُّ عَطِيَّةَ: أُمِرْنَا أَنْ نَخْرُجَ فَنُخْرِجَ الْحُيَّضَ وَالْعَوَاتِقَ وَذَوَاتِ الْخُدُورِ - قَالَ ابْنُ عَوْنٍ: أَوْ الْعَوَاتِقَ

981. हमसे मुह़म्मद बिन मुषन्ना ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे मुह़म्मद बिन इब्राहीम इब्ने अबी अ़दी ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन औ़न ने बयान किया, उनसे मुह़म्मद बिन सीरीन ने कि उम्मे अ़तिया (रज़ि.) ने फ़र्माया कि हमें हुक्म था कि हाइज़ा औरतों, दोशीज़ाओं और पर्देवालियों को ईदगाह ले जाएँ... इब्ने औ़न ने कहा कि या (ह़दीष) में पर्देवाली दोशीज़ाएँ है। अलबत्ता

ذَوَاتِ الْخُدُورِ - فَأَمَّا الْحُيَّضُ فَيَشْهَدْنَ جَمَاعَةَ الْمُسْلِمِينَ وَدَعْوَتَهِمْ وَيَعْتَزِلْنَ مُصَلاَّهُمْ. [راجع: ٣٢٤].

हाइज़ा औरतें मुसलमानों की जमाअ़त और दुआओं में शरीक हो और (नमाज़ से) अलग रहें।

(राजेअ़ : 324)

٢٢- بَابُ النَّحْرِ وَالذَّبْحِ بِالْمُصَلَّى يَوْمَ النَّحْرِ

बाब 22 : ईदुल अज़्हा के दिन ईदगाह में नह्र और ज़िब्ह करना

٩٨٢- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ قَالَ: حَدَّثَنِي كَثِيرُ بْنُ فَرْقَدٍ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يَنْحَرُ - أَوْ يَذْبَحُ - بِالْمُصَلَّى)).

[أطرافه في : ١٧١٠، ١٧١١، ٥٥٥١، ٥٥٥٢].

982. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, कहा कि हमसे लैष़ ने बयान किया, कहा कि मुझ से कष़ीर बिन फ़रक़द ने नाफ़ेअ़ से बयान किया, उनसे इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ईदगाह ही में नह्र और ज़िब्ह किया करते।

(दीगर मक़ामात : 1710, 1711, 5551, 5552)

नह्र ऊँट का होता है बाक़ी जानवरों को लिटाकर ज़िबह करते हैं। ऊँट को खड़े–खड़े उसके सीने में ख़ंज़र मार देते हैं। उसका नाम नह्र है। क़ुर्बानी शआइरे इस्लाम (इस्लाम की निशानियों) में से है। हस्बे मौक़ा व महल बिला शुबहा ईदगाह में भी नह्र और क़ुर्बानी मसनून है। मगर बह़ालाते मौजूदा अपने घरों या मुक़र्ररा मुक़ामात पर ये सुन्नत अदा करनी चाहिये। ह़ालात की मुनासबत के लिये इस्लाम में गुंजाइश रखी गई है।

٢٣- بَابُ كَلاَمِ الإِمَامِ وَالنَّاسِ فِي خُطْبَةِ الْعِيدِ

बाब 23 : ईद के ख़ुत्बे में इमाम का और लोगों का बातें करना

وَإِذَا سُئِلَ الإِمَامُ عَنْ شَيْءٍ وَهُوَ يَخْطُبُ

और इमाम का जवाब देना जब ख़ुत्बे में उससे कुछ पूछा जाए

٩٨٣ - حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو الأَحْوَصِ قَالَ: حَدَّثَنَا مَنْصُورُ بْنُ الْمُعْتَمِرِ عَنِ الشَّعْبِيِّ عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ قَالَ: خَطَبَنَا رَسُولُ اللهِ ﷺ يَوْمَ النَّحْرِ بَعْدَ الصَّلاَةِ وَ قَالَ: ((مَنْ صَلَّى صَلاَتَنَا، وَنَسَكَ نُسُكَنَا، فَقَدْ أَصَابَ النُّسُكَ. وَمَنْ نَسَكَ قَبْلَ الصَّلاَةِ فَتِلْكَ شَاةُ لَحْمٍ)). فَقَامَ أَبُو بُرْدَةَ بْنُ نِيَارٍ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ، وَاللهِ لَقَدْ نَسَكْتُ قَبْلَ أَنْ أَخْرُجَ

983. हमसे मुसद्दद बिन मुस्रहद ने बयान किया, कहा कि हमसे अबुल अहवस़ सलाम बिन सलीम ने बयान किया, कहा कि हमसे मन्सूर बिन मुअ़तमिर ने बयान किया कि उनसे आ़मिर शुअ़बी ने, उनसे बराअ बिन आ़ज़िब (रज़ि.) ने, उन्होंने फ़र्माया कि नबी करीम (ﷺ) ने बक़र ईद के दिन नमाज़ के बाद ख़ुत्बा सुनाया और फ़र्माया कि जिसने हमारी त़रह की नमाज़ पढ़ी और हमारी त़रह की क़ुर्बानी की, उसकी क़ुर्बानी दुरुस्त हुई। लेकिन जिसने नमाज़ से पहले क़ुर्बानी की तो वो ज़बीहा सिर्फ़ गोश्त खाने के लिये होगा। इस पर अबू बुर्दा बिन नियार ने अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह (ﷺ) क़सम अल्लाह की! मैंने तो नमाज़ के लिये आने से पहले क़ुर्बानी कर ली, मैंने ये समझा कि आज का दिन खाने-पीने का दिन है,

إِلَى الصَّلَاةِ، وَعَرَفْتُ أَنَّ الْيَوْمَ يَوْمُ أَكْلٍ وَشُرْبٍ، فَتَعَجَّلْتُ، وَأَكَلْتُ وَأَطْعَمْتُ أَهْلِي وَجِيرَانِي. فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((تِلْكَ شَاةُ لَحْمٍ)). قَالَ: فَإِنَّ عِنْدِي عَنَاقَ جَذَعَةٍ لَهِيَ خَيْرٌ مِنْ شَاتَيْ لَحْمٍ، فَهَلْ تَجْزِي عَنِّي؟ قَالَ: ((نَعَمْ، وَلَنْ تَجْزِيَ عَنْ أَحَدٍ بَعْدَكَ)) [راجع: ٩٥١].

इसलिये मैंने जल्दी की और ख़ुद भी खाया और घरवालों को और पड़ौसियों को भी खिलाया। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि बहरहाल ये गोश्त (खाने का) हुआ (क़ुर्बानी नहीं) उन्होंने अ़र्ज़ किया कि मेरे पास एक बकरी का सालभर का बच्चा है वो दो बकरियों के गोश्त से ज़्यादा बेहतर है। क्या मेरी (त़रफ़ से उसकी) क़ुर्बानी दुरुस्त होगी? आपने फ़र्माया कि हाँ! मगर तुम्हारे बाद किसी की त़रफ़ से ऐसे बच्चे की क़ुर्बानी काफ़ी न होगी।

(राजेअ : 951)

इससे ये ष़ाबित फ़र्माया कि इमाम और लोग ईद के ख़ुत्बे में मसाइल की बात कर सकते हैं और आगे के फ़िक़रों से ये ष़ाबित होता है कि ख़ुत्बे की ह़ालत में अगर इमाम से कोई शख़्स मसला पूछे तो वो जवाब दे।

٩٨٤ - حَدَّثَنَا حَامِدُ بْنُ عُمَرَ عَنْ حَمَّادِ بْنِ زَيْدٍ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ مُحَمَّدٍ أَنَّ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ قَالَ: ((إِنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ صَلَّى يَوْمَ النَّحْرِ، ثُمَّ خَطَبَ فَأَمَرَ مَنْ ذَبَحَ قَبْلَ الصَّلَاةِ أَنْ يُعِيدَ ذَبْحَهُ. فَقَامَ رَجُلٌ مِنَ الأَنْصَارِ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ، جِيرَانٌ لِي - إِمَّا قَالَ: بِهِمْ خَصَاصَةٌ، وَإِمَّا قَالَ: بِهِمْ فَقْرٌ - وَإِنِّي ذَبَحْتُ قَبْلَ الصَّلَاةِ، وَعِنْدِي عَنَاقٌ لِي أَحَبُّ إِلَيَّ مِنْ شَاتَيْ لَحْمٍ. فَرَخَّصَ لَهُ فِيهَا)). [راجع: ٩٥٤]

984. हमसे ह़ामिद बिन उ़मर ने बयान किया, उनसे हम्माद बिन ज़ैद ने, उनसे अय्यूब सुख़्तियानी ने, उनसे मुहम्मद ने, उनसे ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने बक़र ईद के दिन नमाज़ पढ़कर ख़ुत्बा दिया। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि जिस शख़्स ने नमाज़ से पहले जानवर ज़िब्ह कर लिया उसे दोबारा क़ुर्बानी करनी होगी। इस पर अन्सार में से एक स़ह़ाबी उठे कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! मेरे कुछ ग़रीब-भूखे पड़ौसी हैं या यूँ कहा कि वो मुह़्ताज हैं। इसलिये मैंने नमाज़ से पहले ज़िब्ह कर दिया अलबत्ता मेरे पास एक साल की एक पठिया है जो दो बकरियों के गोश्त से भी ज़्यादा मुझे पसन्द है। आप (ﷺ) ने उन्हें इजाज़त दे दी। (राजेअ : 954)

٩٨٥ - حَدَّثَنَا مُسْلِمٌ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنِ الأَسْوَدِ عَنْ جُنْدَبٍ قَالَ: ((صَلَّى النَّبِيُّ ﷺ يَوْمَ النَّحْرِ، ثُمَّ خَطَبَ، ثُمَّ ذَبَحَ وَقَالَ: مَنْ ذَبَحَ قَبْلَ أَنْ يُصَلِّيَ فَلْيَذْبَحْ أُخْرَى مَكَانَهَا، وَمَنْ لَمْ يَذْبَحْ فَلْيَذْبَحْ بِاسْمِ اللهِ)). [أطرافه في: ٥٥٠٠، ٥٥٦٢، ٦٦٧٤، ٧٤٠٠].

985. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे अस्वद बिन क़ैस ने, उनसे जुन्दब ने, उन्होंने फ़र्माया कि नबी करीम (ﷺ) ने बक़र ईद के दिन नमाज़ पढ़ाने के बाद ख़ुत्बा दिया फिर क़ुर्बानी की। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि जिसने नमाज़ से पहले ज़िब्ह कर लिया हो तो उसे दूसरा जानवर बदले में क़ुर्बानी करना चाहिये और जिसने नमाज़ से पहले ज़िब्ह न किया हो वो अल्लाह के नाम पर ज़िब्ह करे।

(दीगर मक़ामात : 5500, 5562, 6674, 7400)

(1009) और अम्र बिन ह़म्ज़ा ने बयान किया कि हमसे सालिम ने अपने वालिद से बयान किया वो कहा करते थे कि अकषर मुझे शाइर (अबू ताालिब) का शे'र याद आ जाता है। मैं नबी करीम (ﷺ) के मुँह को देख रहा था कि आप दुआ-ए-इस्तिस्क़ाअ (मिम्बर पर) कर रहे थे और अभी (दुआ से फ़ारिग़ होकर) उतरे भी नहीं थे कि तमाम नाले लबरेज़ हो गए। (राजेअ़ : 1008)

١٠٠٩ – وَقَالَ عُمَرُ بْنُ حَمْزَةَ: حَدَّثَنَا سَالِمٌ عَنْ أَبِيهِ: وَ رُبَّمَا ذَكَرْتُ قَوْلَ الشَّاعِرِ وَأَنَا أَنْظُرُ إِلَى وَجْهِ النَّبِيِّ ﷺ يَسْتَسْقَى، فَمَا يَنْزِلُ حَتَّى يَجِيْشَ كُلُّ مِيْزَابٍ: وَأَبْيَضَ يُسْتَسْقَى الْغَمَامُ بِوَجْهِهِ ثِمَالُ الْيَتَامَى عِصْمَةٌ لِلأَرَامِلِ هُوَ قَوْلُ أَبِي طَالِبٍ. [راجع: ١٠٠٨]

ये अबू तालिब का शे'र है जिसका तर्जुमा है कि गोरा रंग उनका, वो हामी यतीमों, बेवाओं के; लोग पानी मांगते हैं उनके मुँह के सदक़े से।

(1010) हमसे ह़सन बिन मुह़म्मद बिन सबाह ने बयान किया, कहा कि हमसे मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन मुषन्ना अंसारी ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे बाप अ़ब्दुल्लाह बिन मुषन्ना ने बयान किया, उनसे षुमामा बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अनस (रज़ि.) ने, उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि जब कभी ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) के ज़माने में क़ह़त पड़ता तो उ़मर (रज़ि.) ह़ज़रत अ़ब्बास (रज़ि.) बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब (रज़ि.) के वसीले से दुआ़ करते और फ़र्माते कि ऐ अल्लाह! पहले हम तेरे पास अपने नबी (ﷺ) का वसीला लाया करते थे तो तू पानी बरसाता था। अब हम अपने नबी करीम (ﷺ) के चचा को वसीला बनाते हैं तो तू हम पर पानी बरसा। अनस (रज़ि.) ने कहा कि चुनाँचे बारिश ख़ूब ही बरसती। (दीगर मक़ाम : 371)

١٠١٠ – حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ الأَنْصَارِيُّ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي،عَبْدُ اللهِ بْنُ الْمُثَنَّى عَنْ ثُمَامَةَ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَنَسٍ عَنْ أَنَسٍ: ((أَنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ كَانَ إِذَا قَحَطُوا اسْتَسْقَى بِالْعَبَّاسِ بْنِ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ فَقَالَ: اللَّهُمَّ إِنَّا كُنَّا نَتَوَسَّلُ إِلَيْكَ بِنَبِيِّنَا ﷺ فَتَسْقِيْنَا ، وَإِنَّا نَتَوَسَّلُ إِلَيْكَ بِعَمِّ نَبِيِّنَا فَاسْقِنَا. قَالَ: فَيُسْقَوْنَ)). [طرفه في : ٣٧١].

तश्रीह : ख़ैरुल क़ुरून में दुआ़ का यही त़रीक़ा था और सलफ़ का अ़मल भी इसी पर रहा कि मुर्दों को वसीला बनाकर वो दुआ नहीं करते थे कि उन्हें तो आ़म ह़ालात में दुआ़ का शुऊ़र भी नहीं होता बल्कि किसी ज़िन्दा मुक़र्रब बारगाहे एज़्दी को आगे बढ़ा देते थे। आगे बढ़कर वो दुआ़ करते जाते थे और लोग उनकी दुआ़ पर आमीन कहते जाते।

ह़ज़रत अ़ब्बास (रज़ि.) के ज़रिये इस तरह तवस्सुल किया गया। इस ह़दीष़ से मा'लूम होता है कि ग़ैर मौजूद या मुर्दों को वसीला बनाने की कोई सूरत ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) के सामने नहीं थी। सलफ़ का यही मा'मूल था और ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) का तर्ज़े अ़मल इस मसले में बहुत ज़्यादा वाज़ेह़ है।

ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़जर (रह.) ने ह़ज़रत अ़ब्बास (रज़ि.) की दुआ भी नक़ल की है। आपने इस्तिस्क़ाअ की दुआ़ इस त़रह की थी, या अल्लाह! आफ़त और मुसीबत बग़ैर गुनाह के नाज़िल नहीं होती और तौबा के बग़ैर नहीं छूटती। आपके नबी के यहाँ मेरी क़द्रो–मंज़िलत थी इसलिये क़ौम मुझे आगे बढ़ाकर तेरी बारगाह में ह़ाज़िर हुई है; ये हमारे हाथ हैं जिनसे हमने गुनाह किये थे और तौबा के लिये हमारी पेशानियाँ सज्दा रेज़ हैं; बाराने रह़मत से सैराब कर। दूसरी रिवायत में है कि ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने इस मौक़े पर ख़ुत्बा देते हुए फ़र्माया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) का ह़ज़रत अ़ब्बास (रज़ि.) के साथ ऐसा मामला था जैसे बेटे

था और यही मसनून है।

बाब 16 : नबी करीम (ﷺ) का रमज़ान और ग़ैर रमज़ान में रात को नमाज़ पढ़ना

١٦- بَابُ قِيَامِ النَّبِيِّ ﷺ بِاللَّيْلِ فِي رَمَضَانَ وَغَيْرِهِ

1147. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, उनहोंने कहा कि हमें इमाम मालिक (रह.) ने ख़बर दी, उन्हें सईद बिन अबू सईद मक़्बरी ने ख़बर दी, उन्हें अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रहमान ने ख़बर दी कि उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रत आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि.) से उन्होंने पूछा कि नबी करीम (ﷺ) रमज़ान में (रात को) कितनी रकअ़तें पढ़ते थे। आपने जवाब दिया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) (रात में) ग्यारह रकअ़तों से ज़्यादा नहीं पढ़ते थे, ख़्वाह रमज़ान का महीना होता या कि कोई और, पहले आप (ﷺ) चार रकअ़त पढ़ते, उनकी ख़ूबी और लम्बाई का क्या पूछना फिर आप (ﷺ) चार रकअ़त और पढ़ते उनकी ख़ूबी और लम्बाई का क्या पूछना। फिर तीन रकअ़तें पढ़ते। आइशा (रज़ि.) ने फ़र्माया कि मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! आप वित्र पढ़ने से पहले ही सो जाते हैं? इस पर आप (ﷺ) फ़र्माया कि आइशा, मेरी आँखें सोती हैं लेकिन मेरा दिल नहीं सोता।

(दीगर मक़ाम : 2013, 3549)

١١٤٧- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ: أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ أَبِي سَعِيْدِ الْمَقْبُرِيِّ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّهُ أَخْبَرَهُ أَنَّهُ سَأَلَ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا: ((كَيْفَ كَانَتْ صَلاَةُ رَسُولِ اللهِ فِي رَمَضَانَ؟ فَقَالَتْ: مَا كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ يَزِيْدُ فِي رَمَضَانَ وَلاَ فِي غَيْرِهِ عَلَى إِحْدَى عَشْرَةَ رَكْعَةً: يُصَلِّي أَرْبَعًا، فَلاَ تَسْأَلْ عَنْ حُسْنِهِنَّ وَطُولِهِنَّ. ثُمَّ يُصَلِّي أَرْبَعًا، فَلاَ تَسْأَلْ عَنْ حُسْنِهِنَّ وَطُولِهِنَّ، ثُمَّ يُصَلِّي ثَلاَثًا. قَالَتْ عَائِشَةُ : فَقُلْتُ يَا رَسُولَ اللهِ ﷺ أَتَنَامُ قَبْلَ أَنْ تُوتِرَ؟ فَقَالَ: ((يَا عَائِشَةُ إِنَّ عَيْنَيَّ تَنَامَانِ وَلاَ يَنَامُ قَلْبِي)).

[طرفاه في: ٢٠١٣، ٣٥٦٩].

तश्रीह : इन्हीं ग्यारह रकअ़तों को तरावीह़ क़रार दिया है और आँहज़रत (ﷺ) से रमज़ान और ग़ैर रमज़ान में बरिवायत सह़ीह़ा यही ग्यारह रकअ़तें षाबित हैं। रमज़ान शरीफ़ में ये नमाज़े तरावीह़ के नाम से मौसूम हुई और ग़ैर रमज़ान में तहज्जुद के नाम से पुकारी गई। पस सुन्नते नबवी (ﷺ) सिर्फ़ आठ रकअ़तें तरावीह़ इस त़रह़ कुल ग्यारह रकअ़तें अदा करनी षाबित है। जैसा कि नीचे लिखी अह़ादीष़ से मज़ीद वज़ाहत होती है,

अ़न जाबिरिन (रज़ि.) क़ाल सल्ला बिना रसूलुल्लाहि (ﷺ) फ़ी रमज़ान षमान रकआतिन वल्वित्र अ़ल्लामा मुहम्मद बिन नस्र मरवज़ी ह़ज़रत जाबिर (रज़ि.) से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हमको रमज़ान में आठ रकअ़त तरावीह़ और वित्र पढ़ा दिया (या'नी कुल ग्यारह रकआ़त)

नेज़ ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) की ह़दीष़ कि रसूलुल्लाह (ﷺ) **मा कान यज़ीदु फ़ी रमज़ान व ला फ़ी ग़ैरिही अला इहदा अश्रत रकअ़तिन** रमज़ान और ग़ैर रमज़ान में ग्यारह रकअ़त से ज़्यादा नहीं पढ़ते थे।

कुछ लोगों को इससे ग़लतफ़हमी हो गई कि ये तहज्जुद के बारे में है तरावीह़ के बारे में नहीं। लिहाज़ा मा'लूम हुआ कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने रमज़ान में तरावीह़ और तहज्जुद अलग दो नमाज़ें क़ायम नहीं कीं। वही क़यामे रमज़ान (तरावीह़) या दीगर लफ़्ज़ों में तहज्जुद; ग्यारह रकअ़त पढ़ते और क़यामे रमज़ान (तरावीह़) को ह़दीष़ शरीफ़ में क़यामुललैल (तहज्जुद) भी फ़र्माया।

रमज़ान में रसूलुल्लाह (ﷺ) ने सहाबा किराम (रज़ि.) को तरावीह पढ़ा कर फ़र्माया, 'मुझको डर हुआ कि तुम पर सलातुललैल (तहज्जुद) फ़र्ज़ न हो जाए।' देखिए आप (ﷺ) ने तरावीह को तहज्जुद फ़र्माया। इससे मा'लूम हुआ कि रमज़ान में क़यामे रमज़ान (तरावीह) और सलातुल्लैल (तहज्जुद) एक ही नमाज़ है।

तरावीह व तहज्जुद के एक होने की दूसरी दलील :

अन अबी ज़र्रिन क़ाल सुम्ना मअ रसूलिल्लाहि (ﷺ) रमज़ान फलम यक़ुम बिना शैअम्मिन्हु हत्ता बक़िय सब्अ लयालिन फ़क़ाम बिना लैलतस्साबिअति हत्ता मज़ा नहवु मिन षुलुषिल्लैलि षुम्म कानतिल्लैलतुस् सादिसतुल्लती तलीहा फलम यक़ुम बिना हत्ता कानत खामिसतल्लती तलीहा क़ाम बिना हत्ता मज़ा नहवुम्मिन शतरिल्लैलि फक़ुल्तु या रसूलल्लाहि लौ नफ़ल्तुना बक़िय्यत लैलतिना हाज़िहि फ़क़ाल अन्नहू मन क़ाम मअल्इमामि हत्ता यन्सरिफ़ फ़इन्नहू यअदिलु क़ियामुल्लैलति षुम्म कानतिर्राबिअतुल्लती तलीहा फ़लम यक़ुम्हा हत्ता कानतिष्षालिषतुल्लती तलीहा क़ाल फजमअ निसाअहू व अहलह वज्तमअन्नासु क़ाल फ़क़ाम बिना हत्ता खशीना अंय्यफ़ूतनल्फ़लाहु क़ीला व मल्फलाह क़ाल अस्सुहूरू षुम्म लम यक़ुम बिना शैअन मिम्बक़िय्यतिश् शहरि (रवाहु इब्ने माजा) हज़रत अबू ज़र (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ हमने रमज़ान के रोज़े रखे, आप (ﷺ) ने हमको आख़िर के हफ़्ते में तीन ताक़ रातों में तरावीह इस तर्तीब से पढ़ाई कि पहली रात को अव्वल वक़्त में, दूसरी रात को निस्फ़ शब में, और फिर निस्फ़े बक़िया से। सवाल हुआ कि और नमाज़ पढ़ाइये। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि जो इमाम के साथ नमाज़ अदा करे उसका पूरी रात का क़याम होगा। फिर तीसरी रात को आख़िर शब में अपने अहले बैत को जमा करके सब लोगों की जमईयत में तरावीह पढ़ाईं, यहाँ तक कि हम डरे कि जमाअत ही में सेहरी का वक़्त न चला जाए। इस हदीष को इब्ने माजा ने रिवायत किया है और बुख़ारी शरीफ़ में ये हदीष मुख़्तसर लफ़्ज़ों में कई जगह नक़ल हुई है।

इससे मा'लूम हुआ कि आप (ﷺ) ने उसी एक नमाज़े तरावीह को रात के तीन हिस्सों में पढ़ाया है और इस तरावीह का वक़्त इशा के बाद अख़ीर रात तक अपने फ़ेअल (उस्वा-ए-हसना) से बता दिया जिसमें तहज्जुद का वक़्त आ गया। पस फेअ़ले रसूलुल्लाह (ﷺ) से षाबित हो गया है कि इशा के बाद आख़िर रात तक एक ही नमाज़ है।

नीज़ इसकी ताईद हज़रत उमर (रज़ि.) के उस क़ौल से होती है जो आपने फ़र्माया **वल्लती तनामून अन्हा अफ़्ज़लु मिनल्लती तक़ूमून** ये तरावीह पिछली रात में कि जिसमें तुम सोते हो पढ़ना बेहतर है अव्वल वक़्त पढ़ने से।' मा'लूम हुआ कि नमाज़े तरावीह व तहज्जुद एक ही है और यही मतलब हज़रते आइशा (रज़ि.) वाली हदीष का है।

नीज़ हदीष पर इमाम बुख़ारी (रह.) ने ये बाब बाँधा है कि **बाबुनः फ़ज़्लुम्मन क़ाम रमज़ान** और इमाम बैहक़ी (रह.) ने हदीष मज़्कूर पर यूँ बाब मुनअक़िद किया है। **बाबुन मा रूविय फ़ी अददि रकआतिल्क़ियामि फ़ी शहरि रमज़ान** और इसी तरह इमाम मुहम्मद (रह.) शागिर्द इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) ने **बाबु क़यामि शहरि रमज़ान** के तहत हदीषे मज़्कूर को नक़ल किया है। इन सब बुज़ुर्गों की मुराद भी हदीषे आइशा (रज़ि.) से तरावीह ही है और ऊपर मुफ़स्सल गुज़र चुका है कि अव्वल रात से आख़िर रात तक एक ही नमाज़ है। अब रहा कि इन तीनों रातों में कितनी रकअतें पढ़ाई थीं? सो अर्ज़ है कि अलावा वित्र आठ ही रकअतें पढ़ाई थीं। इसके षुबूत में कई रिवायाते सहीहा आई हैं जो दर्ज ज़ैल हैं,

उलमा व फ़ुक़हा-ए-हनफ़िया ने फ़र्मा दिया कि आठ रकअत तरावीह सुन्नते नबवी है:

(1) अल्लामा ऐनी हनफ़ी (रह.) उम्दतुलक़ारी (जिल्द : 3, पेज नं. 597) में फ़र्माते हैं, **फ़इन क़ुल्तु लम युबय्यिन फ़िर्रिवायातिल्मज़्कूरति अददुस्सलालिल्लती सल्लहा रसूलुल्लाहि (ﷺ) फी तिल्कल्लयालि क़ुल्तु रवाहु इब्नु खुज़ैमः व इब्नु हिब्बान मिन हदीषि जाबिरिन क़ाल सल्ला बिना रसूलुल्लाहि (ﷺ) फ़ी रमज़ान षमान रकआतिन षुम्म औतर** 'अगर तू सवाल करे कि जो नमाज़ आप (ﷺ) ने तीन रातों में पढ़ाई थी उसमें ता'दाद का ज़िक्र नहीं तो मैं उसके जवाब में कहूँगा कि इब्ने खुज़ैमा और इब्ने हिब्बान ने जाबिर (रज़ि.) से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अलावा वित्र के आठ रकअतें पढ़ाई थीं।'

(2) ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़जर (रह.) फ़त्हुल बारी (जिल्द: 1, पेज नं. 597) में फ़र्माते हैं, **लम अरा फ़ी शैइन मिन तुरुक़िही बयानु अ़ददि सलातिही फ़ी तिल्कल्लयाली लाकिन रवाहुब्नु ख़ुज़ैमा वब्नु हिब्बान मिन हदीष़ि जाबिरिन क़ाल सल्ला बिना रसूलुल्लाहि (ﷺ) फ़ी रमज़ान ष़मान रक्आतिन षुम्म औतर** 'मैंने ह़दीषे़ मज़्कूरा बाला की किसी सनद में नहीं देखा कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने उन तीन रातों में कितनी रकअ़त पढ़ाई थीं। लेकिन इब्ने ख़ुज़ैमा और इब्ने ह़िब्बान ने जाबिर (रज़ि.) से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अ़लावा वित्र के आठ रकअ़त पढ़ाई थीं।

(3) अ़ल्लामा ज़ेलई ह़नफ़ी (रह.) ने नस़बुर्राया फ़ी तख़रीजे अह़ादीष़ अल हिदाया (जिल्द: 1, पेज नं. 293) में इस ह़दीष़ को नक़ल किया है कि **इन्दब्नि हिब्बान फ़ी स़ह़ीह़िही अन जाबिरिनब्नि अ़ब्दिल्लाहि अन्नहू अलैहिस्सलाम सल्ला बिहिम ष़मान रक्आतिन वल्वित्र** इब्ने ह़िब्बान ने अपनी स़ह़ीह़ में जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने स़ह़ाबा (रज़ि.) को आठ रकअ़त और वित्र पढ़ाए या'नी कुल ग्यारह रकअ़त।

(4) इमाम मुह़म्मद, शागिर्द इमामे आज़म (रह.) अपनी किताब मौत़ा इमाम मुह़म्मद (पेज नं. 93) में बाबे तरावीह़ के तह़त फ़र्माते हैं **अन अबी सल्मतब्नि अ़ब्दिर्रहमानि अन्नहू सअल आइशत कैफ़ कानत स़लातु रसूलिल्लाहि (ﷺ) क़ालत मा कान रसूलुल्लाहि यज़ीदु फ़ी रमज़ान व ला फ़ी गैरिही अ़ला इहदा अशरत रकअ़तन** अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रह़मान से मरवी है कि उन्होंने उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) से पूछा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की रात की नमाज़ कैसी थी तो बतलाया कि रमज़ान व ग़ैर रमज़ान में आप ग्यारह रकअ़त से ज़्यादा नहीं पढ़ते थे। रमज़ान व ग़ैर रमजान की तह़क़ीक़ पहले गुज़र चुकी है। फिर इमाम मुह़म्मद (रह.) इस ह़दीष़ शरीफ़ को नक़ल करने के बाद फ़र्माते हैं **मुहम्मद व बिहाज़ा नाख़ुज़ूहू कुल्लहू** हमारा भी इन सब ह़दीष़ों पर अ़मल है, हम इन सब को लेते हैं।

(5) हिदाया जिल्द अव्वल के ह़ाशिये पर है, **अस्सुन्नतु मा वाज़ब अलैहिर्रसूलु (ﷺ) फहसबु फ़अला हाज़िहित्तअ़रीफ़ि यकूनुस्सुन्नतु हुव ज़ालिकल्कदरूल्मज़्कूरू व मा जाद अलैहि यकूनु मुस्तहब्बन** सुन्नत स़िर्फ़ वही है जिसको रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हमेशा किया हो। पस इस ता'रीफ़ के मुत़ाबिक़ स़िर्फ़ मिक़्दार मज़्कूर (आठ रकअ़त ही) सुन्नत होगी और जो उससे ज़्यादा हो वो नमाज़ मुस्तह़ब होगी।

(6) इमाम इब्नुल हुमाम हनफ़ी (रह.) फ़त्हुल क़दीर शरह़ हिदाया में फ़र्माते हैं **फतहस्सल मिन हाज़ा कुल्लिही अन्न क़ियाम रमज़ान सुन्नतुन इहदा अशरत रक्अतन बिल्वित्र फ़ी जमाअ़तिन फ़अलहुन्नबिय्यु (ﷺ)** इन तमाम का ख़ुलास़ा ये है कि रमज़ान का क़याम (तरावीह़) सुन्नत मअ़ वित्र ग्यारह रकअ़त बाजमाअ़त रसूलुल्लाह (ﷺ) के फ़ेअ़ल (उस्व-ए-ह़सना) से ष़ाबित है।

(7) अ़ल्लामा मुल्ला अ़ली क़ारी ह़नफ़ी (रह.) अपनी किताब मिरक़ात शरहे मिश्कात में फ़र्माते हैं, **अन्नत्तराहीव फ़िल्अस़्लि इहदा अशरत रक्अतन फ़अलहु रसूलुल्लाहि (ﷺ) षुम्म तरकहू लिउज़्रिन** दरअस़ल तरावीह़ रसूलुल्लाह (ﷺ) के फ़ेअ़ल से ग्यारह ही रकअ़त ष़ाबित है। जिनको आप (ﷺ) ने पढ़ा बाद में उ़ज्र की वजह से छोड़ दिया।

(8) मौलाना अ़ब्दुल ह़य्यि ह़नफ़ी लख़नवी (रह.) तअ़लीक़ुल मुम्जिद शरह़ मौत़ा इमाम मुह़म्मद (रह.) में फ़र्माते हैं **व अख़रजब्नु हिब्बान फ़ी स़ह़ीह़िही मिन हदीष़ि जाबिरिन अन्नहू स़ल्ला बिहिम ष़मान रक्आतिन षुम्म औतर व हाज़ा अस़हहु** और इब्ने ह़िब्बान ने अपनी स़ह़ीह़ में जाबिर (रज़ि.) की ह़दीष़ से रिवायत किया है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने स़ह़ाबा किराम (रज़ि.) को अ़लावा वित्र आठ रकअ़तें पढ़ाईं। ये ह़दीष़ बहुत स़ह़ीह़ है।

इन ह़दीष़ों से स़ाफ़ ष़ाबित हुआ कि रसूले अकरम (ﷺ) आठ रकअ़त तरावीह़ पढ़ते और पढ़ाते थे। जिन रिवायात में आप (ﷺ) का बीस रकअ़ात पढ़ना मज़्कूर है वो सब ज़ईफ़ और नाक़ाबिले इस्तिदलाल हैं।

स़ह़ाबा (रज़ि.) और स़ह़ाबियात (रज़ि.) का हुज़ूर (ﷺ) के ज़माने में आठ रकअ़त तरावीह़ पढ़ना :

(9) इमाम मुह़म्मद बिन नस्र मरवज़ी (रह.) ने क़यामुललैल में ह़ज़रत जाबिर (रज़ि.) से रिवायत की है **जाअ उबय इब्नि कअ़बिन फ़ी रमज़ान फ़क़ाल या रसूलल्लाहि (ﷺ) कानल्लैलत शैउन क़ाल व मा ज़ाक या उबय क़ाल**

निस्वतुदारी क़ुल्न इन्ना ला नक़्रउलक़ुर्आन **फनुसल्ली ख़ल्फ़क बिस़लातिक फ़सल्लैतु बिहिन्न ष़मान रकआतिन वल्वित्र फसकत अन्हू शिब्हुर्रिज़ा** उबय बिन कअब (रज़ि.) रमज़ान में रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास हाज़िर हुए और कहा कि आज रात को एक ख़ास़ बात हो गई है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ऐ उबय! वो क्या बात है? उन्होंने कहा कि मेरे घराने की औरतों ने कहा कि हम क़ुर्आन नहीं पढ़ती हैं इसलिये तुम्हारे पीछे नमाज़े (तरावीह़) तुम्हारी इक़्तिदा में पढ़ेंगी तो मैंने उनको आठ रकअत और वित्र पढ़ा दिया। आँहज़रत (ﷺ) ने ये सुनकर सुकूत फ़र्माया। गोया इस बात को पसंद फ़र्माया, इस ह़दीष़ से ष़ाबित हुआ कि स़ह़ाबा (रज़ि.) आप (ﷺ) के ज़माने में आठ रकअत (तरावीह़) पढ़ते थे।

ह़ज़रत उ़मर ख़लीफ़-ए-ष़ानी (रज़ि.) की नमाज़े तरावीह़ मय वित्र ग्यारह रकअ़त :

(10) **अन साइबिब्नि यज़ीदिन क़ाल अमर उ़मरु उबय इब्न कअबिन व तमीमद्दारी अंय्यक़ूमा लिन्नासि फ़ी रमज़ान इह़दा अशरत रक्अतन** साइब बिन यज़ीद ने कहा कि उ़मर फ़ारूक़ (रज़ि.) ने उबय बिन कअ़ब और तमीम दारी (रज़ि.) को हुक्म दिया कि रमज़ान शरीफ़ में लोगों को ग्यारह रकअ़त पढ़ाएँ। (मौत़ा इमाम मालिक)

वाज़ेह़ हुआ कि आठ और ग्यारह में वित्र का फ़र्क़ है और अ़लावा आठ रकअ़त तरावीह़ के वित्र एक तीन पाँच पढ़ना ह़दीष़ शरीफ़ में आए हैं और बीस तरावीह़ की रिवायत ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) से ष़ाबित नहीं और जों रिवायत उनसे नक़ल की जाती है वो मुन्क़त़अुस्सनद (सनद कटी हुई) है। इसलिये कि बीस का रावी यज़ीद बिन रुम्मान है। उसने ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) का ज़माना नहीं पाया। चुनाँचे अ़ल्लामा ऐनी ह़नफ़ी व अ़ल्लामा ज़ेलई ह़नफ़ी (रह.) उ़म्दतुल क़ारी और नस़्बुर्राया में फ़र्माते हैं कि **यज़ीदुब्नु रूमान लम युदरिक उ़मर** 'यज़ीद बिन रूम्मान ने ह़ज़रत उ़मर फ़ारूक़ (रज़ि.) का ज़माना नहीं पाया।' और जिन लोगों ने सय्यिदना उ़मर (रज़ि.) को पाया है उनकी रिवायात बिल इत्तिफ़ाक़ ग्यारह रकअ़त की हैं, उनमें ह़ज़रत साइब (रज़ि.) की रिवायत ऊपर गुज़र चुकी है।

और ह़ज़रत अअ़रज हैं जो कहते हैं **कानल्क़ारी यक़्रउ सूरतल्बक़्रति फ़ी ष़मानी रक्आतिन** क़ारी सूरह बक़रा आठ रकअ़त में ख़त्म करता था (मौत़ा इमाम मालिक)। फ़ारूक़े आज़म (रज़ि.) ने उबय बिन कअ़ब व तमीम दारी और सुलैमान बिन अबी ह़ष़्मा (रज़ि.) को साथ वित्र ग्यारह रकअ़त पढ़ाने का हुक्म दिया था (मुस़न्निफ़ इब्ने अबी शैबा)। ग़र्ज़ ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) का ये हुक्म ह़दीष़े रसूलुल्लाह (ﷺ) के मुवाफ़िक़ है। लिहाज़ा **अलैकुम बिसुन्नती व सुन्नतिल्ख़ुल्फ़ाइर्राशिदीन** से भी ग्यारह पर अ़मल करना षाबित हुआ।

फ़ुक़हा से आठ का षुबूत और बीस का ज़ुअ़फ़ :—

(11) अ़ल्लामा इब्नुल हमाम ह़नफ़ी (रह.) फ़तहुल क़दीर शरह़ हिदाया (जिल्द : 1, पेज नं. 205) में फ़र्माते हैं बीस रकअ़त तरावीह़ की ह़दीष़ ज़ईफ़ है। **अन्नहू मुख़ालिफुल्लिल ह़दीष़िस्स़ह़ीह़ि अन अबी सलमतब्नि अ़ब्दिर्रह़मानि अन्नहू सअल आइशत अल्हदीष़** अलावा बरीं ये (बीस की रिवायत) स़ह़ीह़ ह़दीष़ के भी ख़िलाफ़ है जो अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) रमज़ान व ग़ैर रमज़ान में ग्यारह रकअ़त से ज़ाइद न पढ़ते थे।

(12) शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ स़ाह़ब ह़नफ़ी मुह़द्दिष़ देह्लवी (रह.) फ़त्हु सिर्रुल मन्नान में फ़र्माते हैं **वलम यष़्बुत रिवायतु इश्रीन मिन्हु (ﷺ) कमा हुवल्मुतआ़रफ़ु अल्आन इल्ला फ़ी रिवायतिब्नि अबी शैबत व हुव ज़ईफ़ुन व क़द आरज़हू ह़दीष़ु आइशत व हुव ह़दीष़ुन स़ह़ीह़ुन** जो बीस तरावीह़ मशहूर व मअ़रूफ़ हैं और आँह़ज़रत (ﷺ) से ष़ाबित नहीं और जो इब्ने अबी शैबा में बीस की रिवायत है वो ज़ईफ़ है और ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) की स़ह़ीह़ ह़दीष़ के भी मुख़ालिफ़ है (जिसमें मय वित्र ग्यारह रकअ़त षाबित हैं)।

(13) शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ ह़नफ़ी मुह़द्दिष़ देह्लवी (रह.) अपनी किताब **मा ष़बत बिस्सुन्नह** (पेज नं. 217) में फ़र्माते हैं **वस़्स़ह़ीहु मा रवत्हु आइशतु अन्नहू (ﷺ) स़ल्ला इह़दा अशरत रक्अतन कमा हुव आदतुहू फ़ी क़ियामिल्लैलि व रूविय अन्नहू कान बअ़जुस़्स़लफ़ि फ़ी अहदि उमरब्नि अ़ब्दिलअ़ज़ीज़ि युस़ल्लून इह़दा अशरत रक्अतन क़स़दन तश्बीहन बिरसूलिल्लाहि (ﷺ)** स़ह़ीह़ ह़दीष़ वो है जिसको ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने रिवायत किया है कि आप

(ﷺ) ग्यारह रकअत पढ़ते थे। जैसा कि आप (ﷺ) की क़यामुल्लैल की आदत थी और रिवायत है कि कुछ सलफ़ अमीरुल मोमिनीन उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ के ज़मान-ए-ख़िलाफ़त में ग्यारह रकअ़त तरावीह़ पढ़ा करते थे ताकि आँह़ज़रत (ﷺ) की सुन्नत से मुशाबिहत पैदा करें।

इससे मा'लूम हुआ कि शैख़ स़ाह़ब (रह.) ख़ुद आठ रकअ़त तरावीह़ के क़ाइल थे और सलफ़ स़ालेह़ीन में भी ये मशहूर था कि आठ रकअ़त तरावीह़ सुन्नते नबवी है और क्यूँ न हो जबकि ख़ुद रसूलुल्लाह (ﷺ) ने आठ रकअ़त तरावीह़ पढ़ीं और स़ह़ाबा किराम (रज़ि.) को पढ़ाईं। नीज़ उबय बिन कअ़ब (रज़ि .) ने औरतों को आठ रकअ़त तरावीह़ पढ़ाईं तो हुज़ूर (ﷺ) ने पसंद फ़र्माया। इसी त़रह़ ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) के ज़माने में वित्र के साथ ग्यारह रकअ़त तरावीह़ पढ़ने का हुक्म था और लोग उस पर अ़मल करते थे। नीज़ ह़ज़रत उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ (रह.) के वक़्त में लोग आठ रकअ़त तरावीह़ पर सुन्नते रसूल (ﷺ) समझकर अ़मल करते थे और इमाम मालिक (रह.) ने भी मय वित्र ग्यारह रकअ़त ही को सुन्नत के मुत़ाबिक़ इख़्तियार किया है।

(14) अ़ल्लामा ऐ़नी ह़नफ़ी (रह.) फ़र्माते हैं कि **इह़दा अशरत रकअ़तन व हुव इख़्वार मालिक लिनफ़्सिही** 'ग्यारह रकअ़त को इमाम मालिक (रह.) ने अपने लिये इख़्तियार किया है।'

इसी त़रह़ फ़ुक़हा व उ़लमा जैसे अ़ल्लामा ऐ़नी ह़नफ़ी, अ़ल्लामा ज़ेलई ह़नफ़ी, हाफ़िज़ इब्ने ह़जर, अ़ल्लामा मुह़म्मद बिन नस्र मरवज़ी, शैख़ अ़ब्दुल हई स़ाह़ब ह़नफ़ी मुह़द्दिष़ देहलवी, मौलाना अ़ब्दुल ह़क़ ह़नफ़ी लखनवी (रह.) वग़ैरह ने अ़लावा वित्र के आठ रकअ़त तरावीह़ को सह़ीह़ और सुन्नते नबवी (ﷺ) फ़र्माया है जिनके ह़वाले पहले गुज़र चुके हैं। और इमाम मुह़म्मद शागिर्दे रशीद इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह.) ने तो फ़र्माया कि **व बिहाज़ा नाख़ुज़ु कुल्लहू** 'हम इन सब ह़दीष़ों को लेते हैं।' या'नी इन ग्यारह रकअ़त की ह़दीष़ों पर हमारा अ़मल है। फ़ल्ह़म्दुलिल्लाह कि वित्र के साथ ग्यारह रकअ़त तरावीह़ का मस्नून होना ष़ाबित हो गया।

इसके बाद सलफ़े उम्मत में कुछ ऐसे ह़ज़रात भी मिलते हैं जो बीस रकअ़त और तीस रकआ़त और चालीस रकआ़त बत़ौरे नफ़्ल नमाज़े तरावीह़ पढ़ा करते थे। लिहाज़ा ये दा'वा कि बीस रकअ़त पर इज्माअ़ हो गया, बात़िल है। अस़्ल सुन्नते नबवी आठ रकअ़त तरावीह़ तीन रकअ़त वित्र कुल ग्यारह रकअ़त हैं। नफ़्ल के लिये हर वक़्त इख़्तियार है कोई जिस क़दर चाहे पढ़ सकता है। जिन ह़ज़रात ने रमज़ान में आठ रकअ़त तरावीह़ को ख़िलाफ़े सुन्नत कहने का मश़ग़ला बना लिया है और ऐसा लिखना या कहना उनके ख़याल में ज़रूरी है वो सख़्त ग़लती में मुब्तला हैं बल्कि उसे भी एक त़रह़ से तल्बीसे इब्लीस कहा जा सकता है। अल्लाह तआ़ला सबको नेक समझ अ़त़ा करे, आमीन।

ह़ज़रत इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह.) ने जो रात के नवाफ़िल चार-चार रकआ़त मिलाकर पढ़ना अफ़ज़ल कहा है, वो उसी ह़दीष़ से दलील लेते हैं। हालाँकि उससे इस्तिदलाल स़ह़ीह़ नहीं क्योंकि उसमें ये तस़रीह़ नहीं है कि आप (ﷺ) चार-चार रकअ़त के बाद सलाम फेरते। मुम्किन है कि पहले आप (ﷺ) चार रकअ़त (दो सलाम के साथ) बहुत लम्बी पढ़ते हों फिर दूसरी चार रकअ़तें (दो सलाम के साथ) उनसे हल्की पढ़ते हों। ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने इस त़रह़ इन चार-चार रकअ़तों को अलग-अलग जिक्र किया है और ये भी मुम्किन है कि चार रकअ़तों का एक सलाम के साथ पढ़ना मुराद हो। इसलिये अ़ल्लामा क़स्तलानी (रह.) फ़र्माते है कि **व अम्मा मा सबक मिन अन्नहू कान युस़ल्ली मष़्ना मष़्ना ष़ुम्म वाह़िदतन फ़महमूलुन अ़ला वक़्तिन आख़र फल्अम्रानि जाइज़ानि** या'नी पिछली रिवायात में जो आप (ﷺ) की दो रकअ़त पढ़ना मज़्कूर हुआ है। फिर एक रकअ़त वित्र पढ़ना तो वो दूसरे वक़्त पर मह़मूल है और ये चार चार करके पढ़ना फिर तीन वित्र पढ़ना दूसरे वक़्त पर मह़मूल है इसलिये दोनों अम्र जाइज़ हैं।

1148. हमसे मुह़म्मद बिन मुष़न्ना ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे यह़्या बिन सईद क़त्तान ने बयान किया, और उन्होंने कहा कि हमसे हिशाम बिन उ़र्वा ने बयान किया कि मुझे मेरे बाप उ़र्वा ने ख़बर दी कि ह़ज़रत आ़इशा स़िद्दीक़ा ने

١١٤٨- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيْدٍ عَنْ هِشَامٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبِي عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا

बतलाया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) को रात की किसी नमाज़ में बैठकर क़ुर्आन पढ़ते नहीं देखा। यहाँ तक कि आप (ﷺ) बूढ़े हो गए तो बैठ कर क़ुर्आन पढ़ते थे। लेकिन जब तीस-चालीस आयतें रह जाती तो खड़े हो जाते फिर उनको पढ़कर रुकूअ करते थे। (राजेअ : 1118)

قَالَتْ: ((مَا رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقْرَأُ فِي شَيْءٍ مِنْ صَلاَةِ اللَّيْلِ جَالِسًا، حَتَّى إِذَا كَبِرَ قَرَأَ جَالِسًا، فَإِذَا بَقِيَ عَلَيْهِ مِنَ السُّورَةِ ثَلاَثُونَ أَوْ أَرْبَعُونَ آيَةً قَامَ فَقَرَأَهُنَّ، ثُمَّ رَكَعَ)). [راجع: ١١١٨]

बाब 18 : दिन और रात में बावुज़ू रहने की फ़ज़ीलत और वुज़ू के बाद रात और दिन में नमाज़ पढ़ने की फ़ज़ीलत का बयान

١٧- بَابُ فَضْلِ الصَّلاَةِ بَعْدَ الْوُضُوءِ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ

1149. हमसे इस्हाक़ बिन नस्र ने बयान किया, उनसे अबू हय्यान यह्या बिन सईद ने बयान किया, उनसे अबू ज़रआ ने बयान किया और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने हज़रत बिलाल (रज़ि.) से फ़ज्र के वक़्त पूछा कि ऐ बिलाल! मुझे अपना सबसे ज़्यादा उम्मीद वाला नेक काम बताओ, जिसे तुमने इस्लाम लाने के बाद किया है, क्योंकि मैंने जन्नत में अपने आगे तुम्हारे जूतों की चाप सुनी है। हज़रत बिलाल (रज़ि.) ने अर्ज़ किया मैंने तो अपने नज़दीक इससे ज़्यादा उम्मीद का कोई काम नहीं किया कि जब मैंने रात या दिन में किसी वक़्त भी वुज़ू किया तो मैं उस वुज़ू से नफ़्ल नमाज़ पढ़ता रहता, जितनी मेरी तक़दीर में लिखी गई थी।

١١٤٩- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ نَصْرٍ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنْ أَبِي حَيَّانَ عَنْ أَبِي زُرْعَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ لِبِلاَلٍ عِنْدَ صَلاَةِ الْفَجْرِ: ((يَا بِلاَلُ حَدِّثْنِي بِأَرْجَى عَمَلٍ عَمِلْتَهُ فِي الإِسْلاَمِ، فَإِنِّي سَمِعْتُ دَفَّ نَعْلَيْكَ بَيْنَ يَدَيَّ فِي الْجَنَّةِ)). قَالَ : مَا عَمِلْتُ عَمَلاً أَرْجَى عِنْدِي أَنِّي لَمْ أَتَطَهَّرْ طُهُورًا فِي سَاعَةِ لَيْلٍ أَوْ نَهَارٍ إِلاَّ صَلَّيْتُ بِذَلِكَ الطُّهُورِ مَا كُتِبَ لِي أَنْ أُصَلِّيَ. قَالَ أَبُو عَبْدِ اللهِ : دَفَّ نَعْلَيْكَ، يَعْنِي تَحْرِيْكَ.

तश्रीह : या'नी जैसे तू जन्नत में चल रहा है और तेरी जूतियों की आवाज़ निकल रही है। ये अल्लाह तआला ने आप (ﷺ) को दिखला दिया जो नज़र आया वो होने वाला था। उलमा का इस पर इत्तिफ़ाक़ है कि जन्नत में बेदारी के आलम में इस दुनिया में रहकर आँहज़रत (ﷺ) के सिवा और कोई नहीं गया, आप (ﷺ) मेअराज की शब में वहाँ तशरीफ़ ले गए। इसी तरह दोज़ख़ में और ये जो कुछ फ़ुक़रा से मन्क़ूल है कि उनका ख़ादिम हुक़्क़ा की आग लेने जहन्नम में गया ये महज़ ग़लत है। बिलाल (रज़ि.) दुनिया में भी बतौरे ख़ादिम के आँहज़रत (ﷺ) के आगे सामान वग़ैरह लेकर चला करते, वैसे ही अल्लाह तआला ने अपने पैग़म्बर को दिखला दिया कि बहिश्त में भी होगा। इस हदीष से बिलाल (रज़ि.) की फ़ज़ीलत निकली और उनका जन्नती होना षाबित हुआ। (वहीदी)

बाब 18 : इबादत में बहुत सख़्ती उठाना मकरूह है

١٨- بَابُ مَا يُكْرَهُ مِنَ التَّشْدِيْدِ فِي الْعِبَادَةِ

1150. हमसे अबू मअमर अब्दुल्लाह बिन उमर ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुल वारिष बिन सअद ने बयान किया, कहा कि

١١٥٠- حَدَّثَنَا أَبُومَعْمَرٍ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ

قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ إِبْرَاهِيْمَ بْنِ مُحَمَّدِ بْنِ الْمُنْتَشِرِ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ لاَ يَدَعُ أَرْبَعًا قَبْلَ الظُّهْرِ، وَرَكْعَتَيْنِ قَبْلَ الْغَدَاةِ)). تَابَعَهُ ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ وَعَمْرٌو عَنْ شُعْبَةَ.

हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने, कहा कि हमसे शुअबा ने, उनसे इब्राहीम बिन मुहम्मद बिन मुन्तशिर ने, उनसे उनके बाप मुहम्मद बिन मुन्तशिर ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ज़ुहर से पहले चार रकअत सुन्नत और सुबह की नमाज़ से पहले दो रकअत सुन्नत नमाज़ पढ़ना नहीं छोड़ते थे यह्या के साथ इस हदीष़ को इब्ने अबी अदी और अम्र बिन मरज़ूक़ ने शुअबा से रिवायत किया है।

ये हदीष़ बाब के मुताबिक़ नहीं क्योंकि बाब में दो रकअतें ज़ुहर से पहले पढ़ने का ज़िक्र है और शायद बाब के तर्जुमा का ये मतलब हो कि ज़ुहर से पहले दो ही रकअतें पढ़ना ज़रूरी नहीं, चार भी पढ़ सकता है।

٣٥- بَابُ الصَّلاَةِ قَبْلَ الْمَغْرِبِ

बाब 35 : मग़रिब से पहले सुन्नत पढ़ना

١١٨٣- حَدَّثَنَا أَبُومَعْمَرٍ قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ عَنِ الْحُسَيْنِ وَهُوَ الْمُعَلِّمُ عَنْ عَبْدِ اللهِ ابْنِ بُرَيْدَةَ قَالَ: حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ الْمُزَنِيُّ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((صَلُّوا قَبْلَ صَلاَةِ الْمَغْرِبِ)) - قَالَ فِي الثَّالِثَةِ:- ((لِمَنْ شَاءَ)). كَرَاهِيَةَ أَنْ يَتَّخِذَهَا النَّاسُ سُنَّةً. [طرفه في: ٧٣٦٨].

1173. हमसे अबू मअमर ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुल वारिष़ ने बयान किया, उनसे हुसैन मुअमल ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन बुरैदा ने, उन्होंने कहा कि मुझसे अब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल मुज़नी (रज़ि.) ने बयान किया, उनसे नबी करीम (ﷺ) ने इर्शाद फ़र्माया कि मग़रिब के फ़र्ज़ से पहले (सुन्नत की दो रकअत) पढ़ा करो। तीसरी मर्तबा आपने यूँ फ़र्माया कि जिसका जी चाहे क्योंकि आपको ये बात पसन्द न थी कि लोग इसे लाज़मी समझ बैठें। (दीगर मक़ाम : 7368)

हदीष़ और बाब में मुताबक़त ज़ाहिर है कि मग़रिब की जमाअत से पहले इन दो रकअतों को पढ़ना चाहें तो पढ़ सकता है।

١١٨٤- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يَزِيْدَ قَالَ: حَدَّثَنَا سَعِيْدُ بْنُ أَبِي أَيُّوبَ قَالَ: حَدَّثَنِي يَزِيْدُ بْنُ أَبِي حَبِيْبٍ قَالَ: سَمِعْتُ مَرْثَدَ بْنَ عَبْدِ اللهِ الْيَزَنِيَّ قَالَ: ((أَتَيْتُ عُقْبَةَ بْنَ عَامِرٍ الْجُهَنِيَّ فَقُلْتُ: أَلاَ أُعَجِّبُكَ مِنْ أَبِي تَمِيْمٍ، يَرْكَعُ رَكْعَتَيْنِ قَبْلَ صَلاَةِ الْمَغْرِبِ. فَقَالَ عُقْبَةُ : إِنَّا كُنَّا نَفْعَلُهُ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللهِ ﷺ، قُلْتُ : فَمَا يَمْنَعُكَ الآنَ؟ قَالَ: الشُّغْلُ)).

1184. हमसे अब्दुल्लाह बिन यज़ीद ने बयान किया, कहा कि हमसे सईद बिन अबी अय्यूब ने बयान किया, कहा कि मुझसे यज़ीद बिन अबी हबीब से बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने मरष़द बिन अब्दुल्लाह यज़नी से सुना कि मैं उक़्बा बिन आमिर जुहनी सहाबी (रज़ि.) के पास आया और अर्ज़ किया आप को अबू तमीम अब्दुल्लाह बिन मालिक पर ता'ज्जुब नहीं आया कि वो मग़रिब की नमाज़े-फ़र्ज़ से पहले दो रकअत नफ़्ल पढते हैं। इस पर उक़्बा ने फ़र्माया कि हम भी रसूलुल्लाह (ﷺ) के ज़माने में इसे पढ़ते थे। मैंने कहा फिर अब इसके छोड़ने की क्या वजह है? उन्होंने फ़र्माया कि दुनिया का कारोबार मानेअ है।

तश्रीह : दोनों अहादीष़ से ष़ाबित हुआ कि अब भी मौक़ा मिलने पर मग़रिब से पहले उन दो रकअतों को पढ़ा जा सकता है, अगरचे पढ़ना ज़रूरी नहीं मगर कोई पढ़ ले तो यक़ीनन मोजिबे अज्रो–ष़वाब होगा। कुछ लोगों ने कहा कि

20. किताब फ़ज़्लुस्सलात फ़ी मक्का वल मदीना

मक्का और मदीना में नमाज़ की फ़ज़ीलत

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

बाब 1 : मक्का और मदीना (ज़ादहुमल्लाह शरफ़न व ता'ज़ीमन) की मसाजिद में नमाज़ की फ़ज़ीलत का बयान

١ - بَابُ فَضْلِ الصَّلاَةِ فِي مَسْجِدِ مَكَّةَ والْـمَدِيْنَةِ

1188. हमसे हफ़्स बिन उ़मर ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझे अ़ब्दुल मलिक ने क़ज़आ से ख़बर दी, उन्होंने कहा कि मैंने अबू सईद (रज़ि.) से चार बातें सुनीं और उन्होंने बतलाया कि मैंने उन्हें नबी करीम (ﷺ) से सुना था, आपने नबी करीम (ﷺ) के साथ बारह जिहाद किये थे। (राजेअ़ : 582)

١١٨٨- حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَبْدُ الْمَلِكِ عَنْ قَزَعَةَ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا سَعِيْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: أَرْبَعًا قَالَ سَمِعْتُ مِنَ النَّبِيِّ ﷺ، وَكَانَ غَزَا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ ثِنْتَي عَشْرَةَ غَزْوَةً. [راجع: ٥٨٦]

1189. (दूसरी सनद) हमसे अ़ली बिन मदीनी ने बयान किया, कहा कि हमसे सुफ़यान बिन उ़यय्ना ने बयान किया, उनसे ज़ुहरी ने, उनसे सईद बिन मुसय्यिब ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि तीन मस्जिदों के सिवा किसी के लिये कजावे न बाँधें (या'नी सफ़र न किया जाए) एक मस्जिदे ह़राम, दूसरी रसूलुल्लाह (ﷺ) की मस्जिद (मस्जिदे नबवी) और तीसरी मस्जिदे अक़्सा या'नी बैतुल मक़्दिस। (उन चार बातों का बयान आगे आ रहा है)

١١٨٩- ح وَحَدَّثَنَا عَلِيٌّ قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَعِيْدٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لاَ تُشَدُّ الرِّحَالُ إِلاَّ إِلَى ثَلاَثَةِ مَسَاجِدَ: الْـمَسْجِدِ الْحَرَامِ، وَمَسْجِدِ الرَّسُوْلِ ﷺ وَمَسْجِدِ الأَقْصَى)).

तश्रीह : मस्जिदे अक़्सा की वजहे तस्मिया क़स्तलानी के लफ़्ज़ों में ये है। **व सुम्मिय बिही लिबुअ़्दिही अ़न मस्जिदि मक्कत फ़िल मसाफ़ति** या'नी इसलिये उसका नाम मस्जिदे अक़्सा रखा गया कि मस्जिद मक्का से मुसाफ़त में ये दूर वाक़ेअ़ है। लफ़्ज़े रिहाल ये रहल की जमा है ये लफ़्ज़ ऊँट के कज़ावा पर बोला जाता है। उस ज़माने में सफ़र के लिये ऊँट का इस्ते'माल ही आ़म था। इसलिये यही लफ़्ज़ इस्ते'माल किया गया।

मत़लब ये हुआ कि ये तीन मसाजिद ही ऐसा मन्सब रखती हैं कि उनमें नमाज़ पढ़ने के लिये, उनकी ज़ियारत करने

बाब 10 : नमाज़ में कौन–कौन से काम दुरुस्त है?

١٠– بَابُ مَا يَجُوزُ مِنَ الْعَمَلِ فِي الصَّلاَةِ

1209. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मस्लमा क़अ़नबी ने बयान किया, कहा कि हमसे इमाम मालिक (रह.) ने बयान किया, उनसे अबुन्नज़र सालिम बिन अबू उमय्या ने, उनसे अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रह्मान ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने फ़र्माया कि मैं अपना पाँव नबी करीम (ﷺ) के सामने फैला लेती थी और आप नमाज़ पढ़ते होते। जब आप (ﷺ) सज्दा करने लगते तो आप मुझे हाथ लगाते मैं पाँव समेट लेती। फिर जब आप (ﷺ) खड़े हो जाते तो मैं फिर फैला लेती। (राजेअ : 382)

١٢٠٩– حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ قَالَ حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنْ أَبِي النَّضْرِ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((كُنْتُ أَمُدُّ رِجْلَيَّ فِي قِبْلَةِ النَّبِيِّ ﷺ وَهُوَ يُصَلِّي، فَإِذَا سَجَدَ غَمَزَنِي، فَرَفَعْتُهَا، فَإِذَا قَامَ مَدَدْتُهَا)).

[راجع: ٣٨٢]

1210. हमसे महमूद बिन ग़ीलान ने बयान किया, कहा कि हमसे शबाबा ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन ज़ियाद ने बयान किया, उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से कि आप (ﷺ) ने एक मर्तबा एक नमाज़ पढ़ी फिर फ़र्माया कि मेरे सामने एक शैतान आ गया और कोशिश करने लगा कि मेरी नमाज़ तोड़ दे। लेकिन अल्लाह तआ़ला ने उसको मेरे क़ाबू में कर दिया, मैंने उसका गला घोंटा और उसको धकेल दिया। आख़िर में मेरा इरादा हुआ कि उसे मस्जिद के एक सुतून से बाँध दूँ और जब सुबह हो तो तुम भी देखो। लेकिन मुझे सुलैमान अ़लैहिस्सलाम की दुआ़ याद आ गई, ऐ अल्लाह! मुझे ऐसी सल्तनत अ़ता कीजियो, जो मेरे बाद किसी और को न मिले। (इसलिये मैंने उसे छोड़ दिया) और अल्लाह तआ़ला ने उसे ज़िल्लत के साथ भगा दिया। इसके बाद नज़र बिन शुमैल ने कहा कि ज़अ़तुहू ज़ाल से है जिसके मा'नी है कि मैंने उसका गला घोंट दिया और दअ़त अल्लाह तआ़ला के इस क़ौल से लिया गया है यौम युदअ़ौन जिस के मा'नी हैं क़यामत के दिन वो दोज़ख़ की तरफ़ धकेले जाएंगे। दुरुस्त पहला ही लफ़्ज़ है। अलबत्ता शुअ़बा ने इसी तरह ऐन और ताअ की तश्दीद के साथ बयान किया है।

(राजेअ़ : 461)

١٢١٠– حَدَّثَنَا مَحْمُودٌ قَالَ حَدَّثَنَا شَبَابَةُ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ زِيَادٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ((عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ صَلَّى صَلاَةً قَالَ: ((إِنَّ الشَّيْطَانَ عَرَضَ لِي فَشَدَّ عَلَيَّ يَقْطَعُ الصَّلاَةَ عَلَيَّ، فَأَمْكَنَنِي اللهُ مِنْهُ فَذَعَتُّهُ، وَلَقَدْ هَمَمْتُ أَنْ أُوثِقَهُ إِلَى سَارِيَةٍ حَتَّى تُصْبِحُوا فَتَنْظُرُوا إِلَيْهِ، فَذَكَرْتُ قَوْلَ سُلَيْمَانَ عَلَيْهِ السَّلاَمُ: ﴿رَبِّ لِي مُلْكًا لاَ يَنْبَغِي لأَحَدٍ مِنْ بَعْدِي﴾ فَرَدَّهُ اللهُ خَاسِئًا)) ثُمَّ قَالَ النَّضْرُ بْنُ شُمَيْلٍ: فَذَعَتُّهُ بِالذَّالِ، أَيْ خَنَقْتُهُ. وَفَدَعَّتُّهُ مِنْ قَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿يَوْمَ يُدَعُّونَ﴾ أَيْ يُدْفَعُونَ. وَالصَّوَابُ الأَوَّلُ، إِلاَّ أَنَّهُ كَذَا قَالَ بِتَشْدِيدِ الْعَيْنِ وَالتَّاءِ.

[راجع: ٤٦١]

तश्रीह : यहाँ ये ए'तिराज़ न होगा कि दूसरी ह़दीष़ में है कि शैत़ान उ़मर के साये से भी भागता है। जब ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) से शैत़ान डरता है तो आँह़ज़रत (ﷺ) के पास क्योंकर आया? आँह़ज़रत (ﷺ) उ़मर (रज़ि.) से कहीं ज़्यादा

जो ऊपर गुज़र चुकी है और आगे भी आएगी।

बाब 14 : इस बारे में कि अगर नमाज़ी से कोई कहे कि आगे बढ़ जा या ठहर जा और वो आगे बढ़ जाए या ठहर जाए तो कोई क़बाहत नहीं है

١٤- بَابُ إِذَا قِيلَ لِلْمُصَلِّي: تَقَدَّمْ أَوِ انْتَظِرْ فَانْتَظَرَ - فَلاَ بَأْسَ

1215. हमसे मुहम्मद बिन कष़ीर ने बयान किया, कहा कि हमको सुफ़यान ष़ौरी ने ख़बर दी, उन्हें अबू हाज़िम ने, उनको सहल बिन सअ़द (रज़ि.) ने बतलाया कि लोग नबी करीम (ﷺ) के साथ नमाज़ तरह पढ़ते कि तहबन्द छोटे होने की वजह से उन्हें अपनी गर्दनों से बाँधे रखते और औरतों को (जो मर्दों के पीछे जमाअ़त में शरीक रहती थीं) कह दिया जाता कि जब तक मर्द पूरी तरह सिमट पर न बैठ जाए, तुम अपने सर (सज्दे से) न उठाना। (राजेअ़ : 362)

١٢١٥- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ قَالَ أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ عَنْ أَبِي حَازِمٍ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((كَانَ النَّاسُ يُصَلُّونَ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ وَهُمْ عَاقِدُو أُزْرِهِمْ مِنَ الصِّغَرِ عَلَى رِقَابِهِمْ، فَقِيلَ لِلنِّسَاءِ: لاَ تَرْفَعْنَ رُؤُوسَكُنَّ حَتَّى يَسْتَوِيَ الرِّجَالُ جُلُوسًا)). [راجع: ٣٦٢]

तश्रीह : इमाम नमाज़ में भूल जाए या किसी दीगर ज़रूरी अम्र पर उसे आगाह करना हो जो मर्द सुब्हानल्लाह कहें और औरते ताली बजाएँ अगर किसी मर्द ने नादानी की वजह से तालियाँ बजाईं तो उसकी नमाज़ नहीं टूटेगी। चुनाँचे सहल (रज़ि.) की ह़दीष़ में जो दो बाबों के बाद आ रही है कि स़हाबा किराम (रज़ि.) ने नादानी की वजह से ऐसा किया और आप (ﷺ) ने उनको नमाज़ लौटाने का हुक्म नहीं दिया। ह़दीष़ और बाब में यूँ मुताबक़त हुई कि ये बात औरतों को ह़ालते नमाज़ में कही गई या नमाज़ से पहले। शक़ अव्वल में मा'लूम हुआ कि नमाज़ी को मुख़ातिब करना और नमाज़ के लिये किसी का इंतिज़ार करना जाइज़ है और शक़े ष़ानी में मा'लूम हुआ कि नमाज़ में इंतिज़ार करना जाइज़ है। ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) के कलाम का ह़ासिल ये है कि किसी का इंतिज़ार अगर शरई है तो जाइज़ है वरना नहीं। (फ़त्हुलबारी)

बाब 15 : नमाज़ में सलाम का जवाब (ज़बान से) न दे

١٥- بَابُ لاَ يَرُدُّ السَّلاَمَ فِي الصَّلاَةِ

1216. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन अबी शैबा ने बयान किया, कहा कि हमसे इब्ने फ़ुज़ैल ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे इब्राहीम ने, उनसे अलक़मा ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द (रज़ि.) ने कहा कि (इब्तिदाए-इस्लाम में) नबी करीम (ﷺ) जब नमाज़ में होते तो मैं आपको सलाम करता तो आप (ﷺ) जवाब देते थे। मगर जब हम (ह़ब्शा से, जहाँ हिजरत की थी) वापस आये तो मैंने (पहले की तरह नमाज़ में) सलाम किया। मगर आप (ﷺ) ने कोई जवाब नहीं दिया (क्योंकि अब नमाज़ में बातचीत वग़ैरह की मुमानअ़त नाज़िल हो गई थी) और फ़र्माया कि नमाज़ में इससे मशग़ूलियत होती है। (राजेअ़ : 1199)

١٢١٦- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ فُضَيْلٍ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ عَلْقَمَةَ عَنْ عَبْدِ اللهِ قَالَ: ((كُنْتُ أُسَلِّمُ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ وَهُوَ فِي الصَّلاَةِ فَيَرُدُّ عَلَيَّ، فَلَمَّا رَجَعْنَا سَلَّمْتُ عَلَيْهِ فَلَمْ يَرُدَّ عَلَيَّ وَقَالَ: ((إِنَّ فِي الصَّلاَةِ لَشُغْلاً)). [راجع: ١١٩٩]

या'नी जब ज़ुबान पर तस्बीह़ जारी हो और दिल घर के जानवरों में लगा हुआ हो तो ऐसी तस्बीह़ क्या अष़र पैदा कर सकती है। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) के अष़रे मज़कूर को इब्ने अबी शैबा ने बइस्नादे स़ह़ीह़ रिवायत किया है। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) को अल्लाह ने अपने दीन की ख़िदमत व नुस़रत के लिये पैदा फ़र्माया था। उनको नमाज़ में भी वही ख़्यालात दामनगीर रहते थे, नमाज़ में जिहाद के लिये फ़ौजकशी और जंगी तदबीरें सोचते थे चूँकि नमाज़ नफ़्स और शैत़ान के साथ जिहाद है और उन ह़र्बी तदाबीर को सोचना भी अज़ क़िस्मे जिहाद है लिहाज़ा मुफ़्सिदे नमाज़ नहीं। (ह़वाशी सल्फ़िया, पारा नं. 5 पेज नं. 443)

1221. हमसे इस्ह़ाक़ बिन मन्सूर ने बयान किया, कहा कि हमसे रौह बिन उ़बादा ने, कहा कि हमसे उ़मर ने जो सईद के बेटे हैं, उन्होंने कहा कि मैंने नबी करीम (ﷺ) के साथ अ़स्र की नमाज़ पढ़ी, आप (ﷺ) सलाम फेरते ही बड़ी तेज़ी से उठे और अपनी एक बीवी के हुज्रे में तशरीफ़ ले गये, फिर बाहर तशरीफ़ लाए। आपने अपनी जल्दी पर इस ता'ज्जुब व ह़ैरत को मह़सूस किया जो स़ह़ाबा के चेहरे से ज़ाहिर हो रहा था, इसलिये आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि नमाज़ में मुझे सोने का एक डला याद आ गया जो हमारे पास तक़्सीम से बाक़ी रह गया था। मुझे बुरा मा'लूम हुआ कि हमारे पास वो शाम तक या रात तक रह जाए। इसलिये मैंने उसे तक़्सीम करने का हुक्म दे दिया।

(राजेअ़: 851)

١٢٢١- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ قَالَ حَدَّثَنَا رَوْحٌ قَالَ حَدَّثَنَا عُمَرُ هُوَ ابْنُ سَعِيدٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي ابْنُ أَبِي مُلَيْكَةَ عَنْ عُقْبَةَ بْنِ الْحَارِثِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ((صَلَّيْتُ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ الْعَصْرَ فَلَمَّا سَلَّمَ قَامَ سَرِيعًا وَدَخَلَ عَلَى بَعْضِ نِسَائِهِ، ثُمَّ خَرَجَ وَرَأَى مَا فِي وُجُوهِ الْقَوْمِ مِنْ تَعَجُّبِهِمْ لِسُرْعَتِهِ فَقَالَ: ((ذَكَرْتُ - وَأَنَا فِي الصَّلاَةِ - تِبْرًا عِنْدَنَا فَكَرِهْتُ أَنْ يُمْسِيَ - أَوْ يَبِيتَ - عِنْدَنَا، فَأَمَرْتُ بِقِسْمَتِهِ)). [راجع: ٨٥١]

नमाज़ में आँह़ज़रत (ﷺ) को सोने का बक़ाया डला तक़्सीम के लिये याद आ गया यहीं से बाब का मत़लब ष़ाबित होता है।

1222. हमसे यह़्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा कि हमसे लैष़ ने उनसे जा'फ़र बिन रबीआ़ ने और उनसे अअ़रज ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि जब नमाज़ के लिये अज़ान दी जाती तो शैतान पीठ मोड़ कर हवा ख़ारिज करता हुआ भाग जाता है ताकि अज़ान न सुन सके। जब मुअज़्ज़िन चुप हो जाता है तो मर्दूद फिर आ जाता है और जब जमाअ़त खड़ी होने लगती है (और तक्बीर कही जाती है) तो फिर भाग जाता है। लेकिन जब मुअज़्ज़िन चुप हो जाता है, फिर आ जाता है और आदमी के दिल में बराबर वस्वसा पैदा करता रहता है। कहता है कि (फलाँ-फलाँ बात) याद कर। कमबख़्त वो बातें याद दिलाता है जो उस नमाज़ी के ज़हन में भी न थी। इस त़रह नमाज़ी को ये भी याद नहीं रहता कि उसने कितनी रकअ़तें पढ़ी है। अबू सलमा अ़ब्दुर्रह़मान न

١٢٢٢- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ جَعْفَرٍ عَنِ الأَعْرَجِ قَالَ: قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((إِذَا أُذِّنَ بِالصَّلاَةِ أَدْبَرَ الشَّيْطَانُ لَهُ ضُرَاطٌ حَتَّى لاَ يَسْمَعَ التَّأْذِينَ، فَإِذَا سَكَتَ الْمُؤَذِّنُ أَقْبَلَ، فَإِذَا ثُوِّبَ أَدْبَرَ، فَإِذَا سَكَتَ أَقْبَلَ، فَلاَ يَزَالُ بِالْمَرْءِ يَقُولُ لَهُ اذْكُرْ مَا لَمْ يَكُنْ يَذْكُرُ حَتَّى لاَ يَدْرِي كَمْ صَلَّى)). قَالَ أَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ: إِذَا فَعَلَ أَحَدُكُمْ ذَلِكَ فَلْيَسْجُدْ سَجْدَتَيْنِ وَهُوَ قَاعِدٌ،

(दीगर मक़ाम : 3667, 3669, 4452, 4455, 5710, 3668, 3680, 4453, 4454, 4457, 5711)

[أطرافه في: ٣٦٦٧، ٣٦٦٩، ٤٤٥٢، ٤٤٥٥، ٥٧١٠].

[أطرافه في: ٣٦٦٨، ٣٦٧٠، ٤٤٥٣، ٤٤٥٤، ٤٤٥٧، ٥٧١١].

तश्रीह : आँहज़रत (ﷺ) की वफ़ात के बाद हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने आप (ﷺ) का चेहर-ए-मुबारक खोला और आप को बोसा दिया। यहीं से बाब का तर्जुमा ष़ाबित हुआ। वफ़ाते नबवी पर स़हाबा किराम में एक तहलका मच गया था। मगर बरवक़्त हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) ने उम्मत को सम्भाला और ह़क़ीक़ते ह़ाल का इज़्हार फ़र्माया जिससे मुसलमानों में एकबारगी सुकून हो गया और सबको इस बात पर पूरा इत्मीनान हासिल हो गया कि इस्लाम अल्लाह का सच्चा दीन है वो अल्लाह हमेशा ज़िन्दा रहने वाला है। आँहज़रत (ﷺ) की वफ़ात से इस्लाम की बक़ा पर कोई अष़र नहीं पड़ सकता, आप (ﷺ) रसूलों की जमाअ़त के एक फ़र्दे-फ़रीद हैं और दुनिया में जो भी रसूल आएँ हैं अपने अपने वक़्त पर सब दुनिया से रुख़्सत हो गये। ऐसे ही आप भी अपना मिशन पूरा करके मलअे आ़ला से जा मिले। सल्लल लाहु अ़लैहि व सल्लम, अला हबीबिही व बारिक व सल्लिम। कुछ स़हाबा किराम (रज़ि.) का ये ख़्याल भी हो गया था कि आँहज़रत (ﷺ) दोबारा ज़िन्दा होंगे। इसीलिये हज़रत सिद्दीक़ (रज़ि.) ने फ़र्माया कि अल्लाह पाक आप (ﷺ) पर दो मौत त़ारी नहीं करेगा। अल्लाहुम्म स़ल्लि अ़ला मुहम्मद व अ़ला आ़लि मुहम्मद व बारिक व सल्लिम।

1243. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा कि हमसे लैष़ बिन सअ़द ने कहा, उनसे अक़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उन्होंने फ़र्माया कि मुझे ख़ारजा बिन ज़ैद बिन ष़ाबित ने ख़बर दी कि उम्मे अलअ़लाअ अन्स़ार की एक औ़रत ने, जिन्होंने नबी करीम (ﷺ) से बैअ़त की थी, ने उन्हें ख़बर दी कि मुहाजिरीन क़ुर्आ डालकर अन्सार में बाँट दिये गये तो हज़रत उ़ष्मान बिन मज़्ऊन (रज़ि.) हमारे हिस़्से में आए। चुनाँचे हमने उन्हें अपने घर में रखा। आख़िर वो बीमार हुए और उसी में वफ़ात पा गये। वफ़ात के बाद ग़ुस्ल दिया गया और कफ़न में लपेट दिया गया तो रसूलुल्लाह (ﷺ) तशरीफ़ लाए। मैंने कहा, अबू साइब! आप पर अल्लाह की रहमतें हों मेरी आपके मुता'ल्लिक़ शहादत ये है कि अल्लाह तआ़ला ने आपकी इ़ज़्ज़त फ़र्माई है। इस पर नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम्हें कैसे मा'लूम हुआ कि अल्लाह तआ़ला ने इनकी इ़ज़्ज़त फ़माई है? मैंने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! मेरे माँ-बाप आप पर क़ुर्बान हो, फिर किसकी अल्लाह तआ़ला इ़ज़्ज़त-अफ़ज़ाई करेगा? आपने फ़र्माया, इसमें शुब्हा नहीं कि उनकी मौत आ चुकी, क़सम अल्लाह की कि मैं भी इनके लिये ख़ैर की उम्मीद रखता हूँ, लेकिन वल्लाह! मुझे खुद अपने मुता'ल्लिक़ भी मा'लूम नहीं कि मेरे साथ क्या मामला होगा। हालाँकि मैं

١٢٤٣- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي خَارِجَةُ بْنُ زَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ أَنَّ أُمَّ الْعَلاَءِ - امْرَأَةٌ مِنَ الأَنْصَارِ بَايَعَتِ النَّبِيَّ ﷺ - أَخْبَرَتْهُ أَنَّهُ اقْتُسِمَ الْمُهَاجِرُونَ قُرْعَةً، فَطَارَ لَنَا عُثْمَانُ بْنُ مَظْعُونٍ فَأَنْزَلْنَاهُ فِي أَبْيَاتِنَا، فَوَجِعَ وَجَعَهُ الَّذِي تُوُفِّيَ فِيهِ، فَلَمَّا تُوُفِّيَ وَغُسِّلَ وَكُفِّنَ فِي أَثْوَابِهِ دَخَلَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ، فَقُلْتُ، رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْكَ أَبَا السَّائِبِ، فَشَهَادَتِي عَلَيْكَ لَقَدْ أَكْرَمَكَ اللَّهُ. فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((وَمَا يُدْرِيكِ أَنَّ اللَّهَ قَدْ أَكْرَمَهُ؟)) فَقُلْتُ: بِأَبِي أَنْتَ يَا رَسُولَ اللَّهِ، فَمَنْ يُكْرِمُهُ اللَّهُ؟ فَقَالَ عَلَيْهِ السَّلاَمُ: ((أَمَّا هُوَ فَقَدْ جَاءَهُ الْيَقِينُ. وَاللَّهِ إِنِّي لأَرْجُو لَهُ الْخَيْرَ، وَاللَّهِ مَا أَدْرِي - وَأَنَا رَسُولُ اللَّهِ - مَا يُفْعَلُ بِي)). قَالَتْ:

अल्लाह का रसूल हूँ। उम्मे अल-अलाअ ने कहा कि ख़ुदा की क़सम! अब मैं कभी किसी के मुता'ल्लिक़ (इस तरह की) गवाही नहीं दूँगी।

فَوَ اللهِ لاَ أُزَكِّي أَحَدًا بَعْدَهُ أَبَدًا.

तश्रीह : इस रिवायत में कई उमूर का बयान है। एक तो उसका कि जब मुहाजिरीन मदीना में आए तो आँहज़रत (ﷺ) ने उनकी परेशानी दूर करने के लिये अंसार से उनका भाईचारा क़ायम करा दिया। इस बारे में क़ुर्आ-अंदाज़ी की गई और जो मुहाजिर जिस अंसारी के हिस्से में आया वो उसके हवाले कर दिया गया। उन्होंने सगे भाई से ज़्यादा उनकी ख़ातिर तवाजोअ की। बाब का तर्जुमा इससे निकला कि आँहज़रत (ﷺ) ने गुस्ल व कफ़न के बाद उ़ष्मान बिन मज़्ऊन को देखा। ह़दीष़ से ये भी निकला कि किसी भी बन्दे के बारे में ह़क़ीक़त का इल्म अल्लाह ही को ह़ासिल है। हमें अपने ज़न्न के मुताबिक़ उनके ह़क़ में नेक गुमान करना चाहिये। ह़क़ीक़ते ह़ाल को अल्लाह के ह़वाले करना चाहिये।

कई मुआनिदीने इस्लाम ने यहाँ ए'तिराज़ किया है कि जब आँहज़रत (ﷺ) को ख़ुद अपनी भी नजात का यक़ीन न था तो आप अपनी उम्मत की क्या सिफ़ारिश करेंगे।

इस ए'तिराज़ के जवाब में पहली बात जो ये है कि आँहज़रत (ﷺ) का ये इर्शाद गिरामी इब्तिदा-ए-इस्लाम का है, बाद में अल्लाह ने आपको सूरह फ़तह़ में ये बशारत दी कि आपके अगले और पिछले गुनाह बख़्श दिये गये तो ये ए'तिराज़ ख़ुद दूर हो गया और ष़ाबित हुआ कि उसके बाद आपको अपनी नजात के बारे में यक़ीने कामिल ह़ासिल हो गया था। फिर भी शाने बन्दगी उसको मुस्तलज़िम है कि परवारदिगार की शाने स़मदियत हमेशा मल्ह़ूज़े ख़ातिर रहे। आप (ﷺ) का शफ़ाअत करना बरहक़ है बल्कि शफ़ाअते कुबरा का मुक़ामे मह़मूद आप (ﷺ) को ह़ासिल है।

हमसे सईद बिन उ़फ़ैर ने बयान किया और उनसे लैष़ ने साबिक़ा रिवायत की तरह बयान किया, नाफ़ेअ बिन यज़ीद ने अ़क़ील से (मा युफ़्अलु बी के बजाय) मा युफ़्अलु बिही के अल्फ़ाज़ नक़ल किये हैं और इस रिवायत की मुताबअ़त शुऐब, अ़म्र बिन दीनार और मअ़मर ने की है।

(दीगर मक़ाम : 2678, 3929, 7003, 7004, 7018)

حَدَّثَنَا سَعِيْدُ بْنُ عُفَيْرٍ قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ..مِثْلَهُ. وَقَالَ نَافِعُ بْنُ يَزِيْدَ عَنْ عُقَيْلٍ: مَا يُفْعَلُ بِهِ.وَتَابَعَهُ شُعَيْبٌ وَعَمْرُو بْنُ دِيْنَارٍ وَمَعْمَرٌ.

[أطرافه في : ٢٦٨٧، ٣٩٢٩، ٧٠٠٣، ٧٠٠٤، ٧٠١٨].

इस सूरत में तर्जुमा ये होगा कि क़सम अल्लाह की मैं नहीं जानता कि उसके साथ क्या मुआमला किया जाएगा। ह़ालाँकि उसके ह़क़ में मेरा गुमान नेक है।

1244. हमसे मुह़म्मद बिन बश्शार ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे ग़ुन्दर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने मुह़म्मद बिन मुन्कदिर से सुना, उन्होंने कहा कि मैंने जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने कहा कि जब मेरे वालिद शहीद कर दिये गये तो उनके चेहरे पर पड़ा हुआ कपड़ा खोलता और रोता था। दूसरे लोग तो मुझे इससे रोकते थे लेकिन नबी करीम (ﷺ) कुछ नहीं कह रहे थे। आख़िर मेरी चची फ़ातिमा (रज़ि.) भी रोन

١٢٤٤- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ قَالَ : حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ قَالَ : حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: سَمِعْتُ مُحَمَّدَ بْنَ الْمُنْكَدِرِ قَالَ: سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ : ((لَمَّا قُتِلَ أَبِي جَعَلْتُ أَكْشِفُ الثَّوْبَ عَنْ وَجْهِهِ أَبْكِي، وَيَنْهَوْنِي عَنْهُ، وَالنَّبِيُّ ﷺ لاَ يَنْهَانِي، فَجَعَلَتْ عَمَّتِي

1303. हमसे हसन बिन अब्दुल अज़ीज़ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे यह्या बिन हस्सान ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे क़ुरैश ने जो हय्यान के बेटे हैं, ने बयान किया और उनसे षाबित ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि) ने बयान किया कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ अबू यूसुफ़ लोहार के यहाँ गये। ये इब्राहीम (रसूलुल्लाह ﷺ के साहबज़ादे) को दूध पिलाने वाली आया के ख़ाविन्द थे। आँहज़रत ने इब्राहीम (रज़ि.) को गोद में लिया और प्यार किया और सूंघा। फिर इसके बाद हम उनके यहाँ घर गये। देखा कि उस वक़्त इब्राहीम (रज़ि.) दम तोड़ रहे हैं। रसूलुल्लाह (ﷺ) की आँखें आँसुओं से भर आईं तो अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि.) बोल पड़े कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! आप भी लोगों कि तरह बेसब्री करने लगे? हुज़ूरे-अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया, ऐ इब्ने औफ़! ये बेसब्री नहीं, ये तो रहमत है। फिर आप (ﷺ) दोबारा रोए और फ़र्माया, आँखों से आँसू जारी है और दिल ग़म से निढाल है, पर ज़बान से हम कहेंगे वही जो हमारे परवरदिगार को पसन्द है और ऐ इब्राहीम! हम तुम्हारी जुदाई से ग़मगीन हैं। इस हदीष को मूसा बिन इस्माईल ने सुलैमान बिन मुग़ीरा से, उनसे षाबित ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से रिवायत किया है।

١٣٠٣- حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ عَبْدِ الْعَزِيزِ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ حَسَّانَ قَالَ حَدَّثَنَا قُرَيْشٌ هُوَ ابْنُ حَيَّانَ عَنْ ثَابِتٍ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((دَخَلْنَا مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ عَلَى أَبِي سَيْفٍ الْقَيْنِ - وَكَانَ ظِئْرًا لإِبْرَاهِيمَ - فَأَخَذَ رَسُولُ اللهِ ﷺ إِبْرَاهِيمَ فَقَبَّلَهُ وَشَمَّهُ ثُمَّ دَخَلْنَا عَلَيْهِ بَعْدَ ذَلِكَ - وَإِبْرَاهِيمُ يَجُودُ بِنَفْسِهِ - فَجَعَلَتْ عَيْنَا رَسُولِ اللهِ ﷺ تَذْرِفَانِ. فَقَالَ لَهُ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَوْفٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: وَأَنْتَ يَا رَسُولَ اللهِ؟ فَقَالَ: ((يَا ابْنَ عَوْفٍ إِنَّهَا رَحْمَةٌ)). ثُمَّ أَتْبَعَهَا بِأُخْرَى فَقَالَ ﷺ: ((إِنَّ الْعَيْنَ تَدْمَعُ، وَالْقَلْبَ يَحْزَنُ، وَلاَ نَقُولُ إِلاَّ مَا يَرْضَى رَبُّنَا، وَإِنَّا بِفِرَاقِكَ يَا إِبْرَاهِيمُ لَمَحْزُونُونَ)). رَوَاهُ مُوسَى عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ الْمُغِيرَةِ عَنْ ثَابِتٍ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

तश्रीह: हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ये बतलाना चाहते हैं कि इस तरह आँखों से आंसू निकल आएँ और दिल ग़मगीन हो और ज़ुबान से कोई अल्फ़ाज़ अल्लाह की नाराज़गी का न निकले तो ऐसा रोना बेसब्री नहीं ये आंसू रहमत हैं और ये भी षाबित हुआ कि मरने वाले को मुहब्बत आमेज़ लफ़्ज़ों से मुख़ातब करके उसके हक़ में कलिम-ए-ख़ैर कहना चाहिये। आँहज़रत (ﷺ) के ये साहबज़ादे मारिया क़िब्तिया (रज़ि.) के बत्न से पैदा हुए थे जो मशिय्यते ऐज़दी के तहत हालते शीर-ख़्वारगी (दूध पीने की उम्र में) ही में इंतिक़ाल कर गए। (रज़ियल्लाहु अन्हु व अर्ज़ाहा)

बाब 44 : मरीज़ के पास रोना कैसा है?

٤٤- بَابُ الْبُكَاءِ عِنْدَ الْمَرِيضِ

1304. हमसे अस्बग़ बिन फ़रज ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन वुहैब ने कहा कि मुझे ख़बर दी अम्र बिन हारिष ने, उन्हें सईद बिन हारिष अन्सारी ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि सअद बिन उबादा (रज़ि.) किसी मर्ज़ में मुब्तला हुए। नबी करीम (ﷺ) इयादत के लिये अब्दुर्रहमान बिन औफ़, सअद बिन अबी वक़्क़ास और

١٣٠٤- حَدَّثَنَا أَصْبَغُ عَنِ ابْنِ وَهْبٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَمْرٌو عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْحَارِثِ الأَنْصَارِيِّ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((اشْتَكَى سَعْدُ بْنُ عُبَادَةَ شَكْوَى لَهُ، فَأَتَاهُ النَّبِيُّ ﷺ يَعُودُهُ

कि मय्यत को मस्जिद में दाख़िल करना और वहाँ उसका जनाज़ा पढ़ना सही है। इमाम शाफ़िई और अहमद और इस्हाक़ और जुम्हूर का भी यही क़ौल है। जो लोग मय्यत के नापाक होने का ख़्याल रखते हैं उनके नज़दीक मस्जिद में न मय्यत का लाना दुरुस्त है और न वहाँ नमाज़े जनाज़ा जाइज़। मगर ये ख़्याल बिलकुल ग़लत है। मुसलमान मुर्दा और जिन्दा नजिस नहीं हुआ करता। जैसा कि हदीष़ में साफ़ मौजूद है, **इन्नल मूमिन ला युन्जिसु हय्यन व ला मय्यितन** बेशक मोमिन मुर्दा और जिन्दा नजिस नहीं होता या'नी नजासते हक़ीक़ी से वो दूर होता है।

बनू बैज़ा तीन भाई थे। सहल व सुहैल और सफ़्वान उनकी वालिदा को बतौरे वस्फ़ बैज़ा कहा गया। उसका नाम दअ़द था और उनके वालिद का नाम वहब बिन रबीआ क़ुरैशी फ़ह्री था।

इस बहष़ के आख़िर में हज़रत मौलाना उबैदुल्लाह साहब (रह.) फ़र्माते हैं, **वल्हक़्क़ु अन्नहू यजूज़ुस्सलातु अलल्जनाइज़ि फिल्मस्जिदि मिन गैरि कराहतिन वल्अफ़ज़लु अस्सलातु अलैहा खारिजल्मस्जिदि लिअन्न अक्ष़र सलवातिही (ﷺ) अलल्जनाइज़ि कान फिल्मुसल्ला** (मिर्आत) या'नी हक़ यही है कि मस्जिद में नमाज़े जनाज़ा बिला कराहत दुरुस्त है और अफ़ज़ल ये है कि मस्जिद से बाहर पढ़ी जाए क्योंकि अकष़र नबी करीम (ﷺ) ने इसको ईदगाह में पढ़ा है।

इस हदीष़ से ये भी ष़ाबित होता है कि इस्लामी अदालत में अगर कोई ग़ैर–मुस्लिम का कोई मुक़द्दमा दायर हो तो फ़ैसला बहरहाल इस्लामी क़ानून के तहत किया जाएगा। आप (ﷺ) ने उन यहूदी ज़ानियों के लिये संगसारी का हुक्म इसलिये भी सादिर फ़र्माया कि ख़ुद तौरात में भी यही हुक्म था जिसे ज़ुलम-ए-यहूद ने बदल दिया था। आप (ﷺ) ने गोया उन ही की शरीअ़त के मुताबिक़ फ़ैसला फ़र्माया। (ﷺ)

बाब 61 : क़ब्रों पर मस्जिद बनाना मकरूह है

٦١- بَابُ مَا يُكْرَهُ مِنِ اتِّخَاذِ الْمَسَاجِدِ عَلَى الْقُبُورِ

और जब हसन बिन हसन बिन अ़ली (रज़ि.) गुज़र गये तो उनकी बीवी (फ़ातिमा बिन्ते हुसैन) ने एक साल तक क़ब्र पर ख़ैमा लगाए रखा। आख़िर ख़ैमा उठाया गया तो लोगों ने एक आवाज़ सुनी, क्या लोगों ने जिनको खोया था, उनको पा लिया? दूसरे ने जवाब दिया नहीं बल्कि नाउम्मीद होकर लौट गये।

وَلَمَّا مَاتَ الْحَسَنُ بْنُ الْحَسَنِ بْنِ عَلِيٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمْ ضَرَبَتِ امْرَأَتُهُ الْقُبَّةَ عَلَى قَبْرِهِ سَنَةً، ثُمَّ رُفِعَتْ، فَسَمِعُوا صَائِحًا يَقُولُ: أَلاَ هَلْ وَجَدُوا مَا فَقَدُوا؟ فَأَجَابَهُ آخَرُ: بَلْ يَئِسُوا فَانْقَلَبُوا.

तश्रीह : ये हसन, हज़रत हसन बिन अ़ली (रज़ि.) के बेटे और बड़े ष़िक़ात ताबेईन में से थे। उनकी बीवी फ़ातिमा हज़रत हुसैन (रज़ि.) की बेटी थीं और उनके एक लड़का था उनका नामे-नामी भी हसन था। गोया तीन पुश्त तक यही मुबारक नाम रखा गया। उनकी बीवी ने अपने दिल को तसल्ली देने और ग़म ग़लत करने के लिये साल भर तक अपने महबूब शौहर की क़ब्र के पास डेरा रखा। इस पर उनको हातिफ़े ग़ैब से मलामत हुई और वो वापस हो गईं।

1330. हमसे उबैदुल्लाह बिन मूसा ने बयान किया, उनसे शैबान ने, उनसे हिलाल वज़्ज़ान ने, उनसे उर्वा ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने अपने मर्ज़े-वफ़ात में फ़र्माया कि यहूद और नसारा पर अल्लाह की लअ़नत हो कि उन्होंने अपने अंबिया की क़ब्रों को मसाजिद बना लिया। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कहा कि अगर ऐसा डर न होता तो आपकी क़ब्र खुली रहती (और हुज्रे में न होती) क्योंकि मुझ

١٣٣٠- حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوسَى عَنْ شَيْبَانَ عَنْ هِلاَلٍ هُوَ الْوَزَّانُ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ فِي مَرَضِهِ الَّذِي مَاتَ فِيْهِ: ((لَعَنَ اللهُ الْيَهُودَ وَالنَّصَارَى اتَّخَذُوا قُبُورَ أَنْبِيَائِهِمْ

مَسْجِدًا)). قَالَتْ : وَلَوْ لاَ ذَٰلِكَ لأَبْرَزُوا قَبْرَهُ، غَيْرَ أَنِّي أَخْشَى أَنْ يُتَّخَذَ مَسْجِدًا.

[راجع: ٤٣٥]

डर इसका है कि कहीं आपकी क़ब्र भी मस्जिद न बनाली जाए। (राजेअ : 430)

तश्रीह : या'नी ख़ुद क़ब्रों को पूजने लगे या क़ब्रों पर मस्जिद और गिर्जाघर बनाकर वहाँ अल्लाह की इबादत करने लगे तो बाब की मुताबक़त हासिल हो गई। इमाम इब्ने क़य्यिम ने कहा कि जो लोग क़ब्रों पर वक़्त मुअय्यन (निर्धारित) करके जमा होते हैं वो भी गोया क़ब्र को मस्जिद बनाते हैं। दूसरी हदीष में है मेरी क़ब्र को ईद न कर लेना या'नी ईद की तरह वहाँ मेले और मजमा न करना। जो लोग ऐसा करते हैं वो भी उन यहूदियों और नसरानियों की तरह हैं जिन पर आँहज़रत (ﷺ) ने लअ़नत की।

अफ़सोस! हमारे जमाने में क़ब्रपरस्ती ऐसी शाए हो रही है कि ये नाम के मुसलमान अल्लाह और रसूल से ज़रा भी नहीं शर्माते, क़ब्रों को इस क़दर पुख़्ता शानदार बनाते हैं कि उनकी इमारत को देखकर मसाजिद का शुब्हा होता है। हालाँकि आँहज़रत (ﷺ) ने सख़्ती के साथ क़ब्रों पर ऐसी ता'मीरात के लिये मना किया है। हज़रत अ़ली (रज़ि.) ने अबू हियाज अस्दी को कहा था **अब्अषुक अ़ला मा बअ़षनी अ़लैहि रसूलुल्लाहि (ﷺ) ला तदउतिम्षालन इल्ला तमस्तहू वला कब्रन मुश्रफ़न इल्ला सव्वैतहू रवाहुल्जमाअतु इल्लल्बुख़ारी वब्नु माजा** या'नी क्या मैं तुमको उस ख़िदमत के लिये न भेजूँ जिसके लिये मुझे आँहज़रत (ﷺ) ने भेजा था। वो ये कि कोई मूरत ऐसी न छोड़ जिसे तू मिटा न दे और कोई ऊँची क़ब्र न रहे जिसे तू बराबर न कर दे।

इस हदीष से मा'लूम होता है क़ब्रों का हद से ज़्यादा ऊँचा करना भी शारेअ़ (ﷺ) को नापसंद है। अ़ल्लामा शौकानी (रह.) फ़र्माते हैं, **फ़ीहि अन्नस्सुन्नत इन्नल्कब्र ला युर्फ़उ रफ़अन कष़ीरा मिन गैरि फर्क़िन बैन कान फ़ाज़िलन व मन कान गैर फ़ाज़िलिन वज़्ज़ाहिरू अन्न रफअल्कुबूरि ज़ियादतुन अलल्कद्रिल्माज़ूबि हरामुन** या'नी सुन्नत यही है कि क़ब्र को हद से ज़्यादा बुलन्द न बनाया जाए ख़्वाह वो किसी फ़ाज़िल, आ़लिम या सूफ़ी की हो या किसी ग़ैर फ़ाज़िल की और ज़ाहिर है कि शरई इजाज़त से ज़्यादा क़ब्रों को ऊँचा करना हराम है। आगे अ़ल्लामा फ़र्माते हैं,

व मिन रफ़इल्कुबूरि अद्दाखिलु तहतल्हदीषि दुख़ूलन औलियाउ अल्कुब्बु वल्मशाहिदुल्मअ़मूरतु अलल्कुबूरि व अयज़न हुव मिन इत्तिख़ाज़िल्कुबूरि मसाजिदु व कद लअ़नन्नबिय्यु (ﷺ) फ़ाइल ज़ालिक कमा सयाती व कम क़द सराअ़न तशईदि अब्नियतिल्कुबूरि व तहसीनिहा मिम्मफ़ासिदिन यब्की लहल्इस्लामु मिन्हा इतिकादुल्जहलति लहा कइतिकादिल्कुफ़्फ़ारि लिल्अस्नामि व अ़ज़ुम ज़ालिक फज़न्नू अन्नहा क़ादिरतुन अ़ला जलबिल्मनाफ़िइ व दफ़इज़्ज़ररि फजअलूहा मक्सदत्तलबि कज़ाअल्हवाइजि व मल्जअलिनजाहिल्मतालिबि व सालू मिन्हा मा यस्अलुहूल्इबादु मिन रब्बिहिम व शद्दू इलयहर्रिहाल व तम्सहू बिहा वस्तगाषू व बिल्जुम्लति अन्नहुम लम यदऊ शयअम्मिम्मा कानतिल्ज़ाहिलिय्यतु तफ़्अलुहू बिल्अस्नामि इल्ला फअलुहू फ़इन्नालिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन व मअ हाजल्मुन्करिश्शनीइ वल्कुफ़्रिल्फ़जीइ ला नजिदु मंय्यगजबु लिल्लाहि व युगारू हमिय्यल लिद्दीनिल्हनीफ़ि ला आलिमन व ला मुतअ़ल्लिमन व ला अमीरन व ला वज़ीरन व ला मलिकन तुवारिदु इलैना मिनल्अख़बारि मा ला यशुक्कु मअहू अन्न कष़ीरम्मिन हाउलाइल्मकबूरीन औ अक्षरूहुम इज़ा तवज्जहत अ़लैहि यमीनुन मिन जिहति खस्मिही हलफ़ बिल्लाहि फ़ाज़िरन व इज़ा कील लहू बअद ज़ालिक इलहफ़ बिशैखिफ़ व मुअतकदिकल्वलियल्फ़ुलानी तल्अषिमु व तल्कउ व अ बा वअतरफ बिल्हक्कि व हाज़ा मिन अब्यनिल्अदिल्लतिद्दाल्लति अ़ला अन्न शिर्कहुम क़द बलग़ फौक शिर्किम्मन क़ाल अन्नहू तआला षानियष्नैनि औ षालिषु षलाषतिन फ या उलमाअद्दीनि व या मुलूकल्मुस्लिमीन अय्यु रजदूनलिल्इस्लामि अशद्दु मिनल्कुफ़्रि व अय्यु बलाइन लिहाज़द्दीनि अज़रू अ़लैहि मिन इबादिही गैरल्लाहि व अय्यु मुसीबतिन युसाबु बिहल्मुस्लिमून तअदिलु हाज़िहिल्मुसीबत व अय्यु मन्करिन इन्कारहू इन लम यकुन इन्कार हाज़शिर्किल्बय्यिन वाजिबन

लक़द अस्मअत लौ नादैत हय्यन — व ला किन ला हयात लिमन तुनादी

व लौ नारन नफ़ख़त बिहा अजाअत — व ला किन अन्त तन्फ़ख़ु फ़िरिमादि

बाब 64 : नमाज़े जनाज़ा में चार तक्बीरें कहना

٦٤- بَابُ التَّكْبِيرِ عَلَى الْجَنَازَةِ

और हुमैद त़वील ने बयान किया कि हमें ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने नमाज़ पढ़ाई तो तीन तक्बीरें कहीं फिर सलाम फेर दिया। इस पर उन्हें लोगों ने याददिहानी करवाई तो दोबारा क़िब्ला रुख़ होकर चौथी तक्बीर भी कही फिर सलाम फेरा।

أَرْبَعًا وَ قَالَ حُمَيْدٌ: صَلَّى بِنَا أَنَسٌ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ فَكَبَّرَ ثَلاَثًا ثُمَّ سَلَّمَ، فَقِيْلَ لَهُ: فَاسْتَقْبَلَ الْقِبْلَةَ، ثُمَّ كَبَّرَ الرَّابِعَةَ، ثُمَّ سَلَّمَ.

तश्रीह: अकष़र उ़लमा जैसे इमाम शाफ़िई (रह.) और इमाम अह़मद (रह.) और इस्ह़ाक़ (रह.) और सुफ़यान ष़ौरी (रह.) और अबू ह़नीफ़ा (रह.) और इमाम मालिक (रह) का यही क़ौल है और सलफ़ का इसमें इख़्तिलाफ़ है। किसी ने पाँच तक्बीरें कहीं, किसी ने तीन, किसी ने सात। इमाम अह़मद (रह.) ने कहा कि चार से कम न हो और सात से ज़्यादा न हो। बैहक़ी ने रिवायत किया कि आँह़ज़रत (ﷺ) के ज़माने में जनाज़ा पर लोग सात और छः और पाँच और चार तक्बीरें कहा करते थे। ह़ज़रत उ़मर ने चार पर लोगों का इत्तिफ़ाक़ करा दिया।

1333. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, कहा कि हमें इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने शिहाब ने, उन्हें सईद बिन मुसय्यिब ने, उन्हें अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नज्जाशी का जिस दिन इन्तिक़ाल हुआ उसी दिन रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उनकी वफ़ात की ख़बर दी और आप (ﷺ) स़ह़ाबा के साथ ईदगाह गये। फिर आप (ﷺ) ने स़फ़बन्दी करवाई और चार तक्बीरें कहीं। (राजेअ़ : 1240)

١٣٣٣- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ((أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ نَعَى النَّجَاشِيَّ فِي الْيَوْمِ الَّذِي مَاتَ فِيْهِ، وَخَرَجَ بِهِمْ إِلَى الْمُصَلَّى فَصَفَّ بِهِمْ وَكَبَّرَ عَلَيْهِ أَرْبَعَ تَكْبِيْرَاتٍ)). [راجع: ١٢٤٥]

1334. हमसे मुहम्मद बिन सिनान ने बयान किया, कहा कि हमसे सुलैम बिन ह़य्यान ने बयान किया, कहा कि हमसे सईद बिन मैनाअ ने बयान किया और उनसे जाबिर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने अस़्ह़मा नज्जाशी की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई तो चार तक्बीरें कहीं। यज़ीद बिन हारून वास़्ती और अ़ब्दुस़्स़मद ने सुलैम से अस़्ह़मा नाम नक़ल किया है और अ़ब्दुल वारिष़ ने इसकी मुताबअ़त की है।
(राजेअ़ : 1317)

١٣٣٤- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سِنَانٍ قَالَ حَدَّثَنَا سَلِيْمُ بْنُ حَيَّانَ قَالَ حَدَّثَنَا سَعِيْدُ بْنُ مِيْنَاءَ عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ صَلَّى عَلَى أَصْحَمَةَ النَّجَاشِيِّ فَكَبَّرَ أَرْبَعًا)). وَقَالَ يَزِيْدُ بْنُ هَارُونَ وَعَبْدُ الصَّمَدِ عَنْ سَلِيْمٍ ((أَصْحَمَةَ)).
[راجع: ١٣١٧]

नज्जाशी ह़ब्श के हर बादशाह का लक़ब हुआ करता था। जैसा कि मुल्क में बादशाहों के खास़ लक़ब हुआ करते हैं शाहे ह़ब्श का अस़ल नाम अस़्ह़मा था।

बाब 65 : नमाज़े जनाज़ा में सूरह फ़ातिहा पढ़ना (ज़रूरी है)

٦٥- بَابُ قِرَاءَةِ فَاتِحَةِ الْكِتَابِ عَلَى الْجَنَازَةِ

और इमाम ह़सन बस़री (रह.) ने फ़र्माया कि बच्चे की नमाज़े जनाज़ा में पहले सूरह फ़ातिहा पढ़ी जाए, फिर ये दुआ पढ़ी जाए

وَقَالَ الْحَسَنُ: يَقْرَأُ عَلَى

الطِّفْلِ بِفَاتِحَةِ الْكِتَابِ وَيَقُولُ: اللّهُمَّ اجْعَلْهُ لَنَا سَلَفًا وَفَرَطًا وَأَجْرًا.

अल्लाहुम्मज्अल्हू लना फ़रतन व सलफ़न व अज्रन; ऐ अल्लाह! इस बच्चे को हमारा अमीरे सामान कर दे और आगे चलने वाला, ष़वाब देने वाला।

١٣٣٥- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ سَعْدٍ، عَنْ طَلْحَةَ قَالَ: ((صَلَّيْتُ خَلْفَ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا)) وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ قَالَ: أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ عَنْ سَعْدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ عَنْ طَلْحَةَ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَوفٍ: قَالَ ((صَلَّيْتُ خَلْفَ ابْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَلَى جَنَازَةٍ فَقَرَأَ بِفَاتِحَةِ الْكِتَابِ. قَالَ : لِيَعْلَمُوا أَنَّهَا سُنَّةٌ)).

1335. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा कि हमसे गुन्दर (मुहम्मद बिन जा'फ़र) ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे सअ़द बिन इब्राहीम ने और उनसे त़ल्हा ने कहा कि मैंने इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) की इक़्तिदा में नमाज़े (जनाज़ा) पढ़ी (दूसरी सनद) हमसे मुहम्मद बिन कष़ीर ने बयान किया, कहा कि हमें सुफ़यान ष़ौरी ने ख़बर दी, उन्हें सअ़द बिन इब्राहीम ने, उन्हें त़ल्हा बिन अ़ब्दुल्लाह बिन औ़फ़ ने, उन्होंने बतलाया कि मैंने इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) के पीछे नमाज़े जनाज़ा पढ़ी तो आपने सूरह फ़ातिहा (ज़रा पुकार कर) पढ़ी। फिर फ़र्माया कि तुम्हें मा'लूम होना चाहिये कि यही तरीक़-ए-नबवी है।

तश्रीह : जनाज़े की नमाज़ में सूरह फ़ातिहा ऐसे ही वाजिब है जैसा कि दूसरी नमाज़ों में क्योंकि ह़दीष़ **ला स़लात लमल्लम यक़्रा बिफ़ातिहतिल किताब** हर नमाज़ को शामिल है। इसकी तफ़्सील ह़ज़रत मौलाना उ़बैदुल्लाह स़ाह़ब (रह.) के लफ़्ज़ों में ये है,

वल्हक़्क़ु वस्स़वाबु अन्नकिरातल्फ़ातिहति फ़ी स़लातिल्जनाज़ति वाजिबतुन कमा जहब इलैहिश्शाफ़िई व अहमद व इस्हाक़ व गैरूहुम लिअन्नहुम अज्मऊ़ अला अन्नहा स़लातुन व क़द ष़बत हदीषु ला स़लात इल्ला बिफ़ातिहतिल्किताबि फहिय दाखिलतुन तहतल्उमूमि व इख़राजुहा मिन्हु यहताजु इला दलीलिन व लिअन्नहा सलातुन यजिबु फीहल्क़ियामु फवजबत फीहल्किरातु कसाइरिस्स़लवाति व लिअन्नहू वरदल्अम्रू बिकिरातिहा फक़द रवा इब्नु माजा बिइस्नादिन फीहि ज़ुअ़फ़ुन यसीरून अ़न उम्मि शरीकिन कालत अमरना रसूलुल्लाहि (ﷺ) अन नक़्रअ अ़ला मय्यितिना बिफ़ातिहतिल्किताबि व रवत्तब्रानी फिल्कबीर मिन हदीषि उम्मि अ़फ़ीफ़िन क़ालत अमरना रसूलुल्लाहि (ﷺ) अन नक़्रअ अ़ला मय्यितिना बिफ़ातिहतिल्किताब कालल्हैष़मी व फीहि अ़ब्दुलमुन्इम अबू सईद व हुव जईफ़ुन इन्तिहा

वल्अम्रू मिन अदिल्लतिल्वुजूबि व रवत्तब्रानी फिल्कबीर ईज़ाउन मिन हदीषि अस्मा बिन्ति यज़ीद क़ालत क़ाल रसूलुल्लाहि (ﷺ) इज़ा सल्लैतुम अ़लल्जनाज़ति फक़्रऊ बिफ़ातिहतिल्किताब क़ालल्हैष़मी व फीहि मुअ़ला बिन हम्रान व लम अजिद मन जकरहू व बक़िय्यत रिजालिही मूष़क़ून व फ़ी बअ़ज़िहिम कलामु हाज़ा क़द सन्नफ़ हसन अश्शर्नब्लानी मिम्मुतअख्खिरिल्हनफिय्यति फी हाज़िहिल्यस्अलति रिसालतन इस्मुहा अन्नज्मुल्मुस्तताब लिहुक्मिल्किराति फ़ी स़लातिल्जनाज़ति उम्मुल्किताब व हक़्क़क़ फ़ीहा अन्नल्किरात औला मिन तर्किल्क़िरात व ला दलील अलल्कराहति व हुवल्लज़ी इख्तारहुश्शैखु अ़ब्दुल्हय अल्लक्नवी फ़ी तस़ानीफ़िही लि उम्दतिर्रिआयति वत्तअ़लीक़िल्मुम्जिदि व इमामुल्कलामि षुम्म अन्नहू इस्तदल्ल बिहदीषि इब्नि अ़ब्बास अलल्जहरि बिल्क़िराति फ़िस्स़लाति अलल्जनाज़ति लिअन्नहू यदुल्लु अ़ला अन्नहू जहर बिहा हत्ता समिअ़ ज़ालिक मन सल्ला मअ़हू व अस्रहु मिन ज़ालिक मा जकर्नाहु मिन रिवायतिन्नसई बिलफ़्ज़ि सल्लैतु खल्फ इब्नि अ़ब्बास अ़ला जनाज़तिन फक़रअ बिफ़ातिहतिल्किताब व सूरतन व जहर हत्ता अस्मअन फलम्मा फरग अख़ज़्तु बियदिही फसअल्तुहू फ़क़ाल सुन्नतुन व हक़्क़ुन व फ़ी रिवायतिन उख़रा लहू अयज़न सल्लैतु ख़ल्फ़ इब्नि अ़ब्बास अ़ला जनाज़ति फ़समिअ़तु यक़्रउ बिफ़ातिहतिल्किताब व यदुल्लु अलल्जहरि बिहुआइ हदीषु औ़फ़िब्नि मालिक अल्आती फइनज़्ज़ाहिर अन्नहू हफ़िज़हुदुआअल्मज़्कूर लम्मा जहर बिहिन्नबिय्य (ﷺ) फिस्सलाति अलल्जनाज़ति अस्रहु मिन्हु हदीषु वाष़िला फिल्फस्लिष़्ष़ानी

रिवायाते बाला में ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) वग़ैरह ने जो ये फ़र्माया कि ये सुन्नत और ह़क़ है उसकी वज़ाहत ह़ज़रत मौलाना शैख़ुल ह़दीष़ (रह.) ने यूँ फ़र्माई है,

वल्मुरादु बिस्सुन्नतित्तरीक़तिल्मालूफ़ति अन्हु (ﷺ) ला मा युक़ाबिलुल्फ़रीज़त फ़इन्नहू इस्तिलाहुन उर्फ़ियुन हादिष़ुन फ़क़ाल अल्अशरफ़ुज़्ज़मीरुल्मुअन्नषु लिकिरातिल्फ़ातिहति वलैसल्मुरादु बिसुन्नति इन्नहा लैसत बिवाजिबतिन बल मा युकाबिलुल्बिदअत अय इन्नहा तरीकतुन मर्बिय्यतुन व कालल्कस्तलानी अन्नहा अय किरातल्फ़ातिहति फ़िल्जनाजति सुन्नतुन अय तरीक़तुश्शारिइ फला युनाफ़ी कौनुह वाजिबतन व क़द उलिम अन्न कौलस्सहाबी मिनस्सुन्नति कज़ा हदीषुन मर्फ़ूउन इन्दल्अक्षरि क़ालश्शाफ़िइ फिल्उम्मि व अस्हाबुन्नबिय्यि (ﷺ) ला यकूलून अस्सुन्नतु रसूलिल्लाहि (ﷺ) इन्शाअल्लाहु इन्तिहा (मिर्आतुल मफ़ातीह, पेज 477)

या'नी यहाँ लफ़्ज़े सुन्नत से त़रीक़-ए-मालूफ़ा नबी करीम (ﷺ) मुराद है न वो सुन्नत जो फ़र्ज़ के मुक़ाबले पर होती है। ये एक उ़र्फ़ी इस्तिलाह़ इस्ते'माल की गई है ये मुराद नहीं कि ये वाजिब नहीं है बल्कि सुन्नत मुराद है जो बिदअ़त के मुक़ाबले पर बोली जाती है। या'नी ये त़रीक़ा मरविया है और क़स्त़लानी (रह) ने कहा कि जनाज़ा में सूरह फ़ातिह़ा पढ़नी सुन्नत है या'नी शारेअ़ का त़रीक़ा है और ये वाजिब होने की मनाफ़ी नहीं है। इमाम शाफ़िई (रह) ने किताबुल उम्म में फ़र्माया है कि सह़ाबा किराम (रिज़.) लफ़्ज़े सुन्नत का इस्ते'माल सुन्नत त़रीक़ा रसूलुल्लाह (ﷺ) पर करते थे। अक़्वाले स़ह़ाबा में ह़दीष़े मर्फ़ूअ़ पर भी सुन्नत का लफ़्ज़ बोला गया। बहरह़ाल यहाँ सुन्नत से मुराद ये है कि सूरह फ़ातिह़ा नमाज़ में पढ़ना त़रीक़-ए-नबवी है और ये वाजिब है कि उसके पढ़े बग़ैर नमाज़ नहीं होती जैसा कि ऊपर वाली तफ़्सील में बयान किया गया है।

बाब 66 : मुर्दे को दफ़न करने के बाद क़ब्र पर नमाज़े जनाज़ा पढ़ना

٦٦- بَابُ الصَّلاَةِ عَلَى الْقَبْرِ بَعْدَ مَا يُدْفَنُ

1336. हमसे हज्जाज बिन मिन्हाल ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअ़बा ने बयान किया, कहा कि मुझसे सुलैमान शैबानी ने बयान किया, कहा कि मैंने शुअ़बी से सुना, उन्होंने बयान किया कि मुझे उस स़ह़ाबी ने ख़बर दी जो नबी करीम (ﷺ) के साथ एक अलग-थलग क़ब्र से गुज़र रहे थे। क़ब्र पर आप (ﷺ) इमाम बने और स़ह़ाबा ने आपके पीछे नमाज़े जनाज़ा पढ़ी। शैबानी ने कहा कि मैंने शुअ़बी से पूछा कि अबू अ़म्र! आप से किस स़ह़ाबी ने बयान किया था, तो उन्होंने बतलाया कि इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने। (राजेअ़ : 875)

١٣٣٦- حدَّثَنا حَجَّاجُ بنُ مِنهالٍ قَالَ: حدَّثَنا شُعبةُ قَالَ: حدَّثَني سُليمانُ الشَّيبانيُّ قَالَ: سَمِعْتُ الشَّعبيَّ قَالَ: ((أَخْبَرَنِي مَنْ مَرَّ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ عَلَى قَبْرٍ مَنْبُوذٍ فَأَمَّهُمْ وَصَلَّوا خَلْفَهُ. قُلْتُ: مَنْ حَدَّثَكَ هَذَا يَا أَبَا عَمْرٍو؟ قَالَ: ابْنُ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا)). [راجع: ٨٥٧]

1337. हमसे मुहम्मद बिन फ़ुज़ैल ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे ष़ाबित ने बयान किया, उनसे अबू राफ़ेअ़ ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि काले रंग का एक मर्द या काले रंग की एक औ़रत मस्जिद में ख़िदमत किया करती थी, उनकी वफ़ात हो गई। लेकिन नबी करीम (ﷺ) को किसी ने ख़बर नहीं दी। एक दिन आपने खुद याद फ़र्माया कि वो शख़्स़ दिखाई नहीं देता। स़ह़ाबा ने

١٣٣٧- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْفَضْلِ قَالَ: حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ ثَابِتٍ عَنْ أَبِي رَافِعٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ((أَنَّ أَسْوَدَ - رَجُلاً أَوْ امْرَأَةً - كَانَ يَقُمُّ الْمَسْجِدَ، فَمَاتَ، وَلَمْ يَعْلَمِ النَّبِيُّ ﷺ بِمَوتِهِ، فَذَكَرَهُ ذَاتَ يَومٍ فَقَالَ عَلَيْهِ

कहा कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! उनका इन्तिक़ाल हो गया। आप (ﷺ) ने फ़र्माया फिर तुमने मुझे ख़बर क्यों नहीं दी? सहाबा ने अर्ज़ किया कि ये वजह थी (इसलिये आपको तकलीफ़ नहीं दी गई) गोया लोगों ने उनको हक़ीर जानकर क़ाबिले तवज्जह नहीं समझा। लेकिन आपने फ़र्माया कि चलो मुझे उनकी क़ब्र बता दो। चुनाँचे आप उसकी क़ब्र पर तशरीफ़ लाए और उस पर नमाज़े जनाज़ा पढ़ी। (राजेअ : 458)

السَّلاَمُ وَالسَّلاَمُ: مَا فَعَلَ ذَلِكَ الإِنْسَانُ؟ قَالُوا: مَاتَ يَا رَسُولَ اللهِ. قَالَ: ((أَفَلاَ آذَنْتُمُونِي؟)) فَقَالُوا : إِنَّهُ كَانَ كَذَا وَكَذَا - قِصَّتُهُ - قَالَ فَحَقَّرُوا شَأْنَهُ. قَالَ: ((فَدُلُّونِي عَلَى قَبْرِهِ)). فَأَتَى قَبْرَهُ فَصَلَّى عَلَيْهِ. [راجع: ٤٥٨]

तशरीह : ये काला मर्द या काली औरत मस्जिदे नबवी की जारूबकश बड़े-बड़े बादशाहाने हफ़्ते अक़्लीम से अल्लाह के नज़दीक मर्तबे और दर्जे में ज़ाइद थी। हबीबुल्लाह (ﷺ) ने ढूँढ़कर उसकी क़ब्र पर नमाज़ पढ़ी। वाह रे क़िस्मत! आपकी कफ़श-बरदारी अगर हमको बहिश्त में नसीब हो जाए तो ऐसी दुनिया की लाखों सल्तनतें इस पर तस्दीक़ कर दें। (वहीदी)

हज़रत इमाम बुख़ारी (रह) ने उससे षाबित फ़र्माया कि अगर किसी मुसलमान मर्द या औरत का जनाज़ा न पढ़ा गया हो तो क़ब्र पर दफ़न करने के बाद भी पढ़ा जा सकता है। कुछ ने उसे नबी करीम (ﷺ) के साथ ख़ास कर दिया है मगर दा'वा बेदलील है।

बाब 68 : इस बयान में कि मुर्दा लौटकर जाने वालों के जूतों की आवाज़ सुनता है

٦٧- بَابُ الْمَيِّتُ يَسْمَعُ خَفْقَ النِّعَالِ

यहाँ से ये निकला कि क़ब्रिस्तान में जूते पहनकर जाना जाइज़ है। इब्ने मुनीर ने कहा कि इमाम बुख़ारी (रह) ने ये बाब इसलिये क़ायम किया कि दफ़न के आदाब का लिहाज़ रखें और शोरो-गुल और ज़मीन पर ज़ोर-ज़ोर से चलने से परहेज़ करें जैसे ज़िन्दा सोते आदमी के साथ करता है।

1338. हमसे अय्याश बिन वलीद ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुल आला ने बयान किया, कहा कि हमसे सईद बिन अबी अरूबा ने बयान किया, (दूसरी सनद) इमाम बुख़ारी ने कहा कि मुझसे ख़लीफ़ा बिन ख़यात ने बयान किया, उनसे यज़ीद बिन ज़रिअ ने, उनसे सईद बिन अबी अरूबा ने, उनसे क़तादा ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि आदमी जब क़ब्र में रखा जाता है और दफ़न करके उसके लोग-बाग पीठ मोड़कर रुख़सत होते हैं तो उनके जूतों की आवाज़ सुनता है। फिर दो फ़रिश्ते आते हैं, उसे उठाते हैं और पूछते हैं कि उस शख़्स (मुहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ) के मुता'ल्लिक़ तुम्हारा क्या एतिक़ाद है? वो जब जवाब देता है कि मैं गवाही देता हूँ कि वो अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं। इस जवाब पर उससे कहा जाता है कि ये देख जहन्नम का अपना एक ठिकाना लेकिन अल्लाह तआला ने जन्नत में तेरे लिये एक मकान इसके बदले में बना दिया है। नबी करीम

١٣٣٨- حَدَّثَنَا عَيَّاشٌ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الأَعْلَى قَالَ حَدَّثَنَا سَعِيْدٌ ح.. وَقَالَ لِي خَلِيْفَةُ: قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ زُرَيْعٍ قَالَ حَدَّثَنَا سَعِيْدٌ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ : ((الْعَبْدُ إِذَا وُضِعَ فِي قَبْرِهِ وَتُوُلِّيَ وَذَهَبَ أَصْحَابُهُ - حَتَّى إِنَّهُ لَيَسْمَعُ قَرْعَ نِعَالِهِمْ - أَتَاهُ مَلَكَانِ فَأَقْعَدَاهُ، فَيَقُولاَنِ لَهُ : لَهُ مَا كُنْتَ تَقُولُ فِي هَذَا الرَّجُلِ مُحَمَّدٍ ﷺ؟ فَيَقُولُ: أَشْهَدُ أَنَّهُ عَبْدُ اللهِ وَرَسُولُهُ. فَيُقَالُ: أُنْظُرْ إِلَى مَقْعَدِكَ مِنَ النَّارِ، أَبْدَلَكَ اللهُ بِهِ مَقْعَدًا مِنَ الْجَنَّةِ)). قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((فَيَرَاهُمَا

हालत शुरू हो गई थी तो ये अबू तालिब की ख़ुसूसियत होगी जैसे आपकी दुआ से उसके अ़ज़ाब में तख़फ़ीफ़ हो जाएगी।

1360. हमसे इस्हाक़ बिन राहवै ने बयान किया, कहा कि हमसे यअ़क़ूब बिन इब्राहीम ने ख़बर दी, कहा कि मुझे मेरे बाप (इब्राहीम बिन सअ़द) ने सालेह बिन कैसान से ख़बर दी, उन्हें इब्ने शिहाब ने, उन्होंने बयान किया कि मुझे सईद बिन मुसय्यिब ने अपने बाप (मुसय्यिब बिन हज़्न रज़ि.) से ख़बर दी, उनके बाप ने उन्हें ख़बर दी कि जब अबू तालिब की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो रसूलुल्लाह (ﷺ) उनके पास तशरीफ़ लाए। देखा तो उनके पास उस वक़्त अबू जहल बिन हिशाम और अ़ब्दुल्लाह बिन उमय्या बिन मुग़ीरह मौजूद थे। आप (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया कि चचा! आप एक कलिमा ला इलाह इल्लल्लाह (अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं) कह दीजिए ताकि मैं अल्लाह तआ़ला के यहाँ इस कलिमे की वजह से आपके हक़ में गवाही दे सकूँ। इस पर अबू जहल और अ़ब्दुल्लाह बिन अबी उमय्या वग़ैरह ने कहा अबू तालिब! क्या तुम अपने बाप अ़ब्दुल मुत्तलिब के दीन से फिर जाओगे? रसूलुल्लाह (ﷺ) बार-बार कलिम-ए-इस्लाम उन पर पेश करते रहे। अबू जहल और इब्ने अबी उमय्या भी अपनी बात दोहराते रहे। आख़िर अबू तालिब की आख़िरी बात ये थी कि वो अ़ब्दुल मुत्तलिब के दीन पर ही रहे। उन्होंने ला इलाह इल्लल्लाह कहने से इन्कार कर दिया फिर भी रसूलुल्लाह ने फ़र्माया कि मैं आपके लिये इस्तग़फ़ार करता रहूँगा। यहाँ तक कि मुझे मना न कर दिया जाए। इस पर अल्लाह तआ़ला ने आयत व मा कान लिन्नबिय्यि नाज़िल फ़र्माई। (सूरह तौबा : 113)

(दीगर मक़ाम : 3884, 4670, 4882, 6681)

١٣٦٠- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ قَالَ أَخْبَرَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي عَنْ صَالِحٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي سَعِيْدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ عَنْ أَبِيْهِ أَنَّهُ أَخْبَرَهُ ((أَنَّهُ لَمَّا حَضَرَتْ أَبَا طَالِبِ الْوَفَاةُ جَاءَهُ رَسُولُ اللهِ ﷺ فَوَجَدَ عِنْدَ أَبَاجَهْلِ بْنَ هِشَامٍ وَعَبْدَ اللهِ بْنِ أَبِي أُمَيَّةَ بْنِ الْمُغِيْرَةِ، قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ لأَبِي طَالِبٍ : ((يَا عَمِّ، قُلْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ كَلِمَةً أَشْهَدُ لَكَ بِهَا عِنْدَ اللهِ)). فَقَالَ أَبُوجَهْلٍ وَعَبْدُ اللهِ بْنُ أَبِي أُمَيَّةَ : يَا أَبَا طَالِبٍ: أَتَرْغَبُ عَنْ مِلَّةِ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ؟ فَلَمْ يَزَلْ رَسُولُ اللهِ يَعْرِضُهَا عَلَيْهِ وَيَعُودَانِ بِتِلْكَ الْمَقَالَةِ حَتَّى قَالَ أَبُوطَالِبٍ آخِرَ مَا كَلَّمَهُمْ : هُوَ عَلَى مِلَّةِ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ، وَأَبَى أَنْ يَقُولَ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ. فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((أَمَا وَاللهِ لأَسْتَغْفِرَنَّ لَكَ مَا لَمْ أُنْهَ عَنْكَ)) فَأَنْزَلَ اللهُ تَعَالَى فِيْهِ: ﴿مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ﴾ الآيَة.
[أطرافه في: ٣٨٨٤، ٤٦٧٥، ٤٧٧٢، ٦٦٨١].

तशरीह : जिसमें कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन के लिये इस्तिग़फ़ार की मुमानअ़त कर दी गई थी। अबू तालिब के आँहज़रत (ﷺ) पर बड़े एहसानात थे। उन्होंने अपने बच्चों से ज़्यादा आँहज़रत (ﷺ) को पाला और परवरिश की और काफ़िरों की ईज़ादेही से आपको बचाते रहे। इसलिये मुहब्बत की वजह से आपने ये फ़र्माया कि ख़ैर में तुम्हारे लिये दुआ करता रहूँगा और आपने उनके लिये दुआ शुरू की। जब सूरह तौबा की आयत **व मा लिन्नबिय्यि** नाज़िल हुई कि पैग़म्बर और ईमानवालों को चाहिये कि मुश्रिकों के लिये दुआ न करें, उस वक़्त आप रुक गए। हदीष़ से ये निकला कि मरते वक़्त भी अगर मुश्रिक शिर्क से तौबा कर ले तो उसका ईमान सही होगा। बाब का यही मतलब है। मगर ये तौबा सकरात से पहले होनी चाहिये। सकरात की तौबा क़ुबूल नहीं जैसा कि क़ुआ़नी आयत **फ़लम यकु यन्फ़ड़हुम ईमानुहुम लम्मा रऔ बासना** (ग़ाफ़िर : 85) में मज़्कूर है।

قَالَ أَبُوعَبْدِ اللهِ الْهُوْنُ: هو الـهوان. والـهَوْنُ الرِّفْقُ.
وقوله جلّ ذِكْرُهُ: ﴿سَنُعَذِّبُهُمْ مَرَّتَيْنِ ثُمَّ يُرَدُّونَ إِلَى عَذَابٍ عَظِيمٍ﴾[التوبة:١٠١].
وقوله تعالى: ﴿وَحَاقَ بِآلِ فِرْعَوْنَ سُوءُ الْعَذَابِ، النَّارُ يُعْرَضُونَ عَلَيْهَا غُدُوًّا وَعَشِيًّا، وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ أَدْخِلُوا آلَ فِرْعَوْنَ أَشَدَّ الْعَذَابِ﴾[غافر: ٤٥].

इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा कि लफ़्ज़ हून क़ुर्आन में हवान के मा'नी में है। या'नी ज़िल्लत और रुस्वाई और हून का मा'नी नर्मी और मलामत है।

और अल्लाह ने सूरह तौबा में फ़र्माया कि मैं इनको दो बार अ़ज़ाब दूंगा (या'नी दुनिया में और क़ब्र में) फिर बड़े अ़जाब में लौटाए जाएंगे। और सूरह मोमिन में फ़र्माया फ़िरऔन वालों को बुरे अ़ज़ाब ने घेर लिया, सुबह-शाम आग के सामने लाए जाते हैं और क़यामत के दिन तो फ़िरऔन वालों के लिये कहा जाएगा कि इनको सख़्त अ़ज़ाब में ले जाओ। (ग़ाफ़िर : 45)

इमाम बुख़ारी (रह) ने इन आयतों से क़ब्र का अ़ज़ाब षाबित किया है। उसके सिवा और आयतें भी हैं। आयत **युषब्बितुल्लाहुल्लज़ीन आमनू बिल क़ौलिष्षाबित** (इब्राहीम: 27) आख़िर तक। ये बिल इत्तिफ़ाक़ सवाले क़ब्र के बारे में नाज़िल हुई है। जैसा कि आगे मज़्कूर है।

١٣٦٩ - حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَلْقَمَةَ بْنِ مَرْثَدٍ عَنْ سَعْدِ بْنِ عُبَيْدَةَ عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِذَا أُقْعِدَ الْمُؤْمِنُ فِي قَبْرِهِ أُتِيَ ثُمَّ شَهِدَ أَنْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللهِ، فَذَلِكَ قَوْلُهُ: ﴿يُثَبِّتُ اللهُ الَّذِينَ آمَنُوا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ﴾)).

1369. हमसे हफ़्स बिन उ़मर ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअ़बा ने, उनसे अ़लक़मा बिन मर्षद ने, उनसे सअ़द बिन उ़बैदा ने और उनसे बराअ बिन आ़ज़िब (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि मोमिन जब अपनी क़ब्र में बैठाया जाता है तो उसके पास फ़रिश्ते आते हैं। वो शहादत देता है कि अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मुहम्मद (ﷺ) अल्लाह के रसूल हैं। तो ये अल्लाह के फ़र्मान की ताबीर है जो सूरह इब्राहीम में है कि अल्लाह ईमान वालों को दुनिया की ज़िन्दगी और आख़िरत में ठीक बात या'नी तौहीद पर मज़बूत रखता है।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ قَالَ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ بِهَذَا، وَزَادَ: ﴿يُثَبِّتُ اللهُ الَّذِينَ آمَنُوا﴾ نَزَلَتْ فِي عَذَابِ الْقَبْرِ.

[طرفه في: ٤٦٩٩].

हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे गुन्दर ने कहा कि हमसे शुअ़बा ने यही ह़दीष़ बयान की। उनसे रिवायत में ये ज़्यादती भी है कि आयत व युषब्बितुल्लाहुल्लज़ीन आमनू अल्लाह मोमिनों को षाबितक़दमी बख़्शता है। अ़ज़ाबे-क़ब्र के बारे में नाज़िल हुई है।

١٣٧٠ - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ قَالَ حَدَّثَنِي أَبِي عَنْ صَالِحٍ قَالَ حَدَّثَنِي نَافِعٌ أَنَّ ابْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَخْبَرَهُ قَالَ: ((اطَّلَعَ النَّبِيُّ ﷺ عَلَى أَهْلِ الْقَلِيبِ فَقَالَ: وَجَدْتُمْ مَا وَعَدَ رَبُّكُمْ حَقًّا)). فَقِيلَ لَهُ:

1370. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे यअ़क़ूब बिन इब्राहीम ने, उनसे उनके वालिद ने, उनसे स़ालेह ने, उनसे नाफ़ेअ़ ने कि इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने उन्हें ख़बर दी कि नबी करीम (ﷺ) कुएँ (जिसमें बद्र के मुश्रिक मक़्तूलीन को डाल दिया गया था) वालों के क़रीब आए और फ़र्माया तुम्हारे मालिक ने जो तुमसे सच्चा वा'दा किया था उसे तुम लोगों ने पा लिया। लोगों ने अ़र्ज़ किया कि आप मुर्दों को

ख़िताब करते हैं? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम कुछ उनसे ज़्यादा सुनने वाले नहीं हो, बल्कि वो जवाब नहीं दे सकते।

(दीगर मक़ाम : 3980, 4026)

أَتَدْعُو أَمْوَاتًا؟ فَقَالَ: ((مَا أَنْتُمْ بِأَسْمَعَ مِنْهُمْ، وَلَكِنْ لاَ يُجِيبُونَ)).

[طرفه في : ٣٩٨٠، ٤٠٢٦].

1371. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने, उनसे हिशाम बिन उ़र्वा ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे आ़इशा (रज़ि.) ने फ़र्माया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने बद्र के काफ़िरों को ये फ़र्माया था कि मैं जो उनसे कहा करता था अब उनको मा'लूम हुआ होगा कि वो सच्चे हैं। और अल्लाह ने सूरह रूम में फ़र्माया, ऐ पैग़म्बर! तू मुर्दों को नहीं सुना सकता।

(दीगर मक़ाम : 3979, 3981)

١٣٧١ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((إِنَّمَا قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: إِنَّهُمْ لَيَعْلَمُونَ الآنَ أَنَّ مَا كُنْتُ أَقُولُ حَقٌّ. وَقَدْ قَالَ اللهُ تَعَالَى: ﴿فَإِنَّكَ لاَ تُسْمِعُ الْمَوْتَى﴾)).

[طرفاه في : ٣٩٧٩، ٣٩٨١].

1372. हमसे अ़ब्दान ने बयान किया, कहा मुझको मेरे बाप (उ़स्मान) ने ख़बर दी, उन्हें शुअ़बा ने, उन्होंने अश्अ़ष से सुना, उन्होंने अपने वालिद अबू अश्अ़शा से, उन्होंने मस्रूक़ से और उन्होंने आ़इशा (रज़ि.) से कि एक यहूदी औ़रत उनके पास आई। उसने अ़ज़ाबे-क़ब्र का ज़िक्र छेड़ दिया और कहा कि अल्लाह तुझको अ़ज़ाबे-क़ब्र से महफ़ूज़ रखे। इस पर आ़इशा (रज़ि.) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से अ़ज़ाबे-क़ब्र के बारे में दरयाफ़्त किया। आप (ﷺ) ने इसका जवाब ये दिया कि हाँ! अ़ज़ाबे-क़ब्र बरहक़ है। आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर मैंने कभी ऐसा नहीं देखा कि आपने कोई नमाज़ पढ़ी हो और उसमें अ़ज़ाबे-क़ब्र से अल्लाह की पनाह न माँगी हो। ग़ुन्दर ने अ़ज़ाबे क़ब्र बरहक़ के अल्फ़ाज़ ज़्यादा किये।

١٣٧٢ - حَدَّثَنَا عَبْدَانُ قَالَ أَخْبَرَنِي أَبِي عَنْ شُعْبَةَ قَالَ سَمِعْتُ الأَشْعَثَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ مَسْرُوقٍ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا ((أَنَّ يَهُودِيَّةً دَخَلَتْ عَلَيْهَا فَذَكَرَتْ عَذَابَ الْقَبْرِ فَقَالَتْ لَهَا: أَعَاذَكِ اللهُ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ. فَسَأَلَتْ عَائِشَةُ رَسُولَ اللهِ ﷺ عَنْ عَذَابِ الْقَبْرِ فَقَالَ: نَعَمْ، عَذَابُ الْقَبْرِ. قَالَتْ عَائِشَةُ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا: فَمَا رَأَيْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ بَعْدُ صَلَّى صَلاَةً إِلاَّ تَعَوَّذَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ)). زَادَ غُنْدَرٌ: ((عَذَابُ الْقَبْرِ حَقٌّ)).

1373. हमसे यह्या बिन सुलैमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन वुहैब ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझे यूनुस ने इब्ने शिहाब से ख़बर दी, उन्होंने कहा मुझे उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने ख़बर दी, उन्होंने अस्मा बिन्ते अबीबक्र (रज़ि.) से सुना कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ख़ुत्बे के लिये खड़े हुए तो आप (ﷺ) ने क़ब्र के इम्तिहान का ज़िक्र किया जहाँ इन्सान जाँचा जाता है। जब हुज़ूरे-अकरम (ﷺ) उसका ज़िक्र कर रहे थे तो मुसलमाना

١٣٧٣ - حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سُلَيْمَانَ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ قَالَ : أَخْبَرَنِي يُونُسُ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ أَنَّهُ سَمِعَ أَسْمَاءَ بِنْتَ أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا تَقُولُ: ((قَامَ رَسُولُ اللهِ ﷺ خَطِيبًا فَذَكَرَ فِتْنَةَ الْقَبْرِ الَّتِي يَفْتَتِنُ فِيهَا الْمَرْءُ.

की हिचकियाँ बँध गई।
(राजेअ : 86)

فَلَمَّا ذَكَرَ ذَلِكَ ضَجَّ الْمُسْلِمُونَ ضَجَّةً)). [راجع: ٨٦]

1374. हमसे अयाश बिन वलीद ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल आला ने बयान किया, कहा कि हमसे सईद ने बयान किया, उनसे क़तादा ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि आदमी जब अपनी क़ब्र में रखा जाता है और जनाज़े में शरीक होने वाले लोग उससे रुख़्सत होते हैं तो अभी वो उनके जूतों की आवाज़ सुनता होता है कि दो फ़रिश्ते (मुन्कर नकीर) उसके पास आते हैं, वो उसे बैठाकर पूछते हैं कि उस शख़्स या'नी मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह (ﷺ) के बारे में तू क्या ए'तिक़ाद रखता था? मोमिन तो ये कहेगा कि मैं गवाही देता हूँ कि आप (ﷺ) अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं। उससे कहा जाएगा कि तू ये देख अपना जहन्नम का ठिकाना लेकिन अल्लाह तआला ने इसके बदले में तुम्हारे लिये जन्नत में ठिकाना दे दिया। उस वक़्त उसे जहन्नम और जन्नत दोनों ठिकाने दिखाए जाएँगे। क़तादा ने बयान किया कि उसकी क़ब्र ख़ूब कुशादा कर दी जाएगी (जिससे आराम व राहत मिले)। फ़िर क़तादा ने अनस (रज़ि.) की हदीष़ बयान करनी शुरू की, फ़र्माया और मुनाफ़िक़ व काफ़िर से जब कहा जाएगा कि उस शख़्स के बारे में तू क्या कहता था तो वो जवाब देगा कि मुझे कुछ मा'लूम नहीं, मैं भी वही कहता था जो दूसरे लोग कहते थे। फिर उससे कहा जाएगा कि न तूने जानने की कोशिश की और न समझने वालों की राय पर चला। फिर उसे लोहे की गरज़ों से बड़ी ज़ोर से मारा जाएगा कि वो चीख पड़ेगा और उसकी चीख को जिन्न और इन्सानों के सिवा इसके आसपास की तमाम मख़लूक़ सुनेगी।
(राजेअ : 1338)

١٣٧٤ - حَدَّثَنَا عَيَّاشُ بْنُ الْوَلِيدِ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الأَعْلَى قَالَ حَدَّثَنَا سَعِيدٌ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّهُ حَدَّثَهُمْ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((إِنَّ الْعَبْدَ إِذَا وُضِعَ فِي قَبْرِهِ وَتَوَلَّى عَنْهُ أَصْحَابُهُ- وَإِنَّهُ لَيَسْمَعُ قَرْعَ نِعَالِهِمْ - أَتَاهُ مَلَكَانِ فَيُقْعِدَانِهِ فَيَقُولاَنِ: مَا كُنْتَ تَقُولُ فِي هَذَا الرَّجُلِ؟ لِمُحَمَّدٍ ﷺ. فَأَمَّا الْمُؤْمِنُ فَيَقُولُ أَشْهَدُ أَنَّهُ عَبْدُ اللهِ وَرَسُولُهُ. فَيُقَالُ لَهُ: انْظُرْ إِلَى مَقْعَدِكَ مِنَ النَّارِ، قَدْ أَبْدَلَكَ اللهُ بِهِ مَقْعَدًا مِنَ الْجَنَّةِ، فَيَرَاهُمَا جَمِيعًا)) قَالَ قَتَادَةُ: ((وَذُكِرَ لَنَا أَنَّهُ يُفْسَحُ فِي قَبْرِهِ)). ثُمَّ رَجَعَ إِلَى حَدِيثِ أَنَسٍ قَالَ: ((وَأَمَّا الْمُنَافِقُ وَالْكَافِرُ فَيُقَالُ لَهُ: مَا كُنْتَ تَقُولُ فِي هَذَا الرَّجُلِ؟ فَيَقُولُ: لاَ أَدْرِي، كُنْتُ أَقُولُ مَا يَقُولُهُ النَّاسُ. فَيُقَالُ: لاَ دَرَيْتَ وَلاَ تَلَيْتَ. وَيُضْرَبُ بِمَطَارِقَ مِنْ حَدِيدٍ ضَرْبَةً، فَيَصِيحُ صَيْحَةً يَسْمَعُهَا مَنْ يَلِيهِ غَيْرَ الثَّقَلَيْنِ)). [راجع: ١٣٣٨]

बाब 87 : क़ब्र के अ़ज़ाब से पनाह माँगना

٨٧- بَابُ التَّعَوُّذِ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ

1375. हमसे मुहम्मद बिन मुष़न्ना ने बयान किया, कहा कि हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने, कहा हमसे शुअबा ने, कहा कि मुझसे औन बिन अबी जुहैफ़ा ने बयान किया, उनसे उनके वालिद अबू जुहैफ़ा ने, उनसे बराअ बिन आ़ज़िब ने और उनसे

١٣٧٥ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: حَدَّثَنِي عَوْنُ بْنُ أَبِي جُحَيْفَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنِ الْبَرَاءِ

है, इसलिये कि उसका ख़ास एहतिमाम है और इसलिये कि अकष्र तौर पर गुनाहगारों और जुम्ला काफ़िरों के लिये अ़ज़ाब ही मुक़द्दर है।

मैं कहता हूँ कि ह़ासिल ये है कि बरज़ख़ उस आ़लम का नाम है जिसमें दुनिया से इंसान ज़िन्दगी मुन्क़तअ़ करके इब्तिदाए दारे आख़िरत में पहुँच जाता है। पस दुनियावी ज़िन्दगी के इन्क़िताअ़ के बाद वो पहला जज़ा और सज़ा का घर है फिर क़यामत के दिन हर नफ़्स को उसका पूरा-पूरा बदला जन्नत या जहन्नम की शक्ल में दिया जाएगा और बरज़ख़ के अ़ज़ाब व ष़वाब को क़ब्र की त़रफ़ इसलिये मन्सूब किया गया है कि इंसान उसी के अंदर दाख़िल होता है और इसलिये भी कि ज़्यादातर मरने वाले क़ब्र ही में दाख़िल किये जाते हैं वरना काफ़िर और गुनाहगार जिनको अल्लाह अ़जाब करना चाहे इस सूरत में भी वो अ़ज़ाब कर सकता है कि वो दफ़न न किये जाएँ। ये अ़ज़ाब मख़्लूक़ से पर्दा में होता है। (इल्ला मनशाअल्लाह)

और ये भी कहा गया है कि ज़रूरत नहीं है क्योंकि क़ब्र उसी जगह का नाम है जहाँ मय्यत का ज़मीन में मकान बने और इसमें कोई शक नहीं कि मरने के बाद इंसान का आख़िरी मकान ज़मीन ही है। जैसा कि क़ुर्आन मजीद में है कि हमने तुम्हारे लिये ज़मीन को ज़िन्दगी और मौत हर ह़ाल में ठिकाना बनाया है। वो ज़िन्दा और मुर्दा सबको जमा करती है और सबको शामिल है पस मय्यत डूबने वाले की हो या जलने वाले की या हैवानों के पेट में जाने वाले की ख़्वाह ज़मीन के भेड़ियों के पेट में जाए या हवा में परिन्दों के पेट में या दरिया में मछलियों के पेट में, सबका नतीजा मिट्टी में मिलना है और जान लो कि किताब व सुन्नत के ज़ाहिर दलाइल की बिना पर अ़ज़ाबे क़ब्र बरह़क़ है जिस पर तमाम अहले इस्लाम का इज्माअ़ है और इस बारे में इस क़दर तवातुर के साथ अह़ादीष़ मरवी हैं कि अगर उनको भी सह़ीह़ न तस्लीम करें तो दीन का फिर कोई भी अम्र स़ह़ीह़ नहीं क़रार दिया जा सकता। मज़ीद तफ़्सील के लिये **किताबुर्रुह़** अ़ल्लामा इब्ने क़य्यिम का मुत़ालअ़ा कीजिए।

बाब 88 : ग़ीबत और पेशाब की आलूदगी से क़ब्र का अ़ज़ाब होना

٨٨- بَابُ عَذَابِ الْقَبْرِ مِنَ الْغِيْبَةِ وَالْبَوْلِ

1378. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे मुजाहिद ने, उनसे ताऊस ने कि इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) का गुज़र दो क़ब्रों पर हुआ। आपने फ़र्माया कि उन दोनों के मुर्दों पर अ़ज़ाब हो रहा है और ये भी नहीं कि किसी बड़ी अहम बात पर हो रहा है। फिर आप ने फ़र्माया कि हाँ! उनमें एक शख़्स तो चुग़लख़ोरी किया करता था और दूसरा पेशाब से बचने के लिये एहतियात नहीं करता था। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर आप (ﷺ) ने एक हरी टहनी ली और उसके दो टुकड़े करके दोनों क़ब्रों पर गाड़ दिया और फ़र्माया कि शायद जब तक ये ख़ुश्क न हों इन पर अ़ज़ाब कम हो जाए। (राजेअ़ : 216)

١٣٧٨- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ قَالَ حَدَّثَنَا جَرِيْرٌ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ مُجَاهِدٍ عَنْ طَاوُسٍ قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا مَرَّ النَّبِيُّ ﷺ عَلَى قَبْرَيْنِ فَقَالَ: ((إِنَّهُمَا لَيُعَذَّبَانِ وَمَا يُعَذَّبَانِ فِي كَبِيْرٍ. ثُمَّ قَالَ: بَلَى، أَمَّا أَحَدُهُمَا فَكَانَ يَسْعَى بِالنَّمِيْمَةِ، وَأَمَّا الآخَرُ فَكَانَ لاَ يَسْتَتِرُ مِنْ بَوْلِهِ)). قَالَ: ((ثُمَّ أَخَذَ عُوْدًا رَطْبًا فَكَسَرَهُ بِاثْنَتَيْنِ، ثُمَّ غَرَزَ كُلَّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا عَلَى قَبْرٍ ثُمَّ قَالَ: لَعَلَّهُ يُخَفَّفُ عَنْهُمَا، مَا لَمْ يَيْبَسَا)).

[راجع: ٢١٦]

तश्रीह : हाफ़िज़ इब्ने ह़जर (रह) फ़र्माते हैं, क़ालज़्ज़ीनुब्नुल्मुनीर अल्मुरादु बितख़सीसि हाज़ैनिलअम्रैनि बिज़्ज़िक्रि तअ़ज़ीमु अम्रिहिमा ला नफ्युल्हुक्मि अम्मा अ़दाहुमा फ़अ़ला हाज़ा ला यल्ज़िमु मिन ज़िक्रिहिमा ह़स्रू अ़ज़ाबिक़्क़ब्रि फीहिमा लाकिन्नज़्ज़ाहिर मिनल्इक्तिसारि अ़ला ज़िक्रिहिमा अन्नहुमा अम्कन फ़ी ज़ालिक मिन गैरिहिमा व कद रवा अस्ह़ाबुस्सुनिन मिन हदीष़ि अबी हुरैरत इस्तन्जहू मिनल्बौलि

तरोताज़गी नसीब फ़र्मा और क़यामत के दिन जन्नत में दाख़िल फ़र्माइया और दोज़ख़ से हम सबको महफ़ूज़ रखियो। आमीन!

बाब 90 : मय्यित का चारपाई पर बात करना

٩٠- بَابُ كَلاَمِ الْمَيِّتِ عَلَى الْجَنَازَةِ

1380. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे सईद बिन अबी सईद ने बयान किया, उनसे उनके बाप ने बयान किया, उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने कि रसूले-करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि जब जनाज़ा तैयार हो जाता है, फिर मर्द उसको अपनी गर्दनों पर उठा लेते हैं तो अगर वो मुर्दा नेक हो तो कहता है कि हाँ आगे ले चलो, मुझे बढ़ाए चलो और अगर नेक नहीं होता तो कहता है, हाय रे ख़राबी! मेरा जनाज़ा कहाँ ले जा रहे हो। इस आवाज़ को इन्सान के सिवा तमाम मख़्लूक़ सुनती है। अगर कहीं इन्सान सुन पाए तो बेहोश हो जाएँ।

(राजेअ़ : 1314)

١٣٨٠- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ أَبِي سَعِيْدٍ عَنْ أَبِيْهِ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا سَعِيْدٍ الْخُدْرِيَّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُوْلُ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: ((إِذَا وُضِعَتِ الْجَنَازَةُ فَاحْتَمَلَهَا الرِّجَالُ عَلَى أَعْنَاقِهِمْ، فَإِنْ كَانَتْ صَالِحَةً قَالَتْ: قَدِّمُوْنِي، قَدِّمُوْنِي. وَإِنْ كَانَتْ غَيْرَ صَالِحَةٍ قَالَتْ: يَا وَيْلَهَا، أَيْنَ تَذْهَبُوْنَ بِهَا؟ يَسْمَعُ صَوْتَهَا كُلُّ شَيْءٍ إِلاَّ الإِنْسَانَ، وَلَوْ سَمِعَهَا الإِنْسَانُ لَصَعِقَ)). [راجع: ١٣١٤]

तश्रीह : जनाज़ा उठाए जाते वक़्त अल्लाह पाक बरज़ख़ी ज़ुबान मय्यत को अ़ता कर देता है। जिसमें वो अगर जन्नती है तो जन्नत के शौक़ में कहता है कि मुझको जल्दी-जल्दी ले चलो ताकि जल्द अपनी मुराद को हासिल करूँ और अगर वो जहन्नमी है तो वो घबराकर कहता है कि हाय मुझे कहाँ लिये जा रहे हो। उस वक़्त अल्लाह पाक उनको इस तौर पर मख़्फ़ी (पोशीदा, गुप्त) तरीक़े से बोलने की ताक़त देता है और उस आवाज़ को इंसान और जिन्न के अलावा तमाम मख़्लूक़ात सुनती है।

इस ह़दीष़ से सिमाअ़े-मौता पर कुछ लोगों ने दलील पकड़ी है जो बिल्कुल ग़लत़ है। क़ुर्आन मजीद में स़ाफ़ सिमाअ़े मौता की नफ़ी मौजूद है। **इन्नक ला तुस्मिउल मौता** (अन् नम्ल : 80) अगर मरनेवाले हमारी आवाज़ें सुन पाते तो उनको मय्यत ही न कहा जाता। इसीलिये तमाम अइम्म-ए-हुदा ने सिमाअ़े मौता का इंकार किया है। जो लोग सिमाअ़े मौता के क़ायल हैं उनके दलाइल बिल्कुल बेवज़न हैं । दूसरे मक़ाम पर उसका तफ़्सीली बयान होगा।

बाब 91 : मुसलमानों की नाबालिग़ औलाद कहाँ रहेगी?

٩١- بَابُ مَا قِيْلَ فِي أَوْلاَدِ الْمُسْلِمِيْنَ

और ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से रिवायत किया कि जिस के तीन नाबालिग़ बच्चे मर जाएँ तो ये बच्चे उसके लिये दोज़ख़ से रोक बन जाएँगे या ये कहा कि वो जन्नत में दाख़िल होगा।

قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((مَنْ مَاتَ لَهُ ثَلاَثَةٌ مِنَ الْوَلَدِ لَمْ يَبْلُغُوا الْحِنْثَ كَانَ لَهُ حِجَابًا مِنَ النَّارِ أَوْ دَخَلَ الْجَنَّةَ)).

उसमें कोई क़बाहत नहीं है।

आपके अख़्लाक़े ह़स्ना में से है कि आप बीमारी के दिनों में दूसरी बीवियों से ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) के घर में जाने के लिये मअ़ज़रत फ़र्माते रहे। यहाँ तक कि तमाम अज़्वाजे मुतह्हरात ने आपको हुज्र-ए-आ़इशा (रज़ि.) के लिये इजाज़त दे दी और आख़िरी वक़्त में आपने वहीं बसर किये। इससे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) की भी कमाले फ़ज़ीलत ष़ाबित होती है। तुफ़ (अफ़सोस) है उन नामो–निहाद मुसलमानों पर जो ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) जैसी माय-ए-नाज़ इस्लामी ख़ातून की फ़ज़ीलत का इंकार करते हैं। अल्लाह तआ़ला उनको हिदायत अ़ता करे।

1390. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अबू अ़वाना ने बयान किया, उनसे हिलाल बिन हुमैद ने, उनसे उ़र्वा और उनसे उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने अपने उस मर्ज़ के मौक़े पर फ़र्माया था, जिससे आप जाँबर (तंदुरुस्त) न हो सके थे कि अल्लाह तआ़ला की यहूदो-नस़ारा पर ला'नत हो, उन्होंने अपने अंबिया की क़ब्रों को मसाजिद बना लिया। अगर ये डर न होता तो आपकी क़ब्र खुली रहने दी जाती। लेकिन डर इसका है कि कहीं उसे भी लोग सज्दागाह न बना लें। और हिलाल से रिवायत है कि उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने मेरी कुन्नियत (अबू अ़वाना या अ़वाना के वालिद) रख दी थी, वर्ना मेरी कोई औलाद न थी। (राजेअ : 435)

١٣٩٠ - حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ عَنْ هِلاَلٍ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ فِي مَرَضِهِ الَّذِي لَمْ يَقُمْ مِنْهُ : ((لَعَنَ اللهُ الْيَهُودَ وَالنَّصَارَى اتَّخَذُوا قُبُورَ أَنْبِيَائِهِمْ مَسَاجِدَ)). لَوْ لاَ ذَلِكَ أُبْرِزَ قَبْرُهُ، غَيْرَ أَنَّهُ خَشِيَ - أَوْ خُشِيَ - أَنْ يُتَّخَذَ مَسْجِدًا)). وَعَنْ هِلاَلٍ قَالَ: كَنَّانِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ وَلَمْ يُولَدْ لِي. [راجع: ٤٣٥]

हमसे मुहम्मद ने बयान किया, कहा कि हमें अ़ब्दुल्लाह ने ख़बर दी, कहा कि हमें अबूबक्र बिन अयास ने ख़बर दी, उनसे सुफ़यान तम्मार ने बयान किया कि उन्होंने नबी करीम (ﷺ) की क़ब्रे-मुबारक देखी जो कोहान-नुमा थी

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مُقَاتِلٍ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ قَالَ أَخْبَرَنَا أَبُوبَكْرِ بْنُ عَيَّاشٍ عَنْ سُفْيَانَ التَّمَّارِ أَنَّهُ حَدَّثَهُ أَنَّهُ رَأَى قَبْرَ النَّبِيِّ ﷺ مُسَنَّمًا.

हमसे फ़र्वा बिन अबी मुग़ीरा ने बयान किया, कहा कि हमसे अ़ली बिन मिस्हर ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उ़र्वा ने, उनसे उनके वालिद ने कि वलीद बिन अ़ब्दुल मलिक बिन मरवान के अहदे हुकूमत में (जब नबी करीम ﷺ के हुज्रे मुबारक की) दीवार गिरी और लोग उसे (ज़्यादा ऊँची) उठाने लगे तो वहाँ एक क़दम ज़ाहिर हुआ। लोग ये समझकर घबरा गये कि ये नबी करीम (ﷺ) का क़दम मुबारक है। कोई शख़्स ऐसा नहीं था जो क़दम को पहचान सकता। आख़िर उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने बताया कि नहीं अल्लाह गवाह है ये रसूलुल्लाह का क़दम नहीं बल्कि ये तो उ़मर (रज़ि.) का क़दम है।

حَدَّثَنَا فَرْوَةُ قَالَ حَدَّثَنَا عَلِيٌّ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ لَمَّا سَقَطَ عَلَيْهِمُ الْحَائِطُ فِي زَمَانِ الْوَلِيدِ بْنِ عَبْدِ الْمَلِكِ أَخَذُوا فِي بِنَائِهِ، فَبَدَتْ لَهُمْ قَدَمٌ، فَفَزِعُوا وَظَنُّوا أَنَّهَا قَدَمُ النَّبِيِّ ﷺ، فَمَا وَجَدُوا أَحَدًا يَعْلَمُ ذَلِكَ حَتَّى قَالَ لَهُمْ عُرْوَةُ : لاَ وَاللهِ، مَا هِيَ قَدَمُ النَّبِيِّ ﷺ، مَا هِيَ إِلاَّ قَدَمُ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ.

रिवायत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल क़ुद्दूस ने आ'मश और मुहम्मद बिन अनस ने भी आ'मश से की है।

(दीगर मक़ाम : 5616)

شُعْبَةُ وَ رَوَاهُ عَبْدُ اللهِ بْنِ عَبْدِالْقُدُّوسِ عَنِ الأَعْمَشِ وَ مُحَمَّدُ بْنُ أَنَسٍ عَنِ الأَعْمَشِ. [طرفه في: ٥٦١٦].

या'नी मुसलमान जो मर जाएँ उनका मरने के बाद ऐ़ब न बयान करना चाहिये। अब उनको बुरा कहना उनके अ़ज़ीज़ों को ईज़ा (तकलीफ़) देना है।

बाब 98 : बुरे मुर्दों की बुराई बयान करना दुरुस्त है

٩٨- بَابُ ذِكْرِ شِرَارِ الْمَوْتَى

1394. हमसे उ़मर बिन ह़फ़्स़ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे मेरे बाप ने बयान किया आ'मश से, उन्होंने कहा कि मुझसे अ़म्र बिन मुर्रह ने बयान किया, उनसे सईद बिन जुबैर ने, और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि अबू लहब ने नबी करीम (ﷺ) से कहा कि सारे दिन तुझ पर बर्बादी हो। इस पर ये आयत उतरी (तब्बत यदा अबी लहबिंव व तब्ब) या'नी टूट गये हाथ अबू लहब के और वो खुद ही बर्बाद हो गया।

(दीगर मक़ाम : 3525, 3526, 4770, 4801, 4971, 4972, 4973)

١٣٩٤- حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصٍ قَالَ حَدَّثَنَا أَبِي قَالَ حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ قَالَ حَدَّثَنِي عَمْرُو بْنُ مُرَّةَ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ أَبُولَهَبٍ عَلَيْهِ لَعْنَةُ اللهِ لِلنَّبِيِّ ﷺ: تَبًّا لَكَ سَائِرَ الْيَوْمِ، فَنَزَلَتْ: ﴿تَبَّتْ يَدَا أَبِي لَهَبٍ وَتَبَّ﴾.

[أطرافه في: ٣٥٢٥، ٣٥٢٦، ٤٧٧٠، ٤٨٠١، ٤٩٧١، ٤٩٧٢، ٤٩٧٣].

तश्रीह : जब ये आयत उतरी **वन्ज़िर अशीरतकबल अकरबीन** (अश्शुअ़रा : 214) या'नी अपने क़रीबी रिश्तेदारों को डराओ तो आप कोहे स़फ़ा पर चढ़े और कुरैश के लोगों को पुकारा, वो सब इकट्ठे हुए। फिर आपने उनको अल्लाह के अ़ज़ाब से डराया तब अबू लहब मर्दूद कहने लगा तेरी ख़राबी हो सारे दिन क्या तूने हमको उसी बात के लिये इकट्ठा किया था? उस वक़्त ये सूरत उतरी **तब्बत यदा अबी लहबिंव् व तब्ब** या'नी अबू लहब ही के दोनों हाथ टूटे और वो हलाक हुआ। मा'लूम हुआ कि बुरे लोगों काफ़िरों, मुल्ह़िदों को उनके बुरे कामों के साथ याद करना दुरुस्त है। ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़जर (रह.) फ़र्माते हैं :

अय वस़लू इला मा अमिलु मिन खैरिन व शर्रिन वशतद्द बिही अ़ला मनइ सबबिल्अम्वाति मुतलकन व क़द तकद्दम अन्न उमूमहू मख़सूसुन व असह्हु मा क़ील फ़ी ज़ालिक अन्न अम्वातल्कु फ़्फ़ारि वल्फुस्साक़ियजूज़ु ज़िक्रू मसावीहिम लित्तहज़ीरि मिन्हुम वत्तन्फ़ीरि अ़न्हुम व क़द अज्मअ़ल उलमाउ अ़ला जवाज़ि जर्हिल्मज्रूहीन मिनर्रूवाति अहयाअन व अम्वातन. या'नी उन्होंने जो कुछ बुराई भलाई की वो सब कुछ उनके सामने आ गया। अब उनकी बुराई करना बेकार है और उससे दलील पकड़ी गई है कि मर चुके लोगों को बुराइयों से याद करना मुत्लक़न मना है और पीछे गुज़र चुका है कि उसका उ़मूमन मख़्स़ूस़ है और इस बारे में स़हीह़तरीन ख़्याल ये है कि मरे हुए काफ़िरों और फ़ासिक़ों की बुराइयों का ज़िक्र करना जाइज़ है। ताकि उनके जैसे बुरे कामों से नफ़रत पैदा हो और उ़लमा ने इज्माअ़ किया है कि रावियाने ह़दीष़ ज़िन्दों मुर्दों पर जरह़ करना जाइज़ है।

1562. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें अबुल अस्वद मुहम्मद बिन अब्दुर्रहमान बिन नौफ़िल ने, उन्हें उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने और उनसे उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि हम हज्जतुल विदाअ़ के मौक़े पर रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ चले। कुछ लोगों ने उ़म्रह का एह़राम बाँधा था, कुछ ने हज्ज और उ़म्रह दोनों का और कुछ ने सिर्फ़ हज्ज का। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने (पहले) सिर्फ़ हज्ज का एह़राम बाँधा था, फिर आपने उ़म्रह भी शरीक कर लिया, फिर जिन लोगों ने हज्ज का एह़राम बाँधा था या हज्ज या उ़म्रह दोनों का, उनका एह़राम दसवीं तारीख़ तक न खुल सका।

(राजेअ़ 294)

١٥٦٢- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ أَبِي الأَسْوَدِ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ نَوفَلٍ عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّهَا قَالَتْ: ((خَرَجْنَا مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ عَامَ حَجَّةِ الْوَدَاعِ، فَمِنَّا مَنْ أَهَلَّ بِعُمْرَةٍ، وَمِنَّا مَنْ أَهَلَّ بِحَجَّةٍ وَعُمْرَةٍ: وَمِنَّا مِنْ أَهَلَّ بِالْحَجِّ، وَأَهَلَّ رَسُولُ اللهِ ﷺ بِالْحَجِّ. فَأَمَّا مَنْ أَهَلَّ بِالْحَجِّ أَوْ جَمَعَ الْحَجَّ وَالْعُمْرَةِ لَمْ يَحِلُّوا حَتَّى كَانَ يَوْمُ النَّحْرِ)). [راجع: ٢٩٤]

1563. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे गुन्दर ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे ह़कम ने, उनसे अ़ली बिन ह़ुसैन (ह़ज़रत ज़ैनुल आ़बेदीन) ने और उनसे मरवान बिन ह़कम ने बयान किया कि ह़ज़रत उ़ष्मान और अ़ली (रज़ि.) को मैंने देखा है। उ़ष्मान (रज़ि.) हज्ज और उ़म्रह को एक साथ करने से रोकते थे लेकिन ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) ने उसके वाबजूद दोनों का एक साथ एह़राम बाँधा और कहा लब्बैक बिउ़म्रतिन व हज्जतिन आपने फ़र्माया था कि मैं किसी एक शख़्स की बात पर रसूलुल्लाह (ﷺ) की ह़दीष़ को नहीं छोड़ सकता।

١٥٦٣- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ قَالَ حَدَّثَنَا غُنْدُرٌ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنِ الْحَكَمِ عَنْ عَلِيِّ بْنِ حُسَيْنٍ عَنْ مَرْوَانَ بْنِ الْحَكَمِ قَالَ: ((شَهِدْتُ عُثْمَانَ وَعَلِيًّا رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا، وَعُثْمَانُ يَنْهَى عَنِ الْمُتْعَةِ وَأَنْ يُجْمَعَ بَيْنَهُمَا، فَلَمَّا رَأَى عَلِيٌّ، أَهَلَّ بِهِمَا: لَبَّيْكَ بِعُمْرَةٍ وَحَجَّةٍ، قَالَ: مَا كُنْتُ لأَدَعَ سُنَّةَ النَّبِيِّ ﷺ لِقَوْلِ أَحَدٍ)). [طرفه في : ١٥٦٩].

तश्रीह़ : ह़ज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) शायद ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) की तक़्लीद से तमत्तोअ़ को बुरा समझते थे उनको भी यही ख़्याल हुआ आँह़ज़रत (ﷺ) ने हज्ज को फ़स्ख़ कराकर जो हुक्म उ़म्रह का दिया था वो ख़ास़ था स़ह़ाबा (रज़ि.) से। कुछ ने कहा मकरूहे तंज़ीही समझा और चूँकि ह़ज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) का ये ख़्याल ह़दीष़ के ख़िलाफ़ था। इसलिये ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) ने इस पर अ़मल नहीं किया और फ़र्माया कि मैं आँह़ज़रत (ﷺ) की ह़दीष़ को किसी के क़ौल से नहीं छोड़ सकता।

मुसलमान भाइयों! ज़रा ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) के इस क़ौल को ग़ौर से देखो, ह़ज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) ख़लीफ़-ए-वक़्त और ख़लीफ़ा भी कैसे? ख़लीफ़ा-ए-राशिद और अमीरुल मोमिनीन। लेकिन ह़दीष़ के ख़िलाफ़ उनका क़ौल भी फैंक दिया गया और ख़ुद उनके सामने उनका ख़िलाफ़ किया गया। फिर तुमको क्या हो गया है जो तुम इमाम अबू ह़नीफ़ा या शाफ़िई के क़ौल को लिये रहते हो और स़ह़ीह़ ह़दीष़ के ख़िलाफ़ उनके क़ौल पर अ़मल करते हो, ये स़रीह़ गुमराही है। अल्लाह के लिये